2010 oct: Mool tatva – shriram kruti dev

मानव व्यवहार दर्षन

मूल तत्व –

तत्व का मतलब है, सत्य। मूल तत्व का मतलब है मूल में सत्य क्या है। फल में सत्य क्या है, ये कुल **मिला** कर के पुष्टिकरण। मूल में सत्य कैसा है, उसको बताया, व्यापक वस्तु में समग्र एक–एक वस्तु सम्पृक्त **है, सम्पृक्त रहने का मतलब बताया?** डूबा हुआ, भीगा हुआ, घिरा हुआ। हर वस्तु डूबा है, हर वस्तु भीगा है, हर वस्तु घिरा है। उसके बाद उसका प्रयोजन बता दिया, घिरा हुआ से क्या मतलब होता है। नियंत्रण, घिरा हुआ से कार्य क्षेत्र। हर वस्तु कोई निष्चित लम्बाई चौड़ाई में कार्य करता है। डूबा हुआ कारण से, घिरा हुआ से नियंत्रण भीगा हुआ कारण से ऊर्जा सम्पन्नता । जड़ प्रकृति में ऊर्जा सम्पन्नता कहलाता है। चैतन्य प्रकृति में ज्ञान सम्पन्नता कहलाता है।

प्रष्न– इसमें जो फल ज्ञान कहा एक मूल ज्ञान एक फल ज्ञान । फल ज्ञान क्या हैं?

उत्तर– ज्ञान फल हो गया ना। मूल जो है, डूबा, भीगा, घिरा हुआ। फल क्या हुआ? ज्ञान सम्पन्नता हुआ मानव में, वस्तु में, ऊर्जा सम्पन्नता। ऊर्जा सम्पन्नता से क्रियाषीलता, क्रियाषीलता से श्रम, गति, परिणाम ज्ञान सम्पन्नता से जीने की आषा, जीने की आषा से चार संवेदना चार संवेदना से जीने के बाद तीन ऐषणा में जीने की इच्छा, इसके बाद उपकार करने की इच्छा। मनुष्य को कैसा होना चाहिए यहॉ से षुरूआत होती हैं।

प्रष्न– उद्घोष **को कहा है,** ‘‘जीने दो और **जियोष्**

उत्तर– माने पहले जीने दो । जीने देने का क्या मतलब है, व्यवस्था में जीना। व्यवस्था में सबको जीने देना, स्वयं जीना। दूसरो को व्यवस्था में जीने दिए बिना स्वयं जी भी नहीं सकते। समझे बिना जीने देना बनता ही नहीं।

प्रष्न– जैसे मैं अभी नहीं समझा हॅू तो दूसरे को जीने देना बनता नहीं।

उत्तर– इसीलिए समझना बहुत आवष्यक है, क्योंकि ज्ञान सम्पन्न है मानव, अपना ज्ञान को पहचाना जाए। क्या चीज है वह, मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना। मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना में पारंगत होने के पष्चात जीने देना स्वाभाविक होता है। जैसा, व्यापक वस्तु सब को जीने दे रहा है कि नहीं? अपने पेट में। **सभी वस्तु डू**बे हैं, भीगे हैं, घिरे है, सम्पृक्त है। वेद में कहा ईष्वर की निवास स्थली है जगत, प्रकृति का निवास स्थली ईष्वर है, ऐसा हम कह रहे हैं। दोनों बात का दूरी, अंतर को समझों, इसीलिए हम सदा सदा सत्वान्वेषी, मानव जात सदा सत्यान्वेषी। यह बात तय हो गया, विकसित चेतना में जीए बिना जीने देना बनता नहीं, जीने दिए बिना जीना बनता नहीं। वि**रक्ति**, भय, प्रलोभन कुछ ना कुछ पीड़ि**त करता ही रहता है**।

प्रष्न– दूसरा बिन्**दु नित्य मंगल कामना। मानव देवता हो** –––––––– तीसरा बिन्दु है, ''अनुभव ज्ञानष्‍ उसमे लिखा है, सत्ता में सम्पृक्त जड़, चैतन्य प्रकृति, सत्ता में समपृक्त जड़ चेतना ईकाइयॉ अनंत, व्यापक, पारदर्षी और पारगामी, सत्ता में, सम्पृक्त सभी इकाइयॉ, रूप, गुण**,** स्वभाव और धर्म सम्पन्न, त्व सहित व्यवस्था, समग्र व्यवस्था में भागीदारी के रूप में है।

उत्तर– अनुभव ऐसा है, इसमें अनुभव होने से, व्यापक वस्तु में समग्र वस्तु समाहीत है, प्रत्येक इकाई रूप, गुण, स्वभाव, धर्म सम्पन्न है, उस एक ज्ञान होने के पष्चात हम ऐसा कह सकते हैं।

प्रष्न– अनुभव ज्ञान में सत्ता में चार चीज दिख**ती है,** एक तो ये समझ में आना कि हर इकाई अपने रूप, गणु , स्वभाव धर्म सहित है, ये अनुभव में आता है, प्रत्येक इकाई अपने त्व स**हि**त व्यवस्था में है, समग्र व्यवस्था में भागीदार है, और ये व्यापक वस्तु में सम्पृक्त है, और व्यापक वस्तु स्वयं में पारदर्षी है और पारगामी है, इतना सारा अनुभव की वस्तु हैं।

उत्तर– ये अनुभव में आता है तो क्या होता है, विकास क्रम, विकास**,** जागृति क्रम, जागृति स्पष्ट हो जाता है।

प्रष्न– वह भी अनुभव में ही आता है।

उत्तर– अनुभव में यही आता है।

प्रष्न– विकास क्रम, विकास और जागृति क्रम जागृति का बोध होता है?

उत्तर– बोध हो जाता है, बोध हो कर के उसके बाद बतमंजपअपजल बनती है। चित्त् में चिंतन विधि से चल कर के, चित्रण विधि तक कमेपहद बनता है, उसके अनुसार व्यक्त होता है।

प्रष्न– और इसका साक्षात्कार बोध होता है?

उत्तर– साक्षात्कार में भी बोध होता है, साक्षात्कार अनुभव बोध होता है, अध्ययन मूलक ज्ञान बोध होता है ओर अनुभव मूलक विधि से प्रमाण बोध विधि से होता है, अध्ययन से बोध होना, प्रमाण से बोध होना दोनों में अंतर नहीं है। अध्ययन से जो बोध होता है, अनुभव में होता ही है, ऐसा लिखा है, अध्ययन से जो बो**ध होता है, वह** अनुभव में पहॅुचता ही है, फल स्वरूप प्रमाण बोध होता है, अध्ययन मूलक विधि से सूचना। सूचना से हम षुरू करते है, तदाकार होते हैं, तदाकार से तद्रुप में पहॅुचे बिना बोध नहीं होता, जीवन को। अर्थात बुद्वि को तृप्ति नहीं होती। फल स्वरूप अनुभव में पहुॅच जाता है। अनुभव में पहॅुचने के बाद प्रमाण होता है। प्रमाण बोध पूरा होता है, उस आधार पर पूरा का पूरा कार्यक्रम षुरू करते हैं।

प्रष्न– तो अनुभव में रूप, गुण, स्वभाव, धर्म चारों इकाई में है, ये समझ में आता है।

उत्तर– धर्म बोध होने के बाद चारों अवस्था का, अस्तित्व धर्म, पुष्टि धर्म, आषा धर्म, सुख धर्म। ये बोध होने के पष्चात अनुभव में जाता है बाकी सब व्यवस्था में है। सुखधर्मी आदमी भटका है। आदमी के अलावा कोई भटका है? बंदर कहॉ भटका? आदमी भटक गया या नहीं।

प्रष्न– जो त्व सहित व्यवस्था है, ये धर्म से संबंधित है क्या?

उत्तर– हॉ, धर्म से सम्बन्धित है।

प्रष्न– और समग्र व्यवस्था से भागीदारी स्वभाव से ।

उत्तर– सुख जो है, धर्म जो है, व्यक्ति के व्यवस्थित के अर्थ में, उसका प्रयोजन जो है, समग्र व्यवस्था में भागीदारी है।

प्रष्न– यही उसका स्वभाव होगा।

उत्तर– उसका प्रवृत्ति होगी। धर्म का प्रवृत्ति ये है, धर्म का प्रवृत्ति व्यवस्था में होना।

प्रष्न– इसी को स्वभाव कह सकते है क्या?

उत्तर– हॉ ठीक है।

प्रष्न– समग्र व्यवस्था में भागीदारी ही स्वभाव और यही स्वभाव गुण से व्यक्त होता है।

उत्तर– स्वभाव, गुण, रूप में, गुण कार्य रूप में, कार्य व्यवहार रूप में, व्यवहार व्यवस्था रूप में सब जगह में पहॅुच गया।

प्रष्न– सम्पृक्ता से षुरू करें, तो मूल में, सत्ता में सम्पृक्त प्रकृति, उसका त्व सही व्यवस्था में होना (धर्म) समग्र व्यवस्था में भागीदारी होना, (स्वभाव) ये जो है गुण से व्यक्त होता है, उसको जो है हम रूप सहीत पहचानते हैं।

उत्तर– ये पूरा का पूरा रूप, गुण, स्वभाव, धर्म का पदअवसअउमदज मानव जो है, जीवन के रूप में, मानव परंपरा में काम नहीं कर पाता। मानव परंपरा में ज्ञानावस्था का प्रगटन है। मानव सुख धर्मी है सुख के लिए समाधान बहुत आवष्यक हो गया। समाधान, समझदारी के बिना आता नहीं। आदर्षवादी और भौतिक वादी। कोषिष कर लिए, वह हुआ नहीं। सिर कूटा, कुछ हुआ नहीं, सिर कूटने का, सिर कूटने का मतलब क्या है? धरती बीमार हो गई, भौतिक वादी विधि से अस्तित्व विहिन मोक्ष को वह प्रस्तुत किया। अस्तित्व ना हो, ऐसा मोक्ष किस काम की। उस पर हमारा कभी ध्यान गया नहीं। इतना व्यर्थता कैसा, वहॉ से षुरूआत हुआ। सत्य से मिथ्या पैदा होता है। सोने में सुगंधी हो गया। उस में फंसे । इधर तो कोई रास्ता ही नहीं भौतिक वादी विधि से, दीवाल ही दीवाल।

प्रष्न– आपने यह भी कहा की स्वभाव, धर्म जो है, ये 4 ल क्रिया में आता नहीं केवल रूप, गुण आता है। अभी मैने धर्म और स्वभाव का जो कहा । ये मात्र चित्रण ही है इस चित्रण से षुरू करते हुए––––––

उत्तर– अनुभव मूलक भी चित्रण होता है, भ्रम पूर्वक भी चित्रण होता है, दोनों होता है, भ्रम पूर्वक चित्रण में केवल चित्रण है उसके आगे जाता नही । अनुभव मूलक चित्रण में, अनुभव मूल मे रहता है इसीलिए प्रमाणित होता है।

प्रष्न– ये स्वभाव, धर्म का जो परिभाषा दिया, उसके बवददमबजपवद में चित्रण से षुरू करते हुए मुझे स्वभाव और धर्म को समझना है, साक्षात्कार बोध पूर्वक, साक्षात्कार बोध में आ गया तो अनुभव हो गया।

उत्तर– तद्रुपता ही धर्म के रूप में, तदाकार ही स्वभाव रूप में आता है। व्यवहार में प्रमाणित हो जाता है । तदाकार ही धर्म रूप में आता है। सुख रूप में, समाधान। समाधान त्र सुख।

प्रष्न– ये पूरी बात में ऐसा लगता है कि चित्रण बनने में भी काफी समय लगता है धीरे–धीरे एक से एक जुड़ता हैं।

उत्तर– स्वाभाविक है, बात में समय तो लगता है। अनुभव में कुछ समय लगता नहीं। सब से कम समय लगने वाला अनुभव ही है। चित्रण से कम समय बोध में, बोध से कम समय अनुभव में, षब्द में सबसे ज्यादा समय लगता है, षब्द का अर्थ छोटा हो जाता है। अर्थ बोध होना बहुत कम समय में होता है, इसीलिए अध्ययन में कम समय लगता है, अनुसंधान से।

प्रष्न– ये पूरी बात का सही चित्रण जो पूरा आपने प्रस्तुत किया है, यथार्थता, वास्तविकता, सत्यता का सही चित्रण बनने में भी समय लगता है, क्या इसी को मनन कहेगें।

उत्तर– नहीं, इसको कहा जाए अध्ययन। अध्ययन से ये ठीक है कि वह ठीक है। माने मनुष्य के पास बहुत सारा सामान भरा रहता है, इसके साथ उसको तौलना, उसके साथ इसको तौलता है। तौलने वाला प्रकिया का नाम है चित्रण। तौलने के बाद प्राथमिकता जिसका बनता है, वह हुआ आपका स्व त्व उसके साथ तदाकार होना होता है।

प्रष्न– उसके पूर्व में भी ये लगता है कि ये चित्रण बनाने में मैं जीतना समय लगाता हूँ, उसी में प्राथमिकता कम पड़ जाता है।

उत्तर– उसमें बवउचंतपेवद में आता हैं चित्रण में। बवउचंतपेवद में जो षरीर मूलक संबंध है। वह ज्यादा हो जाने से कम हो जाता है, जीवन मूलक चित्रण ज्यादा होने तक ये प्रयत्न चलता रहता है।

प्रष्न– उपदेष में लिखा है, ''जाने हुए को मान लो, माने हुए की जान लोष ये जो जाना हुआ है, इसमें जानना किस को कह रहे हैं।

उत्तर– जैसा हम मॉ को मानते हैं, उसको जान लो ।

प्रष्न– जीवन में कौन सी क्रिया को जानना कहेगें?

उत्तर– पहले तो मानना है । जैसा ये बच्चे ये पहले मॉ को जानते है, उसके बाद पिता को जानते हैं।

प्रष्न– मॉ को जान लो माने ज्ञानावस्था को समझ लो। उसमें पूरा आ जाता है बोध, अनुभव, व्यवस्था सब ।

उत्तर– व्यवस्था के साथ तदाकार होना ही पड़ता है, तद्रुप होना ही पड़ता हैं। नहीं तो व्यवस्था, समझ में नहीं आएगा। व्यवस्था के साथ तद्रुप, तदाकार होना पड़ता है, अपना कल्पनाषीलता को लगाना पड़ता है। ये मनुष्य का स्वतंत्रता है, ऐसा तदाकार तद्रूप होने के बाद आदमी स्वतंत्र हो जाता है।

प्रष्न– एक जगह आप ने यह भी कहा है कि जानने मानने का तृप्ति बिन्दु ही अनुभव है। ये जानना मानना जो है क्या साक्षात्कार, बोध को कह रहे हैं।

उत्तर– जानकारी के साथ तदाकार हो जाना, तद्रुप हो जाना।

प्रष्न– ये चसंबम नहीं हो पा रहा है कि जीवन क्रिया में जानना क्या है, और मानना क्या हैं?

उत्तर– जानना अनुभव, मानना संकल्प।

प्रष्न– मानना संकल्प है। साक्षात्कार जो है, पहचानना हो गया। वस्तु का पहचान साक्षात्कार ।

उत्तर– तदाकार होना स्वीकृति हो गया।

प्रष्न– उसी को साक्षात्कार बोध कहेगें, या अध्ययन बोध।

उत्तर– ओर उसके बाद तद्रुप होने के पष्चात प्रमाण हो गया।

प्रष्न– तो जो साक्षात्कार बोध है ये भी जानना ही है।

उत्तर– जानने की स्वीकृति हुई। किस बात की? प्रमाणित होने के लिए, संसार को पता चलने के लिए।

प्रष्न– तो साक्षात्कार बोध हुआ तो भी संकल्प होता हैं।

उत्तर– साक्षात्कार बोध होने से ही संकल्प होता है, किस बात की? प्रमाणित करने की, प्रमाणित करने के लिए अनुभव होता है।

प्रष्न– तो साक्षत्कार में पहचान हुआ, अगर तदाकार हुए तो उसकी स्वीकृति होती है, यही बोध है, अध्ययन बोध, अध्ययन बोध होता है तो प्रमाणित करने का संकल्प होता है, इसी संकल्प को मानना कहा और इसको प्रमाणित करने जाते हैं तो इसका फल में अनुभव होता ही है।

उत्तर– प्रमाण से पहले अनुभव होना आवष्यक है, उसके बिना प्रमाण ही नहीं होता उसके पहले ऐसा कुछ सोच के सत्यापित करते है, वह सब कल्पना के अंदर रहता है।

प्रष्न– माने ये आप कह रहे हैं कि अध्ययन बोध को अगर प्रमाण मान लिया, तो अनुभव होता ही नही।

उत्तर– भ्रम वहीं से है कोई ना कोई अड़चन हुआ तभी तो अनुभव नही हुआ। अनुभव योग्य नहीं हुआ इसीलिए अनुभव नहीं हुआ। अनुभव योग्य वस्तु ही अनुभव होता है, कचरा का अनुभव होता नहीं ।

प्रष्न– अध्ययन बोध में अगर मैं ये मान लूॅ कि मैं समझ गया, तो अनुभव के लिए रास्ता फिर होता नहीं।

उत्तर : जानने की बात उतना ही है, अनुभव बोध होने के लिए योग्य हुआ, अनुभव योग्य होने के पष्चात प्रमाणित करने की बात व्यवस्था षुरू हो गई।

प्रष्न– जाने हुए को मान लो जो कहा, ये तो होगा ही, अगर मै जान लिया तो मानूगॉ ही वचजपवद तो होता नहीं उसमें।

उत्तर– उसको जाचॅना पड़ेगा एक मगंउचसम अभी दिया था, जैसा मॉ को मानते हैं जाना नहीं। मॉ को जान लिया, उसके बाद मानना होता है।

प्रष्न– मानें जानेगें तो मानेगें ही ।

उत्तर– जानने के बाद मानेगें, इसी के लिए दोनों लिखा जानने के बाद मानना होता ही है, किन्तु मानने के बाद जानना है, ऐसा कुछ नहीं है। अभी इतने आदमी जात हैं । धरती में, कब से मॉ–मॉ कहते रहे, मॉ को व्यवस्था के अर्थ में पहचाना नहीं। आज तक। ना व्यवस्था का कमेपहद हुआ। इस विड़म्बना को क्या कहोगें। कितना बड़ा भारी क्लेष है ये।

प्रष्न– और माने हुए को जान लो जो कहा तो उसमें गलत मान्यता तो जानने की और जाएगा ही नहीं ।

उत्तर– वह तो प्रष्न ही नहीं है, गलत को तो जानने का मतलब ही नहीं है, मॉ का मिसाल इसीलिए दिया, मॉ को जानना जरूरी होता है। पिता को मानता है, जानना जरूरी होता है। भाई को मानता है, जानने की जरूरत है। सब के लिए एक साथ कहा हर संबंध को व्यवस्था के अर्थ में पहचानों । व्यवस्था के अर्थ में संबंध को पहचानना ही जानना हुआ। इसका मतलब क्या हुआ? व्यवस्था समझ में आना, बहुत जरूरी है । प्रयोजन कहॉ है? प्रयोजन है

व्यवस्था। अभी प्रयोजन कहॉ खोज रहे हैं? अभी आदमी कहॉ प्रयोजन ढूढ़ रहा है और आई कहॉ प्रयोजन? सार्वभौम व्यवस्था प्रयोजन। सभी व्यक्ति इसको सोच सकते हैं कितना अंतर है सार्वभौम व्यवस्था के अर्थ में यदि हम संबंध को पहचानते है तो व्यवस्था स्वाभाविक रूप में होता है।

प्रष्न– अध्ययन विधि में भी स्वभाव धर्म का जो मैंने षुरूआत में बात कही इसको मानने से षुरू करते हुए फिर उसको जान लेता हूँ, ये माने हुए को जानने का मतलब ।

उत्तर– अध्ययन में यही है। जानने की विधि, यथार्थता, वास्तविकता, सत्यता,हर वस्तु के साथ जुड़ा है, उसको जानने के बाद मानना होता ही है। मानने से षुरू करते है, मानने के बाद जानना आवष्यक हो जाता है। यही मुख्य बात है, इसमें किसी को घायल करने की बात नहीं है। आराम से समझने की बात है। जीने की बात है। समझता है तो जीयेगा ही।

प्रष्न– ये यथार्थता, वास्तविकता, सत्यता को मानने के इंम में दिखता है, इसके आधार में भास – आभास तो रहता ही है, जैसे सूचना मिलती है तो, ये बात अपने में पूरी है, ये भास–अभास होता है।

उत्तर– इसके फलस्वरूप प्राथमिकता यदि बन जाता है, भास–अभास का तो प्रतिति होता ही है, प्रतिति के बाद अनुभव होता ही है। प्रतिति के बाद अनुभव के लिए कुछ नहीं करना प्रतिति तक पुरूषार्थ, अनुभूति परमार्थ माने '' जीवन सहज प्रक्रिया'' फलस्वरूप परमार्थ विधि से हम काम करना षुरू कर देते हैं, सोचना षुरू कर देते हैं।

प्रष्न– ये जब कहते हैं आप को साक्षात्कार पूरा होने तक ही पुरूषार्थ है, मतलब मेरा इसमें श्रम पूर्वक प्रयास है।

उत्तर– श्रम पूर्वक प्रयास है, तर्क का कुछ दूर तक पहुॅच है।

प्रष्न– उसके बाद कहा कि अनुभव जो है परमार्थ, ये माने अपने आप घटित होता है। जैसे की अभी मैं विचार करता हूँ, वह भले ही विचार में अर्न्तविरोध हो, पर विचार मेरे में हो, इसके लिए कोई प्रयास नहीं, वह है ही।

उत्तर– विचार में प्रयास पूर्वक विचार होता है, अनुभव नहीं होता है, प्रयास पूर्वक।

प्रष्न– विचार करने की जो क्षमता है अभी, मुझमें रखी हुई है। मैं विचार करता ही हूँ, विचार करने की क्षमता के लिए मैं कुछ करता नहीं हूँ, वह क्षमता है ही मेरे साथ। इसी विधि से साक्षात्कार अगर पूरा होता है तो अनुभव होता ही है, माने उसके लिए अपना पुरूषार्थ कुछ नहीं।

उत्तर– जैसे विचार करने का बंचंबपजल रहता ही है, वैसे अनुभव करने का बंचंबपजल रहता ही है, व्यवस्था तो पहले से बना है। वह बींतहम होता है जैसे इंजजमतल पहले से बना है। वह बींतहम होने पर काम करता है। इस प्रकार जीवन सहज रूप में बंचंबपजल रहता ही है। उसको व्यवहार रूप में परिणत करने योग्य बनाना है । अनुभव को बोध को, चिंतन को तब ये 5ल क्रियाएँ बींतहम हो गई। अभी षरीर मूलक विधि से ऊर्जा ग्रहण करते हैं, ऊर्जा प्रदान करते हैं, उसमें केवल 4ल क्रिया ही होता हैं।

प्रष्न– इसके बाद लिखा है स्थिति पूर्ण सत्ता में सम्पृक्त स्थितिषील प्रकृति, सत्ता को स्थिति पूर्ण जो कहा, वह इसीलिए क्योंकि उसका स्थिति में कुछ परिवर्तन होता नहीं और प्रकृति को जो स्थितिषील कहा, प्रकृति में स्थिति का क्या तात्पर्य है?

उत्तर– प्रकृति में स्थिति के साथ गति है। अभी अत्याधुनिक विज्ञान में गति को मानता है, स्थिति को मानता ही नहीं।

प्रष्न– प्रकृति में जीवन को अगर देखें, जीवन में यह जो समझने की प्रक्रिया है, प्रत्यावर्तन प्रक्रिया ये स्थिति में परिवर्तन है।

उत्तर– प्रत्यावर्तन और परावर्तन दोनों में परिवर्तन है, इसीलिए षील कहा, अनुभवषील।

प्रष्न– और आचरण पूर्णता के बाद अनुभव पूर्ण हो गया फिर भी क्या वह स्थितिषील है।

उत्तर– अनुभव पूर्ण भाषा को दूसरा भाषा में कहा जागृति पूर्ण। जागृति पूर्णता को व्याख्या दिया क्रिया पूर्णता, आचरण पूर्णता। माने पूर्णता की तीन स्थिति हुई, गठन पूर्णता, प्राकृतिक विधि से, नियति और मनुष्य के पुरूषार्थ विधि से, क्रिया पूर्णता, अचरण पूर्णता ।

प्रष्न– आचरण पूर्णता होने के पष्चात भी दिव्य मानव के जो जीवन है, वह भी स्थितिषील ही कहेगें।

उत्तर– नहीं, हो गया ना जागृति पूर्ण हो गया।

प्रष्न– अगर सत्ता स्थिति पूर्ण है तो जीवन आचरण पूर्णता के पष्चात स्थिति पूर्ण कहलाएगा या स्थितिषील रहेगा।

उत्तर– परंपरा के रूप में स्थितिषील रहेगा। परंपरा में क्या है, मानव संतान समझने योग्य रहते हैं, समझाने योग्य रहते हैं, पीछे की पीढ़ी। इस ढ़ग से स्थितिषील, पर प्रमाण जो है ना स्थिति पूर्ण। क्रिया पूर्णता, आचरण पूर्णता का प्रमाण जो है ना स्थिति पूर्ण।

प्रष्न– माने आप ये कह रहे है कि जैसे व्यापक वस्तु अपने में स्थिति पूर्ण है, आचरण पूर्णता में जीवन भी स्थिति पूर्ण हो जाता है, जागृति पूर्ण हो जाता है।

उत्तर– जागृति से ज्यादा होना नहीं, हम जीतना समझ गया हूॅं, उतना पहुॅंचा दिया।

प्रष्न– तो स्थितिषील प्रकृति में दो प्रकार की प्रकृति है, एक गठनषीलन एक गठन पूर्ण। गठन पूर्ण भी जो है स्थितिषील कहलाया।

उत्तर– जागृति क्रम कहलाया, उसको जीवनी क्रम कहा गया। गठनपूर्ण परमाणु को कहा जीवनी क्रम, उसके बाद जागृति क्रम दो भाषा प्रयोग किया। जागृति क्रम में मानव को चिन्हित किया। जागृति, एक आवष्यकता महसूस हुई। जागृति के लिए प्रस्ताव रखा।

उत्तर– व्यवस्था में कोई गलती नहीं है। प्रकृति से कोई गलती हो गया ऐसा नहीं, अभी आगे चलकर के और भी षोध होगा, जब तक जागृति क्रम में रहे, तब तक भ्रमित है जीवन, मानव परंपरा में, मानव होते हुए मानवत्व को छोड़कर, जीवत्व को अपनाए। अभी मानव जागृति क्रम में है। उसका प्रमाण है, मानव अपने कल्पनाषीलता, कर्म स्वतंत्रता में, कर्म स्वतंत्रता को प्रमाणित करे। उसका प्रमाण रखा है, कल्पनाषीलता का तृप्ति बिन्दु मिला नहीं। मन स्वस्थता तृप्ति बिन्दु कल्पनाषीलता का तृप्ति बिन्दु है। इसके आवष्यकता पर अपने को सोचना आवष्यक है।

यही 10 वर्ष के पहले बच्चें को पहुॅचाना। ये बिन्दु पहुॅचता है तो मानव का कितना अनुकूल होगा। कल्पनाषीलता के तृप्ति बिन्दु के लिए ये पूरा पड़ रहा है कि नहीं, देख लो। उसके बाद और पॉच वर्ष में ये पुष्ट होगा की नहीं देख लो, और पॉच वर्ष में ये प्रमाणित होगा की नहीं देख लो।

प्रष्न– सत्ता को जब बताने गए, जैसे आप व्यापक वस्तु को समझने जाते हैं, तो कहते हैं कि आप हमारे बीच की स्थली, तो जैसे अगर मैं देख रहा हूॅ तो इनका रूप का प्रतिबिम्बन मेरे ऑखों पर है।

उत्तर– ऑखों पर प्रतिबिम्बित कैसे है? क्योंकि बीच में खाली स्थली है। इसीलिए प्रतिबिम्बित है।

प्रष्न– ऑखों पर जो प्रतिबिम्बित हुआ ये सूचना मेधस के द्वारा जीवन तक पहुॅचता है, तो मैं इन के रूप को जो देख रहा हूॅ, ऑखों पर प्रतिबिम्बित होते हुए ये मन से देख रहा हूॅ, ये मन से देख रहा हूॅ, मेधस पर दिख रहा है ये चित्र।

उत्तर– मेधस पर नहीं चित्रण पर टीक रहा है।

प्रष्न– माने मैं इनको जो देख रहा हूॅ चित्रण पर दिख रहा है।

उत्तर– सारा चित्र–चित्रण के ऊपर

प्रष्न– पर साथ में मेरे को ये भी समझ में आता है कि ये मेरे में नहीं और बाहर है।

उत्तर– ठीक है ये तो दूरी अपने आप में स्पष्ट है।

प्रष्न– दूरी स्वयं में व्यापक वस्तु है।

उत्तर– ये बाहर है ये दूरी, उसी प्रकार से जीवन और षरीर का दूरी । जीवन षरीर को जीवंत बनाए रखता है ये समझ में आने के बाद जीवन और षरीर का दूरी पता लग जाता है, उसके बाद सतर्क रहते है। किस बात की? सत्य और असत्य की, धर्म औरन अधर्म की, न्याय और अन्याय की, नियंत्रण और अनियंत्रण की, नियम और अनियम की, संतुलन और

असंतुलन को द्रष्टा बन गए। इतने बात को हम द्रष्टा बन गए।उसके बाद क्या बचता होगा? इसी के आधार पर पुनः बतमंजपअपजल में आता है, चित्रण में आता है, सार्वभौम व्यवस्था में जीने का अधिकार बनता है। अभी जीव कैसा जीता है? व्यवस्था में वंष के अनुसार। वनस्पति कैसा जीते हैं, पुष्टि के आधार पर। पदार्थ कैसा जीता है, षाष्वतीयता के आधार पर, अस्तित्व के आधार पर इतना छोटी सी बात ना विज्ञान को समझ में आया, ना अध्यात्मवाद को।

क्या कहा जाए इसको? विड़म्बना। झगड़ा कहॉ से षुरू हुआ? वह जो ईष्वर कृपा से षुरू हुआ। रहस्य से षुरू किया आदर्षवाद, वह भटक गया, अटक गया। भटका तो अटकेगा ही। भौतिकवादी संघर्ष से षुरू किया इसीलिए भटक गया।

प्रष्न– ये जो प्रक्रिया है ये चित्रण में दिखता है, साथ में यह पता चलता है कि यह बाह्य वस्तु है, मेरा इससे कपेजंदबम भी समझ में आता है।

उत्तर– संबंध समझ में आना भौतिक, रासायनिक, वन खनिज और जीव संसार के साथ संबंध, कैसे, किस अर्थ में, नियम, नियंत्रण, संतुलन के अर्थ में, सबको ये चतपदबपचसम को समझाया जा सकता है या नहीं। मनुष्य के पास आ गए तो न्याय, धर्म, सत्य आ गया। इतने में पूरा हो जाता है। यही द्रष्टा पद का फल है, द्रष्टा पद से फलित होने वाली वस्तु यही है, न्याय, धर्म, सत्य, नियम, नियंत्रण, संतुलन। संतुलन के साथ ही वहॉ ''जीने दो'' वाला प्रवृत्ति षुरूआत होगा। **न्याय के साथ कर्तव्य होता है, धर्म के साथ दायित्व होता है, सत्य के साथ व्यवस्था होता है**। किस को छोड़ दिया जाए? किसको पहदवतम किया जाए? अनसुनी किस बात को किया जाए। किसके पास हिंसक होने की प्रवृत्ति है, किसके पास अधिकार करने की प्रवृत्ति है? आप बताओ। अभी सभी जगह में यही है की हमारा अधिकार ऊपर होना चाहिए। ऊपर –नीचे वाला ही झंझट। इससे मुक्त होने के लिए यही विधि है नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय,धर्म, सत्य पूर्णक जीने का अधिकार प्राप्त करें।

प्रष्न– ये ऊपर–नीचे वाला को ही पद भय कहा आपने? इसी को पदभय कहेगें।

उत्तर– हॉ वही है। भय षब्द जीव चेतना वष। मानव ज्ञानावस्था में है। ज्ञान, समाधान, जो है, न्याय ,धर्म ,सत्य पूर्वक ही प्रगट होता है। अपना प्रयोजन को प्रस्तुत करता है। दूसरा विधि से होता ही नहीं।

प्रष्न– ये जो आपने कहा की यह जो दिखता है, यह चित्रण तक पहॅुचता है।

उत्तर– अध्ययन विधि से, जीने की विधि से व्यवस्था के रूप में होता है। चित्रण विधि से चित्त् तक ही पहॅुचता है, जीने की विधि से बोध तक पहॅुच जाता है।

प्रष्न– नहीं समझ पाए?

उत्तर– माने सत्य बोध होता है। जीने की विधि से हम सत्य पूर्वक जीए, नहीं इसका प्रमाण प्रस्तुत होता है, जीने की विधि से धर्म पूर्णक जीए, नही जीए इसका प्रस्तुत होता है, न्याय पूर्वक जीए या अन्याय पूर्णक जीए इसका प्रस्तुत होता है। न्याय पूर्वक जीना चिंतन, बोध में होता है, अन्याय पूर्वक जीना चित्रण में होता है, इतना ही बात।

प्रष्न– जीव, पषु जब देखते हैं, तो उनमें भी वह जो देख रहे है, वह चित्रण तक पहॅुच रहा है।

उत्तर– हॉ क्या चित्रण? जीने के आषा का चित्रण, चार विषय का चित्रण।

प्रष्न– जैसे पषु जब मुझे देखता है, गाय ने मुझे देखा तो।

उत्तर– कुछ भी देखेगा, उनका पहॅुच उतना ही हैं।

प्रष्न– मेरा जो प्रष्न है क्या वह गाय के चित्रण तक पहॅुचता है।

उत्तर– हॉ पहॅुचता है।

प्रष्न– इसीलिए अभी भी स्वप्न देखते समय ऐसा लगता है कि हम जगे हुए है, पूरा जो कल्पना, पूरा जो चित्रण दिखता है स्वप्न वह सारा चित्रण सहित होता है।

उत्तर– चित्र ही तो होता है और कहॉ पहॅुचेगा।

प्रष्न– इसीलिए ये फोन को अगर मैंने रात में सपने में देखा तो बिल्कुल ऐसा ही दिखता है।

उत्तर– दिखेगा, चित्रण चित्त में ही होता है।

प्रष्न– माने ये जो सारा मैंने देखा, ये मेरा स्मृति में चला गया, हमने इसको याद किया तो ये बिल्कुल ऐसा ही है।

उत्तर– अभी अत्याधुनिक विज्ञान विधि से इसको देखता कौन है, ये पता ही नहीं लगता, इतंपद को मानते हैं, ऐसा मान के चलते हैं, इसीलिए भटके है, अभी तक कर ही रहे हैं।

प्रष्न– ये जो आकार है, ये चित्रण तक पहॅुचने में मेधस का क्या रोल है?

उत्तर– मेधस का रोल यही है, ज्ञानवाही तंत्र से जीवन को पहॅुचना। तो ये सूचना को यथावत, पहॅुचा देता है। क्रियावाही विधि को बनाए रखता है जीवन। क्रियावाही तंत्र ठीक रहने से ज्ञानवाही तंत्र काम करता है, इस सिद्धान्त पर होता है, ये ''चरक'' के समय से पता चल ही चुका है। चरक, पान्ड़वो के समय के पहले के हैं। 5000 वर्ष पहले।

प्रष्न– बहुत समय तक व्यापक वस्तु को जब बात होती थी केवल ऑखों पर ये पूरा विस्तार का जो प्रतिबिम्ब है इसको व्यापक वस्तु मानकर चले, इसको और गहराई में देखने का प्रयास किया तो ––––––

उत्तर– मनुष्य में ज्ञान सम्पन्नता के रूप में प्रतिष्ठित हो गया।

प्रष्न– जैसे ये कैमरा है और ये कैमरा का जो चित्र है, इसको मैं अभी चित्रण में देख रहा हॅू, और ऑखों से (जैसे ऑख बंद कर लिया तो नहीं दिखता है।) साथ में ये पता लगता है कि ये मेरे से लगभग 2,ल फीट या 2,ल मीटर के दूरी पर है, ये जो दूरी है इधर से उधर की ।

उत्तर– संख्या देना दूरी की ये हमारा अभ्यास की बात है।

प्रष्न– संख्या नहीं भी दिया, पर ये दूरी पर है, ये दूरी स्वयं में व्यापक वस्तु है।

उत्तर– इसी का नाम विस्तार कह सकते है, इसी को हम व्यापक मानते हैं।

प्रष्न– माने व्यापक वस्तु ना हो तो इकाई के इकाई में विस्तार भी कुछ समझ में आएगा नहीं।

उत्तर– व्यापक वस्तु ना हो, एक दूसरे को देखना ही नहीं बनता ।

प्रष्न– इकाई का होना भी प्रमाणित होना नहीं। क्योकि ये इकाई इतने में है, ये स्वयं में व्यापक वस्तु हैं।

उत्तर– अभी लम्बाई, चौड़ाई जो नापते है वह सिद्ध नहीं होता, ये सिद्ध होने के लिए व्यापक वस्तु रहना जरूरी है।

प्रष्न– तो इसका इकाई के रूप में पहचान पाना ।

उत्तर– व्यापक वस्तु है, ये तो समझ भी आता है, बहुत जल्दी ये ऊर्जा है, ज्ञान है, ये समझना मुख्य मुद्दा , ऊर्जा जड़ प्रकृति के लिए, और चैतन्य प्रकृति के लिए ज्ञान, यही वस्तु है ये स्वीकार होना थोड़ा समय लगता है।

प्रष्न– ये जो इकाई है इतने में फैला है, ये स्वयं व्यापक वस्तु ही है।

उत्तर– व्यापक वस्तु में है।

प्रष्न– व्यापक वस्तु में होते हुए इतना फैला है, ये`चतमंक जो है वस्तु का काई भी फैलना जो है, व्यापक वस्तु होने से ही है , नहीं तो ––––––– व्यापक वस्तु में ही होने के आधार पर।

प्रष्न– मतलब व्यापक वस्तु का ना होना ये कल्पना में भी नहीं आ सकता, आता ही नहीं।

उत्तर– कल्पना आता है तो भ्रम हो गया। हमारा कल्पना व्यापक वस्तु नहीं माना। वहॉ से भ्रम षुरू होता है। जीवन चेतना में जीना ही होता है । दूसरा कोई रास्ता ही नहीं है।

प्रष्न– अगर मैं स्वप्न देख रहा हूँ मतलब मैंने ये घर देखा और हाथी देखा, घर और हाथी का जितना आकार पता चलता है, ये अपने में एक आकृति है वहॉ पर भी वही व्यापक वस्तु है।

उत्तर– वही है, और कौन सा वस्तु, घर अलग से दिखता है, हाथी अलग से दिखता है, उन दोनों के बीच में जो स्थली है, वह अलग–अलग दिखाता है, यदि इसका उसका दूरी ना हो ये अलग, वह अलग कैसा दिखता।

प्रष्न– तो व्यापक वस्तु ऊर्जा है।

उत्तर– चाहे जागृति में हो, स्वप्न में हो, सुषुप्ति में हो, ये व्यापक वस्तु सदा–सदा वर्तमान है, एक साथ। व्यापक वस्तु में जो समाहीत सम्पूर्ण प्रकृति है स्थितिषील भी है, स्थिति पूर्ण भी है। उसको कहा पूर्णता, स्थिति पूर्णता कहा। पूर्ण के जगह में पूर्णता कहा, जागृति पूर्णता का स्थिति पूर्णता से संबंध है। ता का मतलब प्रमाणित होना। पूर्ण का मतलब होना। ता का मतलब रहना। ''निरन्तर होना'' । आप अपने को रहने के रूप में स्वीकारते हो की नहीं, होने के रूप में स्वीीकारते हो की नहीं । हर व्यक्ति के साथ यही है, होने रहने के रूप में स्वीकार । रहने के रूप में जागृति प्रमाण और होने के रूप में नियति विधि। नियति विधि से होना बनता है, जागृति विधि से रहना बनता है। इतना ही बात बहुत सुन्दर बात है ये जीने पर इससे अच्छा कुछ हो नहीं सकता।

प्रष्न– इससे पहले आप ने जो कहा की इतना तो आ जाता है, व्यापक वस्तु का और व्यापक वस्तु स्वयं में ऊर्जा स्वरूप है ये समझना है। इससे पहले इकाई है और इकाई क्रियाषील है ––––––––

उत्तर– इकाई है और व्यापक है, ये दोनों का स्वीकृति ।

प्रष्न– और ये इकाई का ऊर्जीत होना व्यापक वस्तु में होते हुए है, ये समझ में आना–––।

उत्तर– व्यापक वस्तु में ही है, ये ज्ञान होना। व्यापक वस्तु में होते हुए, व्यापक वस्तु पारगामी है की एक –एक वस्तु होने से व्यापक वस्तु गायब होता है क्या? विज्ञान ने लिखा है जहॉ धरती है वहॉ `चंबम नहीं है। उनको नहीं समझ में आने वाला।

प्रष्न– अभी हम जब व्यापक को देखने जाते है, इकाई के संदर्भ में व्यापक को पहचानने का प्रयास करता हूँ मैं।

उत्तर– दोनों साथ–साथ में है, इसको लिखा ऐसा है, एक–एक वस्तु के बिना व्यापकता का पहचान नहीं, व्यापक वस्तु के बिना इकाई में ऊर्जा सम्पन्नता, ज्ञान सम्पन्नता नहीं है।

प्रष्न– मैं यह कहने का प्रयास कर रहा था –––– ।

उत्तर– चैतन्य प्रकृति में ज्ञान सम्पन्नता जड़ प्रकृति में ऊर्जा सम्पन्नता ये भीगे रहने के अर्थ में है। भीगे रहने के अर्थ से ये पारगामी है, ये समझ में आता है। इसके बिना ये पारदर्षी है समझ में आता है। ये सब क्यों पूछा? मानव व्यवस्था में जीने के लिए। मानव व्यवस्था में जीना है, कि अव्यवस्था में जीना है । अव्यवस्था में जीना है, अभी जो कर रहा है, ठीक है बरबाद हो जाओं, अपना तरफ से आर्षीवाद, यदि आबाद होना है तो समझ लो।

प्रष्न– सत्ता और सत्तामयता भी एक षब्द प्रयोग किया है।

उत्तर– सत्तामयता माने, सर्वत्र होने के अर्थ में सत्तामयता। माने भीगे, डूबे माने पारदर्षी, पारगामी होने के अर्थ में सत्तामयता पारदर्षी, पारगामी, व्यापक ये तीनों फनंसपपिबंजपवद के साथ हम देख पाते है। तो सत्तामयता। ये तीनों फनंसपपिबंजपवद नही रहता । सत्तामयता समझ में नहीं आता। ये हमारा सुनने की बात, तदाकार होने की बात, तद्रुप होने की बात। हमारे पास पूंजी क्या हैं? कल्पनाषीलता । कल्पनाषीलता के आधार पर ये होना।

प्रष्न– जब व्यापक वस्तु का बोध होता है, ये तीनों फनंसपपिबंजपवद के साथ व्यापक वस्तु को पहचाना, तब सत्तामयता हुआ। माने मैं दृष्टा हूँ, इकाई दृष्टा हूँ और ये इकाई व्यापक वस्तु में है, इसके साथ जब इसको देखते हैं, तो क्या ये व्यापक वस्तु जिसकी मैं खाली स्थली मानता हूँ भरा–भरा सा लगता है।

उत्तर– व्यापक वस्तु हर एक वस्तु में पारगामी है की नहीं है, ये बोध होना, ये बोध होने पर पूरा हो जाता है, बाकी सत्ता पारदर्षी है ये तो सामान्य रूप में बोध होता है।

प्रष्न– ये जो बोध होना है, पारगामीयता का –––––

उत्तर— सर्वत्र एक सा है, ये भी बोध होता है, कुल मिलाकर के पारगामी है ये बोध होना।

प्रष्न— ये व्यापक वस्तु को जब पहचानते हैं, ये तीन फनंसपपिबंजपवद के साथ जब बोध होता है, अभी जिसकी मैं खाली मानता हूँ, ये जो स्थली है, ये भरा हुआ दिखता है।

उत्तर— प्रकृति से, प्रकृति से भरा हुआ दिखता है । कैसा दिखता है? दूरी के रूप में वस्तु के रूप में। वस्तु रचना के रूप में, वस्तु से वस्तु का दूरी के रूप में, वस्तु में पारगामी के रूप में सत्तामयता हुआ की नहीं हुआ।

प्रष्न— हुआ सूचना मिलने के बाद पारगामीयता अनुमान में आ जाता है।

उत्तर— पहले सुनना, अनुमान में आना, उसके बाद तदाकार होना, समझ में आना, तद्रुप को कहेगें प्रमाणित करना। ज्ञान को ही धर्म कहा, पुष्टि धर्म प्राणावस्था में, अस्तित्व धर्म पदार्थ वस्था में, ये धर्म जो है उें नहीं हैं,होने के रूप में जो स्थिति गति है, वह उें है क्या? होने वाला वस्तु उें है। हमारा स्वीकृति ज्ञान उें नहीं है। उें नहीं मतलब ज्ञान स्वयं व्यापक वस्तु है । ये भीगा हुआ रहने का परिणाम है, ये मानव में आता है। जड़ वस्तु में ऊर्जा के रूप में होता है, ऊर्जा सम्पन्नता वष क्या होता है। क्रियाषीलता, क्रियाषीलता के बिना सापेक्ष षाक्ति पैदा नहीं होती। क्रियाषीलता के मूल में निरपेक्ष षक्ति प्राप्त रहता है, इसीलिए क्रियाषीलता।

प्रष्न— माने आप ये कह रहे हैं कि जैसे मुझे अनुभव हुआ, तो ये अनुभव होता है कि यह जो ज्ञान है, जो धर्म हमको समझ में आया, ये धर्म जो समझ में आना ये अपने में कोई उें नहीं है। मात्रा नहीं है तो ये व्यापक वस्तु के रूप में ज्ञान ही व्यापक है। ज्ञान व्यापक होने का गवाही बनता है,

उत्तर— इसीलिए ज्ञान व्यापक है, ये गवाही बनने के बाद तब अपने को समझ में आता है, सह अस्तित्व मनुष्य को अपने प्रतिरूप में पैदा किया है, प्रस्तुत किया। सह अस्तित्व के प्रतिरूप के रूप में प्रस्तुत होने के आधार पर स्वयं में सम्पूर्ण व्यवस्था सह अस्तित्व में है। इसीलिए मानव को सह अस्तित्व में व्यवस्था को प्रमाणित करना है।

प्रष्न— ये अभी जो आपने कहा इसके होंने के लिए इसके पूर्व में ये चिन्हित हो जाना आवष्यक है कि अस्तित्व में इकाई है, या व्यापक है, तीसरे प्रकार की कोई चीज नहीं है।

उत्तर– वह तो लिख दिया है।

प्रष्न– जैसे अभी अगर मैं अपना देखूॅं तो मैं डंके चोट पर सभी को कहता हूॅं कि इकाई है और व्यापक है। पर ये कहने का जो सीमा है चित्रण तक या उसके आसपास तक ही सीमित है।

उत्तर– ये बोध तक जाता है। व्यापक वस्तु बोध में एक एक वस्तु में केवल धर्म जो है, अनुभव है। एकश्एक वस्तु बोध में आता है। वस्तु का क्रिया कलाप बोध में नहीं आता। वस्तु है ये बोध होता है। क्रिया कला चित्त में रह जाता है।

प्रष्न– क्रियाकलाप का साक्षात्कार होता है क्या?

उत्तर– नहीं, स्वभाव धर्म का ही साक्षात्कार होता है, स्वभाव और धर्म दोनों उें नहीं है। उसमें यदि उें का आषिंक स्वरूप अगर स्वभाव में है। वह भी खत्म हो जाता है। केवल धर्म रह जाता है, बोध और अनुभव में, बोध में जो होता है, वह अनुभव में आता ही है। अनुभव में जो होता है वह बोध में आता ही है। यथार्थ ।

प्रष्न– जैसे षून्याकषर्ण को समझना साक्षात्कार की वस्तु है?

उत्तर– वह भी साक्षातकार है, साक्षात्कार में आषिंक रूप में होता है, अनुभव में पूरा होता है।

प्रष्न– उसका आधार अनुभव में समझ में आता है, तो षून्याकषर्ण का साक्षात्कार होना इसको आप क्रियाकलाप नहीं कहेगें।

उत्तर– क्रिया से मुक्त ऊर्जा का जो स्वरूप है, वह स्वरूप का बोध होता है, साक्षात्कार में षुरूआत होता है, बोध में पूरा होता है। प्रतित हो जाता है। बोध होने के पष्चात अनुभव में पूरा होना है, प्रमाण हो जाता है। बोध हुआ, प्रमाण हुआ । बोध और प्रमाण के बीच में दूरी नहीं है।

प्रष्न– जैसे आप को षून्याकषर्ण की जो बात समझ में आई थी, तब आप साधना काल में थे, उस समय ये अनुभव का इतंदबी भी था।

उत्तर– था ही तभी तो बता पा रहे है, जितना देखे है, समझे हैं, संयम में उतने को ही बनाया गया।

प्रष्न– षून्याकषर्ण की जो बात है आपके साधना, समाधी के पूर्व ही अपको समझ में आ गया था।

उत्तर– नहीं।

प्रष्न– आपने किसी को ऐसा बताया था।

उत्तर– भाषा में, कल्पना रूप में बताया या भाषा रूप में । वह समझ में आया संयम से। हम पहले से पडिंत इस बात कह रहे । भाषा को गढ़ने में हम पंडित, उसके आधार पर भाषा बता दिया।

प्रष्न– वह मान लिया।

उत्तर– कल्पनाषीलता के आधार पर इतना बताया, वह बात आ गई, अनुभव के बाद उसको प्रमाणित की बात आ गई।

प्रष्न– षून्याकषर्ण की बात कल्पना में आना भी कोई सामान्य चीज नहीं है, जैसे हमारे कल्पना में तो आता नहीं।

उत्तर– सुनों तो, हम पतंग खेलते रहे, पतंग का डोरी टूट गई, वह पतंग आकाष में तैरता ही रहा।

प्रष्न– बचपन में?

उत्तर– हम पतंग बनाने में मास्टर ।

प्रष्न– पतंग में मास्टर, सिलाई मे मास्टर, पेंसिल फैक्टरी में मास्टर, वीणा बजाने में मास्टर, गाना गाने में मास्टर, दवाई बनाने में मास्टर, प्रयोग विधि से ये सारा मास्टर ।

उत्तर– जिसमें चाहे उसमें आजीविका पैदा करते, आजीविका के लिए हम कभी भयभीत नहीं हुए । कृषि से लेकर, गौपालन से लेकर, सुनार, बढ़ाई, दर्जी किसी में से भी हम आजीविका को चला सकते थे।

प्रष्न– सुनारी भी, आप गहने बनाए।

उत्तर– हॉ बनाए है, लोहे के टुकड़ा से कुल्हाड़ी भी बनाए है। फर्सा भी बनाए है।

प्रष्न– अग्रहार में।

उत्तर– हॉ अग्रहार में 2 कि. मी. दूर मुगली है, लोहारी वही था। वहीं जा के हम बनाते थे, हमारे गॉव में नहीं था, हमारे गॉव में चुना बनाने वाला कार्य था। हमारे मामा का लड़का जहॉ रहता है, वहॉ पीपल का झाड़ है, उसी झाड़ के नीचे हम लोग चुका का भट्टी लगाते रहे।

प्रष्न– इसमें से ऐसा लगता है, छोटे छोटे चीज पर ध्यान देने की जो बात है, वह पहले से ही था आप में, बचपन से।

उत्तर– उस और निगाह था, अनुभव नहीं था। अनुभव संयम में हुआ बताया था ना, षून्याकषर्ण की कल्पना थी किन्तु अनुभव नहीं था। अनुभव में स्वीकार हुआ। कितना अंतर हो गया। अभी षून्याकषर्ण की ॅजमसपजम में देख सकते हैं। इससे बढ़िया कौन सा थीसीस होने वाला है। पहले से हमारा संस्कार तो कुछ था ही, वेद विचार का छानबीन कर लिया, वह अपने आप में संस्कार है, हमारा परिवार में हर पीढ़ी में एक ना एक व्यक्ति सन्यासी होते रहे, किसी का दिमाग में नहीं आया सत्य से मिथ्या कैसे पैदा हुआ।

प्रष्न– आप जब बोलते हैं कि आप के घरवाले आप को गुरू के पस ले गए थे, की कैसे घर में ऐसा मुर्ख संतान पैदा हो गया। आप बताए की वहॉ जाने के बाद आप को टायफायड़ हो गया।

उत्तर– हम तीन दिन तक रोते ही रहे, उसके पीछे यही कह सकता हूॅ, हमारे पिताजी हमको ले जा कर के कुपूत्र बताया। हो सकता है उससे हम परेषान हुए किसी के आगे ले जा

करके मारने वाले नही है, ऐसा रहा हमको पता नहीं है कि क्या हुआ। उसके बाद टायफायड़ हो गया। 41 दिन तक बेहोष रहे, उसके बाद होष आया तो सिर नहीं हिला, पैर नहीं हिला। जैसे बच्चे षुरू करते हैं वहॉ से षुरू किया। उससे जरूर ये हुआ की हमारा समझने की षक्तियॉ बढ़ गई । बात करने की षक्तियॉ बढ़ गई।

प्रष्न– इसका क्या कारण बोलेगे आप?

उत्तर– हम जो पहले से सोचते रहे, उसका पुष्टि मिल गई वह 41 दिन के समाधी में पुष्टि मिल गई तो ऐसा कहा जा सकता है। उसके बाद तर्क से षुरू हो गये, तो यहॉ पहुॅच गए की सत्य से मिथ्या कैसे पैदा हुआ। इस बीच वेद और उपनिषद सारा का अध्ययन किया। कविता किया, यही किया, पंडित हो गये सब का बाप हो गये, सब हो गये।

प्रष्न– एक दिन में कितने घन्टे पढ़ते थे।

उत्तर– हम जो समझता हूॅ, सदा वही किए हैं, जब जो षुरू किया, वही किया हूॅ, दिन रात वही किया । जब कविता किया कुछ भी करते रहे, कविता ही करते रहे। उसके बाद सत्य से मिथ्या कैसे पैदा हुआ, दिन रात वही करते रहे, उसी आधार पर ये समाधि भी हुआ। बात यह है हमको कपअमतबपजल हुआ ही नही। कपअमतबपजल से बवदबसनेपवद पाना मुष्किल होता है, समय लगता है।

प्रष्न– हमारा दि में 2 मिनट भी ध्यान जाता नही, विचारों में फैला रहता है।

उत्तर– वही बताया, हम जो षुरू किया वही किया। कविता षुरू किया, कविता ही करते रहे, दूसरा कुछ करा नहीं। चाहे कुदाली चलाऍ, चाहे लुहारी करूॅ, कुछ भी करूॅ । कपड़ा बुनूॅ । सब कुछ करते हुए वही किया।

प्रष्न– तो पढ़ने में आपने क्या क्या पढ़ा 4 वेद ....

उत्तर– पढ़ना नहीं है, सुना। पढ़ना बहुत दूर पढ़ने का नाम ही नहीं।

प्रष्न– अच्छा तो वेद उपनीषद ये सारा पढ़ा नहीं, कौन सुनाता था।

उत्तर– पढ़ा नहीं सुना। लोगों से सुना, पढ़ना भी सुनना माना हूँ सुने बिना पढ़े क्या चीज?

प्रष्न– तो केवल पुस्तक को देखना पढ़ना नहीं है।

उत्तर– अक्षरो को पढ़ना, पढ़ना नहीं है, उसको सुना पहले, उसके बाद समझ आ गया। सुनने तक संस्कार बना, पढ़ना हम मानते ही नहीं, अभी भी लिख रहा हूँ, कह रहा हूँ।

प्रष्न– जिसको श्रवण आप कहते हैं, सुनने को श्रवण कहते है।

उत्तर– पढ़ने के साथ श्रवण नहीं है तो पढ़ना हुआ ही नहीं, पढ़ने से कुछ हाथ नहीं लगा।

प्रष्न– मेरा तो अभी श्रवण ठीक से हुआ नहीं। माइनस में चल रहा हूँ।

उत्तर– वही कह रहा हूँ, बवउचंतपेवद करना चाहिए। यदि पढ़ता हूँ, कुछ भी उसको सुनता हूँ, तो ये ठीक है, गलत है, कुछ हो ही जाता है। जब की स्पष्ट नहीं रहा हमको। संयम से स्पष्ट होगा।

प्रष्न– तो आप ये कह रहे हैं कि पढ़ने के साथ सुनना बहुत आवष्यक है।

उत्तर– सुनने से क्या प्रयोजन है? स्मरण में रहता है। मैं कभी बीच बीच में जो बताता हूँ ना की पहले समझो सुनो ठीक से, ये डॉटता हूँ की नहीं? कुछ भी करें, कहीं ना कहीं चित्रण तक पहुँचते नहीं लगता है।

प्रष्न– अगर मैं कुछ पढ़ रहा हूँ, सुना नहीं मतलब वह चित्रण तक पहुँचा ही नहीं केवल विचार तक रहा।

उत्तर– केवल सुनते तक ही रहा।

प्रष्न– अच्छा केवल मन तक, विचार भी नहीं हुआ।

उत्तर– नहीं हुआ। विचार होता तो स्मरण में नहीं रहेगा।

प्रष्न– विचार हुआ तो स्मरण में रहेगा ही, ये नहीं हो सकता कि विचार हुआ और उसका स्मरण हुआ नहीं।

उत्तर– ऐसा कुछ होता नहीं।

प्रष्न– मैं पढ़ते समय सुन रहा हॅू कि नहीं इसका ये प्रमाण है की वह बात मुझे याद है या नहीं।

उत्तर– याद है तो सुना, याद नहीं तो सुना कहॉ।

प्रष्न– अभी पहले ये क्षमता को कमअसवच करना हैं।

उत्तर– यही मुख्य बात है। यदि संसार में हमें स्वयं को सत्य को प्रमाणित करना है, ये आवष्यक है। प्रमाणित ही नहीं करना है, बात दूसरी है।

प्रष्न– ये हो गया पढ़ना फिर सुनना सहित श्रवण , फिर मनन फिर सामान्य अर्थ, प्राथमिकता, आवष्यकता, तदाकार, स्वीकृत होना, तद्रुप होना फिर प्रमाण होना।

उत्तर– तदाकार, तद्रुप होने का पुंजी हर मनुष्य के पास रखा हुआ है। आज पैदा हुआ बच्चा है, इनके पास भी रखा है, हमारे पास भी रखा है, 90 वर्ष हो गये।

प्रष्न– मूल तत्व में सातवें नम्बर पर है, प्रमाण।

अनुभव प्रमाण

प्रयोग प्रमाण

व्यवहार प्रमाण

उत्तर– प्रयोग क्या चीज है, उत्पादन। उत्पादन करना प्रयोग, अनुभव समझदारी से, व्यवहार न्याय से। व्यवहार में यदि न्याय होता है तो प्रमाण, अध्ययन में सहअस्तित्व में जीवन ज्ञान, अस्तित्व ज्ञान, मानवीयता पूर्ण आचरण ज्ञान होता है तो प्रमाण, अन्यथा कोई प्रमाण नहीं। प्रयोग में उत्पादन पूरा होता है तो प्रमाण इसी के लिए हम कह रहे हैं। मदहपदममतपदह

का पूरा बवदबमचज को मिमक किया जाए। विकल्पात्मक ऊर्जा के लिए पूरा बवदबमचज मिमक किया जाए, ऊर्जा स्त्रोत के लिए अपना ही होगा। प्रयोग कर रहे होगें तो उसको भी जोड़ा जाए।

प्रष्न– इसमें आगे लिखा है, अनुभव ही प्रमाण परम , प्रमाण ही समझ, समझ ही प्रत्यक्ष।

उत्तर– अभी प्रत्यक्ष को क्या मानते हैं? लकड़ी, पत्थर इसको प्रत्यक्ष मानते है। अपन क्या कह रहे हैं? ज्ञानावस्था में समझ ही प्रत्यक्ष।

प्रष्न– जैसा मैं आपको देख रहा हूॅ ये प्रत्यक्ष है।

उत्तर– ये प्रत्यक्ष क्या चीज? हमारा जो ज्ञान है, ये प्रत्यक्ष होने से हमारा आपका पहचान हुआ, पहचान कहॉ से हुई।

प्रष्न– आपका ज्ञान जो है, मुझे जो प्रत्यक्ष है, जैसे अभी आप में ज्ञान है, आप समझे हैं, ये जो प्रत्यक्ष है ये आपका कार्य व्यवहार से मुझे व्यक्त होता हैं।

उत्तर– आपको हमारा प्रत्यक्ष होने का अनुभव है, आप में है ना, वह जो है ज्ञान से ही आता है, दूसरा कुछ आता नहीं।

प्रष्न– आपका ज्ञान प्रत्यक्ष रूप से आता है, ये मुझे समझ में आता है कि आप में ज्ञान है आप समझे हैं।

उत्तर– ज्ञान ही ना प्रत्यक्ष हुआ। हमको समझदारी है ये आपको प्रत्यक्ष हुआ। समझदारी आपका स्वत्व होगा तो आपका प्रत्यक्ष दूसरे को होगा। ये उनसजपचसपबंजपवद समझ में नहीं आने से ज्ञान उनसजपचसपबंजपवद होगा ऐसा माना ही नहीं, ना आदर्षवाद माना ना भौतिक वाद माना। तकनीकी उनसजपचसपबंजपवद होगा माना, वह बमदजतंसपेम थीसिस हुआ, पैसा पैदा करने के लिए।

प्रष्न– और आप कह रहे हैं कि तद्रुप, तदाकार विधि से ज्ञान उनसजपचसल होता है।

उत्तर– तद्रुप, तदाकार होने के लिए हर व्यक्ति के पा कल्पनाषीलता रखा है। आज पैदा होने वाला बच्चा कल मरने वाला आदमी, सबके पास ।

प्रष्न– आपका सूचना मिलने के पूर्व में मेरा किसी भी चीज पर विष्वास करने का आधार, मुख्य रूप में ये होना था कि मैंने ऑखों से दृष्य को देखा है कि नहीं। जैसे की सामने कोई इस प्रकार की कपड़े पहने हैं, मैं इसको देखता हॅू तो इस पर विष्वास करता हॅू। इसको प्रत्यक्ष प्रमाण पहले मानते थे।

उत्तर– आकार प्रकार को वेषभूषा को प्रमाण मानते थे।

प्रष्न– किस चीज का प्रमाण।

उत्तर– इकाई का होने का प्रमाण, आदमी होने का प्रमाण। उसके बाद जीव जानवर को हम मानते रहे, कपड़ा पहने हुए, कपड़ा पहने बिना। हम भी जीव जानवर में ही गणना होते रहे। जीव जानवर से आदमी ज्यादा है कि नहीं, जीव जानवर 4 पैर से चलता है, आदमी 2 पैर से चलता है।

प्रष्न– अभी अपन ये कह रहे हैं की ज्ञान ही प्रत्यक्ष होता है मानव परंपरा में, ये सारा तो ऐसा है ही।

उत्तर– वह सब स्वभाव गति में है, अपना त्व सहित व्यवस्था में है। ज्ञान की रोषनी में ये सब दिख जाता है।

प्रष्न– ज्ञान का प्रत्यक्ष होना और वह कार्य व्यवहार में व्यक्त होना।

उत्तर– प्रमाणित होना।

प्रष्न– इसीलिए समाधान, समृद्धि ही उसका प्रमाण है।

उत्तर– वही समाधान का बिजवतल होना।

प्रष्न– प्रमाण को उससे पहले अगर रखें तो वह रहस्य में फॅसता है। और जमेज करने का कोई जगह नहीं । मैं समझा हूॅ ये मुझे भी अपने में जमेज करने का जगह बनता नहीं।

उत्तर– हमारा ज्ञान आदमी के सामने प्रत्यक्ष होता है, हम प्रत्यक्ष हुए, हम का मतलब है जीवन, जीवन प्रत्यक्ष हुआ ज्ञान से ही, दूसरा कोई वस्तु से जीवन प्रत्यक्ष होता नहीं। ज्ञान रूप में ही जीवन को जो प्रमाण है, जीवन होने का प्रमाण, रहने का प्रमाण, दोनों आता है ज्ञान विधि से, दूसरा क्या विधि होगा इसका । इसका ंसजमतदंजम कुछ हो सकता है पदजमसमबजनंससल सोचने पर। इस मुद्दे पर करोड़ों अरबों वर्षो जूझ रहा है आदमी क्या किया? उसको हम समीक्षा कर सकते हैं।

प्रष्न– ये अभी आप प्रमाण की जो बात रख रहे हैं इसमें ये पहले से बहुत ही उंरवनत`ीपजि है।  भौतिक वाद और रहस्यवाद से उंरवनत`ीपजि इसको ठीक से पकड़ने की आवष्यकता है।

उत्तर– इसको जो सुन रहे हैं, इसको प्रस्तुति के लिए भी तैयारी बहुत जीवन्त होना पड़ेगा। ये मुद्दे में इधर उधर कुछ नहीं चलता, चमतमिबजपवद ही चलता है।

प्रष्न– खासकर जो विज्ञान जगत है उनके साथ बात करने में मुख्य मुद्दा यही आएगा। इस जगह पर स्वीकृति के बिना आगे नहीं बढ़ेगें।

उत्तर– इसको पूरा किए बिना आगे बात करने की जगह ही नहीं है। आगे बात कोई सुनेगा भी नहीं।

प्रष्न– वह पूछेगें की चतववि क्या है, आप ये समझे हैं, आपने ये संयम में देखा इसका क्या चतववि है।

उत्तर– ये ही चतववि है, उनसजपचसल होना ही चतववि है। हम प्रत्यक्ष होना ही चतववि है, प्रमाणित होना ही चतववि है, इसकी जरूरत है कि नहीं पहले तय करो? हम अकेले समझदार होने से संसार का उद्धार होगा, मैं मानता ही नहीं, संसार को समझदार होना पड़ेगा। हर व्यक्ति समझदार होगा तभी बनेगा, नहीं तो नाक अड़ेगा, नाक का मतलब है अहंकार, अहंकार ही तो मानव का गला पकड़ा है, पहले आदर्षवादियों ने कहा अहंकार के

कारण ही अविद्या है, अहंकार के कारण से ही सारा भ्रम है। उसके बाद इसका निराकरण क्या है? निराकरण के लिए कहा है, ज्ञान मुक्ति, ज्ञान क्या है पूछा तो तुम समझ नहीं सकते? नहीं समझ सकते वह कौन सा ज्ञान है भई, पूछो तो कहते हैं, हम इषारा करते हैं, हम ज्ञान नहीं बताते ज्ञान बताने योग्य नहीं है। अव्यक्त है, अनिवर्चनीय है। अगर ज्ञान ऐसा है तो, उसके बाद इषारा क्या करेगें। रहस्य हो गया ना। रहस्य में जो जितने भी साधना किए अपना अपना काट लिए, अंत में सिद्वि किए और डुब गए। हम जो समाधि देखा, समाधि के बाद सिद्वि का प्रयोजन ही नहीं है।

प्रष्न– तो सारा सिद्वी समाधी के पहले है।

उत्तर– समाधी के पहले है, कहीं ना कहीं, वहॉ समाधी के बाद देखा है। ये कौन सा संयम है। इसीलिए संयम को उलटा किया। तब हम ये पाए। नहीं तो ये नहीं पा सकते थे। षुरूआत ही यही से हुआ, हम समझ गया हूॅ हमारा उनसजपचसपबंजपवद होगा, किसको समझाऍगे? जो समझना चाहते है। षिक्षको को समझाऍगें और अभिभावकों को समझाऍगें। अभिभावक कौन नहीं है, कौन बचता है इसमें, सारे अभिभावको को समझाना ही पडेगा, अध्यपक को समझाना ही पडेगा, अध्यापक समझने के बाद स्वयं अभिभावको को समझाएगें, ऐसा मानके चल रहा हॅू, गलत है की सही है। बच्चों को समझाऍगे, अभिभावकों को समझाएगें, उसका स्त्रोंत बना के रखा है अभी तक देखिए क्या होता है, जैसा मानव का पुण्य होगा, वैसा होगा। मूल मुद्दा इतना है, ज्ञान उनसजपचसल होता है, ज्ञान ही प्रत्यक्ष है, मानव के द्वारा, दूसरा कोई चीज प्रत्यक्ष होता ही नहीं। बाकी सब अपराध प्रत्यक्ष होता है। पदजमसमबजनंस इसेंजपदह का विधि इतना ही है, बाकी सब अपराध का जगह है, जो अभी कर दिया, धरती को बीमार कर दिया, पिवद से निपवद से, जितना भी खनिज, कोयला, खनिज तेल का उपयोग करने से, इंधनावषेष धरती में नहीं पचता है, धरती बीमार नहीं होगा तो क्या होगा, इसके लिए क्या करना होगा? जमबीदपुनम को पुनः सोचना पड़ेगा, धरती के अंदर प्रवेष ना हो गर्मी ऐसा नितदंबम बनाने की बात। हम है ना छोटा सा नितदंबम बनाए थे, ये जो माइका होता है। माइका उष्मा को रोकता है, नीचे तीन फुट माइका को बिछाया, तब नितदंदबम बनाया, उसके बाद एक नितदंदबम के लिए उसको कोड़ा गया, तीन फुट के

नीचे देखा गया, गर्मी नहीं गया, ये भी देख लिया गया। तीन फुट माइका बिछाया, वहॉ उपलब्ध था इसीलिए कर लिया, नितदंबम को ऐसा करना चाहिए।

प्रष्न– अध्ययन विधि से मैं जब चलता हूॅ, अभी मेरे जो स्थिति है ....

उत्तर– अध्ययन किसके साथ होगा पहले वह तय करो? समझदार प्रमाणित व्यक्ति से अध्ययन करेगें कि और किसी से अध्ययन करेगें?

प्रष्न– समझदार प्रमाणित व्यक्ति के साथ।

उत्तर– अभी तक ये मान्यता थी कि अपने ओर ध्यान देना ही नहीं है, ज्ञान, अव्यक्त, अनिवर्चनीय है, व्यापक नाम तो दिया, उतना ही हम को प्राप्त है । व्यापक क्या है? पूछा तो ब्रम्ह, ब्रम्ह में व्यापक है, कह दिया, सोना, सोना में व्यापक है, लोहा, लोहा में व्यापक है। ऐसा कहा। हम अभी कैसा कह रहे हैं व्यापक को, पारगामी के रूप में, पारदर्षी के रूप में , सर्वत्र विद्यमान होने वाली बात तो पहले से ही सीखा है, किन्तु सर्वत्र विद्यमन कैसे है, व्यापक के रूप में, अभी हम इसको बताने योग्य हुए, ऐसा व्यापक है, वस्तुएॅ है, उसमें पारगामी है, जहॉ वस्तु नहीं है, वहॉ भी उपस्थित है। इसीलिए एक दूसरे को पहचानना होता है। सत्ता नहीं हो तो एक दूसरे को पहचानना होता ही नहीं, साम्य उर्जा ना हो तो उस स्थिति में एक दूसरे को पहचान ही नहीं सकते। उसी आधार पर एक परमाणु अंष दूसरे परमाणु अंष को पहचानने की बात बताया, फलस्वरूप व्यवस्था में होना, स्वयंस्फुर्त विधि से काम करना पता लगा, वह झगड़ा करता हुआ बताये भौतिकवादियों ने, क्योंकि वह सत्ता को पहचाना नहीं, साम्य वस्तु को पहचाना नहीं, उस आधार पर वह झगड़ा करता है, एक दूसरे को खिचॉतानी करता है, काहे की 2 अंषो से 275 अंषो वाला हुआ? झगड़ा करता तो एक ही उवकमस में पूरा हो जाता, ये स्वयं स्फूर्त है। ये पूरा इतना प्रजाति के परमाणु ना हो, यौगिक प्रक्रिया होगा ही नहीं, किसी भी धरती में किसी भी धरती में यौगिक क्रिया हुआ माने, ये प्रक्रिया हो गया। माने कितना प्रजाति के परमाणु होना वहॉ उपस्थित है, उसका संख्या दिया 122 हो सकता है, परमाणु का जंइसम देने वाला कोई ताकत है तो वह यही है, वह ऐसे 61 अंष तक भूखे परमाणु हैं, 61 अंष तक अर्जीण परमाणु हो सकते हैं। कुल मिलाकर 122 हुआ।

प्रष्न– ये प्रमाण वाली बात पर ये, जैसे मैं अध्ययन षुरू करता हूँ, तो अभी मैं जिस चीज को सही गलत या सत्य मानता हूँ, पहले हम बहुत स्थूल रूप में ये मानते हैं कि हमने ऐसा देखा है, जैसे किसी ने पूछा की नागराज षर्मा जी बोल के एक व्यक्ति है क्या, कहेगें हॉ है, क्योंकि मैंने ऑखों से प्रत्यक्ष रूप से देखा है उनको, ये एक विष्वास करने की जगह बनती है, ऑखों से जो देखा, दूसरा एक विष्वास करने की जगह बनता है, जिसको अनुमान कहेगें। जैसा अगर किसी ने पूछा की पहले पेड़ पौधे आए की पहले आदमी आया तो हम साधारण रूप से उत्तर देते हैं। कि पहले पेड़ पौधे को आना पड़ेगा, ये अनुमान हुआ, परन्तु ये पूरा है की नहीं पता नहीं, कल्पना रूप में इसमें और भी विकल्प आ सकते हैं।

उत्तर– अभी चन्द्रमा पर पेड़ पौधे नहीं है, पेड़ पौधे आने के बाद ही जीव जानवर आएगा, जीव जानवर आने के बाद ही आदमी आएगा। ये अपन भी कहने योग्य हो गये हैं।

प्रष्न– कहने योग्य हो गये है, जैसे मैं अभी कह रहा हूँ, मुझे कोई अनुभव तो नहीं हुआ है, इसके बावजूद आपने जब ये कहा कि पेड़ पौधे के बाद ही जीव जानवर आएगें, मुझे पता है की ऐसा है, ऐसा सही है, अनुभव के पूर्व में भी ये पता है कि ऐसा सही है, तो ये जीवन में अनुमान क्षमता कुछ है जिससे सच्चाई का पता चलता है, एक भाग।

उत्तर– सच्चाई का पता लगने की इच्छा जीवन में रखा है, षरीर के साथ जब अभिव्यकत हुआ, षरीर को जीवन मान लिया, षरीर के अनुकूलता जब खोजने लगे तो सब अपराध बोध षरीर बन गया, षरीर के अनुकूलता को सोचा पहला, पीछे वाला को छोड़ दिया, फलस्वरूप सभी अपराध वैध हो गये, ये तो हुआ है, आदमी जात का आदमी चाहे विद्वान हो, चाहे सबको षासन करने वाला हो, सबका हालत इतना ही है। षरीर को जीवन मानने के कारण सभी अवैध बात को वैध मान लिया।

प्रष्न– तो एक हुआ प्रत्यक्ष, दूसरा हुआ अुनमान । अभी हम कह रहे है की इसको साक्षात्कार रूप में देखना, जिसको साक्षात्कार कहा।

उत्तरः सार्थक, सार्थकता को जोड़ो, माने प्रत्यक्ष के साथ सार्थकता की ।

प्रष्न– जिसको हम साक्षात्कार कह रहे हैं, ये मैं ऑखों से तो नहीं देखता हूँ, साक्षात्कार ।

उत्तरः सार्थकता स्वीकार होता है, सार्थकता के अर्थ में साक्षात्कार, साक्षात्कार जब होता है तो उसमें विष्वास करना बनता है, क्योंकि वस्तु पहचानने में आता है।

उत्तर– सार्थकता के अर्थ में साक्षात्कार करते हैं, वह सब स्वीकार होता है, उनसजपचसल होता है, साक्षात्कार यदि षरीर के अर्थ में करते है, वह कभी भी उनसजपचसल नहीं होगा। विकृत हो कर के ही होगा, जैसा अमेरिका ने मिसाइल बनाया, यहॉ आने पर वह सस्ता भी हो गया, परिवर्तित भी हो गया, पउचवतज होने से इसको क्या कहोगे। इससे बड़ा मिसाल क्या होगा, उसी आधार पर भावे का उनतकमत इसी विधि से हुआ। उन्होंने ंजवउपब कमीसन सेमीनार में क्हा हम एक करोड़ रूपया में एक ंजवउइवउइ बना देगें, उस समय जो अमेरिका के चतमेपकमदज ये विज्ञानियों को बुलाया कहा ये पागल क्या बोला, वह भारत के पैसे से एक करोड़ रूपया में बनाने को बोला, डालर में कितना होता है तो इतना डालर होता है। तुम यहॉ कितना पैसा खर्च करते हो, वह कैसा करता है। उन्होने कहा ये `लेजमउ ही अलग है, आप कहो तो उसी `लेजमउ में हम बना देगें। बोले नहीं इसको बवेजसल बना के रखों। अभी भी उनका सारा चतवकनबजपवद बवेजसल है। संसार में जितने भी लोग ूत उंजमतपंस बनाते है। सबसे बवेजसल अमेरिका का। उसके बाद उनको दिया। ठ ए ।ए को। सराभई को दो। सराभाई को लेने के लिए कम से कम दस, पॉच लोगों को अपने को आहुति देना पड़ेगा, उसके लिए सब तैयार, व्यवस्था हुआ, उस दसश्बारह लोग और साराभाई सबको ले जा कर के क्रेष कर दिया। वह चले जाने से पागलपन चला जाएगा ऐसा वह सोचा ऐसा नहीं हुआ, उसका चेला साराभाई, केरला में बैठा है पता लगा, उनको ीवजमस में जहर पीला कर मार दिया, जैसा षास्त्री को मारा तनेपं में यूॅ चपाट हुआ। हिन्दु के बारे में जो पुष्टि किया, उनके आधार पर षास्त्री का मृत्यू हुआ, हिन्दु का नाम लिया संजय गांधी पदकपतं हंदकीप स्वयं राजी होके उसका उनतकमत हो गया। क्या किया जाए? ये सब क्या किया जाए? सब काट मार चल ही रहा है । ये सब एक से एक काम होता ही है। अभी भी ये सब उवकपलि होते हुए चल रहा है। मिसाइल विधा में भी उवकपपिबंजपवद होते ही जा रहा है, वह रूकता नहीं है। उसी आधार पर हम कह रहे हैं, समझदारी यदि होता है तो सब लोग जीएगें, हम जितना अच्छा जिया, उससे अच्छा सब लोग जीएगें, हम जितना अच्छा जिया, उससे अच्छा सब लोग जीएगें। गलतियों को जब उवकपपिबंजपवद में ले गये, अपराध को ले गये। उवकपपिबंजपवद में आदमी जो है न सहीपन को भी उवकपपिबंजपवद

में ले जाएगा। ऐसा हम सोचा। इससे क्या फायदा हुआ? आषा उद्य हो गया। हम सही ढ़ग से जी सकते हैं। ये आषा की बात हुई। उसके बाद अनुमान आ गया, उसके बाद प्रयत्न होगा, उसके बाद प्रवृत्ति होगी, उसके बाद सफलता की बात । अभी आप लोग सब ऐसा ही करते हो, बहुत अच्छा चवपदज है ये, पदजमसमबजनंस चतपवतपजल इतना ही है। यदि ये ेूपजबी वद होता है, सब ेूपजबी वद होगा, यदि ये ेूपजबी वद नहीं होगा, कोई भी ेूपबी वद नहीं होगा । पहले ये ही होना पड़ेगा, यहॉ से अपने को परिभाषा ही बदलना पड़ेगा पदजमसमबजनंसल की बरबाद कर रहे हैं, उनको पदजमसमबजनंस नहीं माना जाए, उनको इषारा ना किया जाए, सारा संसार स्वीकारता है, किसी आयु के बाद हम बुद्विमान हो गये, इसीलिए हर व्यथ्कित बुद्विमान होने की खाका ही हम पकड़े, हर व्यक्ति मानता है कि नहीं, किसी आयु के बाद हम बुद्विमान हो गये, हम इसको चपरासी से भी बात करके देखा, एक संघर्ष करने वाला चवचबवतद बेचने वाला से भी एक कवबजवत से भी बात करने के बाद यही निकला सभी अपने को बुद्विमान मानते ही हैं, किसी आयु के बाद , इसीलिए बुद्विमत्ता के ेजंदकमतक को अपने को सबके पास पहॅुचाने की आवष्यकता हैं।

प्रष्न : एक प्रत्यक्ष है, सार्थकता के साथ प्रत्यक्ष और अनुमान को अगर देखें तो साक्षात्कार की बात आती हैं।

उत्तर– मुख्य बात साक्षात्कार क्या है, ज्ञान के बिना, समझदारी के बिना कोई सोच विचार होता नहीं, ज्ञान जो है अपराध के लिए हो, चाहे न्याय के लिए हो, सोच विचार के बिना योजना बन ही नहीं सकता, योजना के बिना कार्य योजना होता नहीं, कार्य योजना के बिना, कार्य व्यवहार होता नहीं, कार्य व्यवहार के बाद फल परिणाम कहीं, जाता नहीं, फल परिणाम समझदारी के अनुरूप नहीं होने से हम मानते हैं, की हम तृप्त नहीं, अभी कहॉ पहॅुचाए इसको, लाभ के लिए लगाए, अपन समझदार के लिए लगाए। अभी लाभ के लिए लगाने के जगह समाधान के लिए लगता है। समाधान होना की केवल लाभ होना ऐसा तय कर लो। ये दोनों बात स्वीकार होने के बाद संसार में बहुत ज्यादा काम करना नहीं है, ये 2 चवपदज बवदअमदबम हुआ। उसके बाद स्वयं स्फुर्त विधि से बहुत कुछ करेगा। ये 2 ही चवपदज है, पहले समझदारी प्रत्यक्ष है, ये स्वीकार होना, समझदारी के आधार पर ही समाधान है, ये प्रत्यक्ष होना ·

प्रष्न– विगत में साक्षात्कार की किस चीज को साक्षात्कार माना हैं?

उत्तर– रहस्य को, तदाकर, तद्रुप को, भक्ति को, भक्ति सूत्र है उसी में तदाकार तद्रुप की चर्चा। उसके पहले नही था, इसीलिए भक्ति स्थापित हुई, नहीं तो स्थापित भी नहीं होता। वेद और सनातन कोई चीज को स्थापित होने ही नहीं देते। उसी तदाकर तद्रुप विधि से ये पूरे का पूरा तीनों आगम तंत्री को, आगम तंत्र जो है ना पूरा का पूरा मेजंइसपी हुआ, भक्ति के आधार पर, भक्ति विरक्ति के साथ के साथ है , पूरा आगम तंत्र उसके पहले केवल विरक्ति था। उसके पहले ज्ञान के साथ वैराग्य ही था, उसके साथ भक्ति जुड़ा तो ये आगम तंत्र आ गया। एक से एक आ गया, क्या करें? तीनों का एक ही आवाज है, वह है क्रियाषक्ति, इच्छाषक्ति, ज्ञानषक्ति जागृत होना। उसी के ऊपर तो हम पागल हुए। इसमें इतना ही सफलता है कि हम ऐसा बात करने योग्य हुए । ज्ञान ही प्रत्यक्ष है और कोई चीज प्रत्यक्ष नहीं । परिणाम क्या प्रत्यक्ष है? प्रत्यक्ष रूप हैं, परिणत रूप प्रत्यक्ष, परिणाम के साथ प्राणावस्था में गुण प्रत्यक्ष, जीव संसार में स्वभाव प्रत्यक्ष क्रूर अक्रूर रूप में, मानव सुखी, दुःखी के रूप में प्रत्यक्ष, दुःख भ्रम रूप हो गया, सुख ज्ञान रूप हो गया। इतना ही बात मेमदबम इतना ही। अभी सुखी रहना की दुःखी रहना सोच लो। दुःखी रहना तो आप सब जो कर रहे हो, वह ठीक, सुखी रहना है तो आप को बदलना होगा । पहले हम रूप को प्रत्यक्ष मानते थे, उसके बाद गुण को माना, उसके बाद स्वभाव को मानने लगे, स्वभाव के ऊपर तो अभी बात ही रखा है, दुःखी होना स्वभाव है, कि सुखी होना स्वभाव है उसका चर्चा ही हो रहा है, धर्म उसके आगे ।

प्रष्न– पहले के तुलना में देखा तो इतना सारा उन्होंने कहा था, प्रत्यक्ष प्रमाण, षास्त्र प्रमाणप, आप्त वाक्य प्रमाण, अनुमान प्रमाण, आगम प्रमाण।

उत्तर– उसको कैसा व्याख्या किया। प्रत्यक्ष को बेकार माना, '' दृष्यम् नष्टम् '' जो दिखता है वह सब नष्ट होने वाला। क्योंकि सब मरते ही हैं, बूढ़े होते ही हैं, पेड़ मरता ही है, जीव मरता ही है, मानव मरता ही है, पत्थर टुकड़ा होता ही है, मिट्टी पत्थर होता ही है। किन्तु उसके आगे की बात नहीं माना। गुण है, रूप के बाद, उसके बाद स्वभाव है, स्वभाव के बाद धर्म है। इस बात को प्रमाण नहीं माना, केवल रूप को प्रमाण माना। रूप का आधार पदार्थवस्था से है, पदार्थवस्था नाष होता नहीं, अपन यहॉ ला दिए। अभी मानव के साथ धर्म

प्रधान विधि से धर्म के आधार पर मानव का पहचान, उसमें समझदारी रहेगा कि नहीं रहेगा। समझदारी के बिना समाधान होता नहीं। समाधान के बिना सुखी होता नहीं, ये अपन वितउनसं लाये, उसके बाद ? इसीलिए ज्ञान को समझदारी को प्रत्यक्ष कहा, रूप प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं है, क्योंकि पदार्थवस्था को वस्तु नष्ट होता नहीं, अपन नष्ट होता नहीं कहते, परिणत होता है, रासायनिक संसार भौतिक संसार में परिवर्तन होता है। रूप में परिवर्तन होने से आचरण में परिवर्तन होता हैं, इस ढ़ग से गुण, स्वभाव में परिवर्तन हो गया, किन्तु अस्तित्व धर्म यथावत रहता है, उसके आधार पर पुष्टि धर्म, उसके बाद आषा धर्म, उसके बाद सुख धर्म का व्याख्या। ये कहॉ से आया? पहले जो धर्म के बारे में बात हुई ''धारयति इति धर्म ष ध्रु धातु के आधार पर ये षब्द बना। धारणा = धर्म। धर्म का व्यख्या दिया, औढ़ने वाला, उतारने वाला हो गया। उसका प्रमाण गीता को मानते है। गीता में लिखा है '' सर्वधर्मन परितज्य, मामेकं षरणं ब्रजः, अहंत्वा सर्व पापेभ्य, मोक्षषामी मा षुचः'' माने उतारने वाला हो गया कि नहीं हो गया। उसी आधार पर धर्मातंरण हो रहा है। हम सब बातों को जैसा कह रहे हैं, वैसा सुनना चाहे, मिटाना नहीं चाहे, ये सब स्वाभाविक रूप से हो गया। सुनने पर उसका अर्थ में गये। अर्थ में गये, अर्थ में गये तो सब व्यतिरेक हो गया, 3 लाख ऋ्चा हैं वेद में, अर्थ में गया तो सब उल्टा सीधा हो गया, बवदनैपवद से कुछ निकलता नहीं, वह से उपनिषद में गया, वहॅ भी वैसी ही रहा, रहस्य का ही बखान किया, उसके बाद वेदान्त में गया, वह भी रहस्य से ही षुरू किया, किन्तु वह स्पष्ट नहीं कर पाये। वेदान्त है ना सार बात निकालना चाहा, नहीं निकला, यहॉ हम आ गये, यहॉ आ गये तो क्या करोगे, वेद मुर्ति के साथ चर्चा, खिचॅतान श्राप अनुग्रह सब होने के बाद, श्राप देने में हम पहले अधिकारी हूॅ, श्राप के बात कहोगें तो ये सब हो चुका है, अभी जो देखा, उससे ज्ञान हुआ, की ज्ञान ही प्रत्यक्ष है, मानव परंपरा में धर्म प्रत्यक्ष, धर्म का अर्थ है ज्ञान, धर्म का अर्थ है समाधान। समाधान का अर्थ है ज्ञान , ऐसा आ गये।

प्रष्न– तो पहले जो बता रहे थे प्रत्यक्ष प्रमाण हुआ, फिर अनुमान प्रमाण हुआ।

उत्तर– अभी सभी प्रत्यक्ष हुआ ना भाई, प्रदार्थावस्था में रूप प्रत्यक्ष, प्राणावस्था में रूप, गुण प्रत्यक्ष, जीवावस्था में रूप, गुण, स्वभाव प्रत्यक्ष मानव में रूप, गुण, स्वभाव, धर्म प्रत्यक्ष, जीवन का भी स्वरूप होता है, परमाणु का स्वरूप है, ये लिखा है। इससे ज्यादा क्या लिखना, जीवन

का स्वरूप एक ही परमाणु का स्वरूप है, षरीर का स्वरूप अनंत परमाणु का, प्राणावस्था का षरीर बताया। जीवावस्था का षरीर रचना प्राणकोषाओं से होता है, ये बताया, ये भगवान बनाया है ऐसा नहीं बताया, प्राणकोषाओं से ही, प्राणावस्था के झाड़ पौधे, जीवावस्था का षरीर , ज्ञानावस्था के मानव षरीर , प्राणकोषाओं से ही बना है और सह अस्तित्व नित्य प्रगटनषील है, षरीर और जीवन का सह अस्तित्व में मानव परंपरा बना है, कैसा बना? सह अस्तित्व को प्रमाणित करने के लिए उसको छोड़ कर के अपन भटक रहे हैं।

प्रष्न– षरीर को अगर देखने गये तो ऐसा दिखता है कि पॉचों जो संवेदना है ये गर्दन के ऊपर के पक्ष में है, षब्द, स्पर्ष, रूप, रस, गंध, पूरे षरीर में पूरे चमड़ी में भी स्पर्ष है।

उत्तर– षरीर को जीवंत बनाए रखने से होता है, षरीर को छोड़ देने पर नहीं होगा। षरीर ले जा के मिट्टी में दबाते हैं, आग देते हैं, ।

प्रष्न– मुझ में जैसा ऑख हो गया, ना हो गया, जीभ हो गया, इसको ज्ञानेन्द्रिय कहा।

उत्तर– ये जो पॉच संवेदना को ज्ञानेन्द्रिया कहा।

प्रष्न– इसको ज्ञानेन्द्रिय कहने का क्या तात्पर्य था?

उत्तर– ज्ञान व्यक्त होता है इसीलिए, ज्ञान कहॉ व्यक्त हुआ? षब्द से ही ज्ञान ग्रहण होता है माना उसके बाद।

प्रष्न– जैसे मैं आपको देख रहा हूँ, सुन रहा हूँ ये सब मुझ में ज्ञान ग्रहण हो रहा है।

उत्तर– अभी जो है रूप ग्रहण से चक्षु को ज्ञान माना, षब्द ग्रहण से कान की ज्ञानेन्द्रिय माना, गंध ग्रहण विधि से नाक को ज्ञानेन्द्रिय माना, रस ग्रहण विधि से जीभ को ज्ञानेन्द्रिय माना, स्पर्ष से पूरा चर्म को माना, जैसा चक्षु रूपेन्द्रिय को ग्रहण करता है।

प्रष्न– जैसे स्पर्ष से भी रूप का पता चलता है ना।

उत्तर– ठीक है ना, उसका सहायक है ये, उसके लिए कहा पॉच अन्धे, एक हाथी, कान को पकड़ा हाथी सुपा जैसा, पैर को पकड़ा खम्बा जैसा दॉत को पकड़ा की लकड़ी जैसा ऐसा

सब कह चुके हैं। हमने कहा की ऑख वाला भी ब्रम्ह को देखता है, बिना ऑख वाला भी देखता है। ऑख वाले को क्यों नहीं पहचाना आदमी जात, अन्धें को क्यों नहीं पहचाना। ये सब हो चुका है हमाने सामने । अभी इस मुद्दे पर बात यह है की पदजमसमबजनंससल कहे की ऑखों से हम सब बातों को समझते है। जैसा हाथ पकड़ लिया, हाथ को हम छू सकता हूँ, पैर को छू सकता हूँ किन्तु इससे ज्ञान हो गया ऐसा कुछ नहीं। इससे रूप का पता लगता है, इकाई है ये पता लगता है, इससे पहले ऐसा नहीं हुआ कि इस ज्ञान से संवेदना से हम पूरा बात को समझ नहीं पाए। तब क्या किया जाए? मनुष्य का आचरण को पकड़ा जाए। मानव का आचरण अभी अपराध में फॅसा है इसके साथ वह चाहता क्या है, न्याय चाहता है। न्याय कैसा होता है, उसका पता लगया जाए। न्याय पता लगाने के लिए समाधान का आवष्यकता बनता है। समाधान के लिए समझदारी का आवष्यकता बनता है। तो ज्ञान का आवष्यकता बनता है, इस ढ़ंग से ज्ञान ही प्रत्यक्ष हुआ। किस विधि से न्याय विधि से, सत्य विधि से, समाधान विधि से, नियम, नियंत्रण, संतुलन विधि से ज्ञान ही प्रत्यक्ष है। ये आचरण का प्रत्यक्ष होना, आचरण प्रत्यक्ष हुआ। मनुष्य का ज्ञान प्रत्यक्ष हुआ। ज्ञान जो है, अभिव्यक्त है, ये सब व्यक्त है। सत्य जो है, समाधान में अभिव्यक्त है, न्याय भी अभिव्यक्त है, ये सब व्यवहार में प्रमाणित होता है कि नहीं, देखों। सकारात्मक पक्ष इतना ही है। अभी इतना प्रर्याप्त है कि नहीं देखों, प्रर्याप्त नहीं है तो उसे पूरा करेगें। रोग निवारण की विधि इतना है रोग को बनाए रखना है आप जो कर रहे हो, वह सही है आप ही मरोगे, हम तैयार बैठे है मरने के लिए, जहॉ इसका मूल्यांकन है, हम वही जा कर के काम करेगें। षरीर को यहॉ छोड़ देगें आप ही के पास। जहॉ जीवन जागृति का पिमसक है वहीं जा कर के हम काम करेगें। निराषा हम इतना ही होगें। ये सब याद रखने के लिए कह रहा हूँ, हम तो ऐसे ही तैयार किया हूँ जैसा कहा, यहॉ काम होता है तो वाह वाह, नहीं होता है तो जहॉ होता है, वहॉ करेगें। अभी आपके पास नाष करने के लिए जगह है, तभी तो किए हो नाष, वैसे उद्धार करने के लिए, जहॉ जितना जगह है, वहीं करेगें, क्या तकलीफ है, किसकी क्या तकलीफ है? खत्म हो गया बात, तर्क खत्म हो गया, तर्क के लिए है ये । चाहत के रूप में तुम भी सुखी होना चाहते हो, उसके लिए आकाष में, पाताल में क्या तो करना चाहते हो, पैसे से कोई सुखी होता नहीं, एक पैर रखने के लिए अरबों रूपया दिया, तभी भी सुखी नहीं हुए और चाहिए और चाहिए, चले गये, फिर? अभी चन्द्रमा पर पैर रखने के लिए, एक फुट जमीन के लिए अरब रूपया स्वदकवद में किसी ने लिया, अमेरिका ने पूछा तुम किस अधिकार

से दिए हो, जिस अधिकार में तुम बेचते हो, उस अधिकार में मैं बेचता हूँ, आप भी बनाए नहीं, हम भी बनाए नहीं, आप भी बेचते हो, मैं भी बेचता हूँ। क्या तकलीफ ये जितना भी कर्मकाण्ड है वाद ग्रस्थ है ही, र्निविवाद विधि समाधान है। समाधान पूर्वक जीने से क्या होता है, श्रम से समृद्वि, समझदारी से समाधान, इसी वितउनसं के बिना उद्वार होना बनता भी नहीं हम उद्वार होना ही हम उनसजपचसल होने का आधार, समझदारी उनसजपचसल होना ही , हम उनसजपचसल होने का मतलब ।

प्रष्न :मूल तत्व में 14 नम्बर सत्यता पर है। यहॉ लिखा है, भ्रमित मानव र्म करते समय स्वतंत्र एवं फल भोगते समय परतंत्र है, जागृत मानव कर्म करते समय तथा फल भोगते समय स्वतंत्र है। ये जागृत मानव दोनों तरफ से जो स्वतंत्र है क्या इसीलिए है, क्योंकि जो अस्तित्व सहज है ………।

उत्तर– फल जो है ना पहले से पता है, भ्रमित मानव को फल का पता नहीं है, कर्म कर लेता है। अभी धरती बिमार होने के लिए थोड़े ही किया है। धरती बीमार होना किसी को पता नहीं था। किसी ने जिम्मेंदारी लिया है। हम को पता था ऐसा कहा है, कोई नहीं कहा, ये किस को पता है। सुनने वाले को पता नहीं था, ना करने वाले को, धरती बिमार हो गया, परतंत्रता का ये मिसाल है कि नहीं है। ये खनिजावषेष तंकपंजपवद उमजंस इंधनावषेष चवससनजपवद के रूप में, किसी ने सोचा था? हो गया कि नहीं हो गया। यही स्वयं में रखा है। जैसे अपराध करना, अपराध करने का परिणाम समृद्वि नहीं है। ये पता नही था, अपराध करने से हम धनी हो जाएगें ऐसा ही तो सोचा था। फॅस जाएगें, कहॉ पता, किसको पता?

प्रष्न– तो 16 नम्बर मानवीय व्यवस्था में कहा ''मानवीयता, मानवत्व सहित व्यवस्था, समग्र व्यवस्था में भागीदारी''।

उत्तर– मानवीयता क्या चीज है? ''अस्तित्व दर्षन ज्ञान, जीवन ज्ञान, मानवीयता पूर्ण आचरण '' ज्ञान सहित जो काम करता है वह मानवीयता, मानवीयता से क्या होता है, तभी मानवत्व सहित व्यवस्था होता है। परिवार में, समग्र व्यवस्था में भागीदारी होता है। जीव चेतना विधि से नहीं हो सकता । व्यवस्था एक से अधिक व्यक्ति का होता है।

प्रष्न– अच्छा तो ये परिवार के लिए है, व्यक्ति के लिए नहीं है।

उत्तर– व्यवस्था एक से अधिक के साथ है, परमाणु में भी बता दिया एक से अधिक अंषों के साथ है, रचना भी ऐसे है। एक से अधिक अणुओं से ही है।

प्रष्न– फिर समाज में पूर्णता कहा, सर्वोतोमुखी समाधान हर व्यक्ति में, समृद्धि परिवार में, अभय समाज में, सह अस्तित्व सहज प्रमाण परम्परा में, चारों अवस्थाओं में, जो राष्ट्र में पूर्णता कहा, राष्ट्र किसको कह रहे हैं।

उत्तर– राष्ट्र पूरा धरती को।

प्रष्न– और अन्तर्राराष्ट्र ।

उत्तर– वह राज्य होना चाहिए, कुषलता, निपूर्णता, पाण्ड़ित्य। अन्तर्राष्ट्र में पूर्णता, मानवीय संस्कृति, सभ्यता विधि , व्यवस्था में एकरूपता।

प्रष्न– जो पॉच स्थिति कहा है, व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र और अन्तर्राराष्ट्र ।

उत्तर– राज्य और अन्तर्राराष्ट्र अभी के विधि से हम कहे नाम, अपने विधि से राष्ट्र । राष्ट्र एक राज्य अनेक।

प्रष्न– यहॉ 21 में मानव धर्म आया, सुख, षांति, संतोष, आनंद। दूसरे विधि से ऐसे भी कहते हैं कि जीवन मूल्य है । समाधान ही मानव धर्म ये भी कहा है ना।

उत्तर– ठीक है समाधान = सुख।

समाधान, समृद्धि = षांति।

समाधान, समृद्धि, अभय =संतोष।

समाधान, समृद्धि, अभय, सह अस्तित्व = आनंद।

प्रष्न– धर्मनीति और राज्यनीति का जो अपन बात बताए हैं ये विगत में भी इसका कोई परिकल्पना थी क्या?

उत्तर– नहीं, धर्मनीति, राज्यनीति का नाम दिया है, किन्तु धर्मनीति का स्वरूप पता नहीं, मानव को समझदार माना ही नहीं। राज्य में मुख्य व्यक्ति होता है राजा और भगवान का ईष्वर का प्रतिनिधि, यहॉ से षुरू किया। सकल कुकर्म राजा किया, उसी प्रकार अभी नेता लोग करते हैं।, कुकर्म करना नेता लोगों का अधिकार में जा रहा है। ‘‘गुरू ब्रम्हा, गुरू विष्णु, गुरूदेव महेष्वर ’’।

प्रष्न– फिर कहा अनुगमन और चिंतन, स्थूल से सूक्ष्म, सूक्ष्म से कारण, कारण से महाकारण, अनुगमन माने अनुभव के और गमन।

उत्तर– अनुक्रम से गति।

प्रष्न– क्या स्थूल से सूक्ष्म का तात्पर्य ये है की ये षरीर से जीवन, जीवन से आत्मा, कारण केवल आत्मा है या बुद्धि और आत्मा दोनों है।

उत्तर– सुक्ष्म में जीवन, कारण में आत्मा, महाकारण में अकेला व्यापक वस्तु।

प्रष्न– माने क्रम से जब हम समझने जाते हैं तो षरीर से जीवन का होना पता चलना, समझ में आना।

उत्तर– षरीर जीवन्त होने से जीवन से षरीर चलता है, जीवन्त में मरने से क्या अंतर है? जीवन षरीर को छोड़ देता है। जीवन षरीर को चलाता है जब तक, तब तक जीवन्त, जब छोड़ देता है तो मृत्यु । ये ज्ञान होना जरूरी है की नहीं सबको।

प्रष्न– जो मानव के चार आयाम बनाये व्यवहार, विचार, कार्य, अनुभव, ये विचार जो आयाम है दृ

उत्तर– विचार से ही षरीर चलता है, विचार के बिना षरीर चल ही नहीं सकता। विचार के बिना कोई क्रिया होता है षरीर में?

प्रष्न– जैसे हाथ उठाना ....।

उत्तर– सभी को कहा, ज्ञानवाही, क्रियावाही, ये दोनों को चलने के लिए विचार रहना आवष्यक है। यह हाथ उठा, इसको कौन समझता है, विचार के बिना? जीवन ही समझता है। ज्ञानवाही क्रियावाही बात को भी विचार ही तो समझता है ।

प्रष्न– व्यवहार और कार्य जो आयाम है ये व्यक्त होने के अर्थ में है ।

उत्तर– व्यवहार मानव के साथ कार्य उत्पादन के साथ।

प्रष्न– तो हर व्यवहार और कार्य के मूल में विचार होता ही है और फिर सीधे अनुभव कहा। ये जो अनुभूति कहते हैं, इसमें बोध समाया है। मानव के चार आयाम में अनुभव जो आयाम है ....।

उत्तर– अनुभूति पर आधारित विचार, विचार पा आधारित कार्य व्यवहार ।

प्रष्न– माने बीच में बोध और जो चित्रण है वह इसमें समाहित है । अनुभव और विचार के बीच में इसको चार आयाम में रखने का क्या कारण?

उत्तर– कारण यही था, मनुष्य का जीवन मूल्य 4 है, मानव लक्ष्य 4 है, इस आधार पर रख दिया। 4 ही मुद्दा है।

प्रष्न– ये महा मांगल्य में सत्यानुभूति जो कहॉ ये सत्यानुभूति और ऐष्वर्यानुभूति दोनों एक ही है।

उत्तर– अनुभूति में ये दोनों चवपदज जागृति, इसको प्रमणित करना जागृति, अनुभूति द्रष्टा पद प्रतिष्ठा सर्व मांगल्य में सत्यानुभूति होने से षुभ का धारक हो गया, जागृति को प्रमाणित करने से वाहक हो गया। भ्रम से मुक्ति इसका फल है। ऐष्वर्यानुभूति, सत्यानुभूति दोनों एक ही है।

प्रष्न– दृष्टा पद अनुभव ये दोनों एक ही बात है। जागृति जो है ना प्रमाणित होने के अर्थ में। प्रमाणित होना जागृति ये दोनों एक कार्यक्रम।

प्रष्न– कल इस मुद्दे पर एक बात आई थी की ''अनुभव एक और अनुभूतियॉ अनेक'' इसमें आपने कहा था जैसे विकास क्रम, विकास, जागृति क्रम, जागृति है ये अनेक हो गया, अनुभूति ।

उत्तर– अनुभव प्रमाणित करने के क्रम में अनुभूतियॉ कहा, अनुभूति द्रृष्टा पद में है।

प्रष्न– अनुभव जो है ये द्रृष्टा पद में होता है, अनुभूतियॉ प्रमाणित करने के क्रम में होता है।

उत्तर– प्रमाणित करने के क्रम में अनेक आयामों में अनुभूति को प्रमाणित करते ही है।

प्रष्न– अनुभूति आत्मा में होने वाली क्रिया है?

उत्तर– आत्मा से, आत्मा मूलक होने वाली क्रिया है। आत्मा मूलक विधि से बुद्धि से चलकर मन तक, मन से षरीर, षरीर से चलकर पॉच ज्ञानेन्द्रिय पॉच ज्ञानेन्द्रिय तक, पॉच ज्ञानेन्द्रिय से चलकर चारों आयाम तक। सभी विद्या में अनुभूतियॉ चलती है। अनुभूति का तो प्रमाण होता है। अनुभूतियॉ अनेक आयाम में आवष्यकता अनुसार प्रमाणित होता है। अनुभव सहअस्तित्व में ही होता है।

प्रष्न– माने ये आप जो अभी व्यक्त हो रहा हैं, ये अनुभूति है।

उत्तर– अनुभूति, अनुभव के प्रमाण के रूप में होता है। अनुभव स्थिति रूप में, अनुभूतियॉ गति रूप में।

प्रष्न– फिर 29 में उपलब्धि लिखा है, सह अस्तित्व में स्थापित मूल्यों में अनुभूति ।

उत्तर– वही सुख, षांति, संतोष, आनंद में अनुभूति।

प्रष्न– संबंध में जो स्थापित मूल्य है वह नहीं है।

उत्तर– संबंध में स्थापित मूल्य, इसी का तो प्रतिरूप है, सुख का ही प्रतिरूप है सब स्थापित मूल्य।

प्रष्न– इससे थोड़ा ऐसे आषय जाता है, जैसे अपन ने स्थापित मूल्य और षिष्ट मूल्य का प्रयोग किया उधर इससे लगता है जैसे विष्वास, सम्मान, स्नेह में अनुभूति होता है।

उत्तर– यहॉ जीवन मूल्य के अर्थ में कहा।

प्रष्न– उसके बाद आपने कहा संबंध में जो स्थापित मूल्य है, इसी का प्रतिरूप है ये, इसीलिए उसको भी स्थापित मूल्य ही कहा, इसी आधार पर पूरा मानव को अनुभव हो, इसको कहा की सह अस्तित्व का प्रतिरूप है, कुल मिलाकर के सह अस्तित्व को ना प्रमाणित करता है। मनुष्य अपने जीवन को धोखा दे कर के, सह अस्तित्व को धोखा दे कर के सुखी हो सकता है। अभी सह अस्तित्व विरोधी कर्म में व्यस्त है कि नहीं आदमी पूरा का पूरा ।

प्रष्न– जब अपन कहते हैं, चेतना विकास मूल्य षिक्षा, अपन ये भी कहते है, मूल्य जो है ये संबंध को पहचानने से बहते हैं।

उत्तर– संबंधो को पहचानने पर मूल्य का निर्वाह होता है, संबंधो को कैसे पहचानेगें, उसके लिए कहा व्यवस्था में में पहचानेगें।

प्रष्न– उसके लिए चेतना विकास आवष्यक है।

उत्तर– उसके अलावा हो सकता है तो कर लो।

प्रष्न– माने हम मूल्य षिक्षा को सूचना देते हैं पर मूल्यों का बच्चों में स्थापित होना चेतना विकास के साथ ही हो पाता है। चेतना विकास को छोड़ कर के मूल्य षिक्षा होते ही नहीं। मूल्य षिक्षा को अभी रखने का, समय के अनुसार है।

उत्तर– लोग अभी मूल्य षिक्षा को स्वागत करते हैं, चेतना विकास में ठीठकते है । इसीलिए दोनों को जोड़ के रखा। मनुष्य काफी कृपण हो चुका है। मानव जाति अपने सुविधा संग्रह के विरोध में कुछ सुनना नहीं चाहता, चाहे धरती रहे, चाहे ना रहे। क्या किया जाए? उस स्थिति में हम काम षुरू किया। अभी आपका वचपदपवद चाहिए । ये भाषा पर्याप्त है कि नहीं, सुखद है कि नहीं। सुखद सुन्दर होगा तो कभी ना कभी तो बोध होगा। ऐसा मानकर के तो सारे कुनबा को जोड़ा है हमने। कूएँ में भांग घूला है, हवा ही खराब है, उस स्थिति

में हम काम कर रहे हैं। कूएँ में घूला है भांग, उन्माद ना हो, ऐसे कैसे कहा जा सकता है। लाभोन्माद, कामोन्माद, भोगोन्माद, मानव को यहाँ ले आया। सोचने की जगह ही नहीं रह गया। उससे बचना चाहने वाला बचा हुआ है।

प्रश्न– ये लेखकीय वाला है, इसमें लिखा ''सह अस्तित्व सूत्र व्याख्या ही स्वयं में सामरस्यता है ''।

उत्तर– स्वयं में सामरस्यता, माने हर व्यक्ति स्वयं में सामरस्यता को अनुभव कर सकता है, किससे? सह अस्तित्व सूत्र व्याख्या से, ये होता है कि नहीं उसको रनकहम करो। सह अस्तित्व यदि समझ में आता है, स्वयं में हमारा आषा, विचार, इच्छा, सकंल्प, अनुभव का एक सूत्रता बनता है कि नहीं बनता।

प्रश्न– अनुमान तो है ठीक लग रहा है कि ऐसा होगा।

उत्तर– उसी को तो रनकहम करना है अभी, यदि स्वयं में एक सूत्रता होता है। सर्वस्व में एक सूत्रता को स्वीकार सकता है। स्वयं में एक सूत्रता नहीं होगा तो सर्वस्व में कैसा एक सूत्रता को स्वीकारेगा।

प्रश्न– फिर कहा सामरस्यता की स्थिति रूप, गुण, स्वभाव एवं धर्म कि सामरस्यता समाधान पर आधारित है।

उत्तर– रूप सामरस्यता की स्थिति पदार्थावस्था में, गुण सामरस्यता है, प्राणवस्था में, स्वभाव सामरस्यता जीवावस्था में, मानव में धर्म सामरस्यता ।

प्रश्न– ये सामरस्यता जो आप कह रहे है ये क्या है?

उत्तर– एकरूपता एक जात। मानव धर्म सामरस्यता कहने का मतलब एक जात होने के आधार पर।

प्रश्न– माने प्राणवस्था के रूप में बिल्कुल सामरस्यता है, ऐसा नहीं कह सकते, 2 नीम के पेड़ के रूप अलग हो सकते है। गुण एक जैसा है, जीवों में स्वभाव एक जैसा है।

उत्तर– रूप सामरस्यता पदार्थवस्था में, 2 अंषो के परमाणु से लेकर 275 अंष तक।

प्रष्न– एक लोहे का टुकड़ा, दूसरा लोहे के टुकडे जैसे ही रूप है उसका, पानी पानी के साथ एक रूपता है, षक्कर षक्कर के साथ एकरूपता है। षक्कर को पहचानना, रूचि के जगह में आएगा।

प्रष्न– कहा धर्म सामरस्थता ही मानव में अखण्ड़ता है और जो कहा इसमें स्वभाव समाया है, मानव का।

उत्तर– रूप, गुण, स्वभाव, धर्म अविभाज्य है। प्रधान रूप में किस आधार पर है ये रूप, गुण, स्वभाव, धर्म, रूप प्रधान रूप में, गुण प्रधान रूप में, स्वभाव प्रधान रूप में, या धर्म प्रधान रूप में, मानव में धर्म प्रधान।

प्रष्न– हमारा अभी जो देखने का तरीका है उसमें हम लोग काफी बनज कर के देखते हैं, साथ में देखना आता नहीं।

उत्तर– उसमें कोई आपत्ति नहीं, समग्रता के लिए काट के देखो ये ठीक है, टुकड़े रूप में रहने के लिए देखने से चलेगा नहीं, समझने के लिए टुकड़ा ठीक है।

प्रष्न– फिर कहा इसके अतिरिक्त तीनों अवस्था में पाये जाने वाले धर्म, स्वभाव, गुण, रूप को सीमा में सामरस्यता को पूर्णता को पाना संभव नहीं है। यदि संभव होता तो मानव के पीछे कि अवस्थाओं में सह अस्तित्व को तृप्ति को जानना मानना था, किन्तु इसका ना होना देखा जा रहा है।

उत्तर– सामरस्यता पाना ज्ञानावस्था में ही है, मानव जाति एक होने के बाद मानव चाहे काला हो, गोरा हो, सब मानव हैं। कोई काम करता हो आवष्यकता के अनुसार सब मानव है। माने कोई चीज को बनाता हो, बिगाड़ता हो, आवष्यकता के अनुसार रचना विरचना होता ही है, उसके अनुरूप कुछ भी विरचना करता हो, रचना करता हो। सभी मानव हैं। स्वभाव में धीरता, विरता, उदारता में एक रूपता है और धर्म में एकरूपता है।

प्रष्न– तो बाकी अवस्था में रूप, गुण, स्वभाव, धर्म सामरस्यता की पूर्णता नहीं है।

उत्तर– चारों अवस्थाओं को मिलाकर के पूर्णता नहीं है, इसमें रूप, गुण, स्वभाव, धर्म पूरा का सदुपयोग हैं, कितना बड़ी जिम्मेदारी है आप सब समझो। उसी आधार पर संवेदनाओं को नियंत्रित रखना है कि झेलना है। पहला बात वही से षुरू किया। इसको कहीं भी जमेज करो सब यही कहेगें संयत होना ठीक है चाहते यही है। रह नहीं सकेगें ये अलग चीज है, चाहिए के जगह में यही मिलेगा। जैसा न्याय चाहते हो की अन्याय, सभी न्याय ही चाहेगें।

प्रष्न– बाकी अवस्थाओं में सामरस्थता को पाना संभव नहीं हुआ, यदि संभव होता तो मानव के पीछे के अवस्थाओं में, सहअस्तित्व को तृप्ति को जानना मानना था, किन्तु इनका न होना देखा जा रहा है।

उत्तर– पीछे अवस्था में भी सहअस्तित्व को जान लिए, मान लिए, प्रमाणित कर लिये ये हो जाता , ये नहीं हुआ।

प्रष्न– फलतः अग्रिम विकास में संक्रमण एवं पद में आरूढ़ता द्रष्टव्य है।

उत्तर– इसी आधार पर आगे की अवस्था बनी।

प्रष्न– मानव में ही धर्म सामरस्यता को पाने की संभावना स्पष्ट हुई है। इसको पा लेना ही मानव का परम उद्देष्य है, उसे सर्व सुलभ कर देना ही मध्यस्थ दर्षन का अभिष्ट है।

''मानव जीवन सफल हो''

''अन्य में संतुलन प्रमाणित हो''

उत्तर– 3 लाख ऋचा में जो नहीं हुआ, ये 2 लाइन में हो गया, 122 उपनिषदों में जो नहीं हुआ वह हो गया, वेदान्त में जो नहीं हुआ, वह हो गया, उसके बाद क्या बचा? सूचना के रूप में भी, जीने में क्या होता है, आप ही देख लो। हम से तो कम नहीं होगा, हम से अच्छा ही होगा।

प्रष्न– इसमे एक लाइन लिखा है कि अभ्युदय (सर्वतोमुखी समाधान) सबको उत्प्रेरित कर रहा है कि '' स्वयं का मूल्यांकन कर लो, गलती अपराध नहीं करोगें फलतः दुःखी, प्रताड़ित, दरिद्र नहीं होगे''।

उत्तर– हर मानव हर व्यक्ति समाधान चाहता ही है।

प्रष्न– ये संदेष आप मुझे दे रहे हो, जैसे मैं इसका अध्ययन करना षुरू कर रहा हूँ, तो आप मुझे ये कह रहे है कि मैं अपना मूल्यांकन कर लूं कि मैं गलती अपराध नहीं करूं।

उत्तर– ये हमारा भी प्रेरणा है और आपके स्वयं में भी प्रेरणा है, क्योंकि आप स्वयं समाधानित होना चाहते है।

प्रष्न– जो हृदयंगम षब्द का प्रयोग करते हैं, इसका मतलब क्या है?

उत्तर– हृदयंगम का मतलब है, कियान्वयन करने योग्य। मन में आ गया, षरीर तैयार हो गया, षरीर तैयार होने के लिए हृदय को माना जाता है।

प्रष्न– उसके मूल में हमारा इच्छा होना आवष्यक है, उसके बिना होगा नहीं ।

उत्तर– ज्ञानवाही किया वहॉ काम करेगा।

प्रष्न– इसमे एक चवपदज है, स्वधन, स्वपुरूष, स्वनारी तथा दयापूर्ण कार्य व्यवहार सम्पन्न जीवन दृढ़ता पूर्वक जीने में समर्थ होने के लिए, तो अभी अध्ययन प्रक्रिया में दृढ़ता पूर्वक ही आगे बढ़ पाऊॅगा मैं।

उत्तर– अध्ययन के लिए ये हिस्सा जोड़ा, जैसे अभी हमारे पास पैसा है, उसका क्या करें? सदुपयोग करो, सदुपयोग क्या होता है, पहले अध्ययन उसके बाद प्रमाण। यही सदुपयोग समाज गति के लिए सदुपयोग करेगें, स्वयं तय करेगें, प्रमाणित होगें, समाधान समृद्वि पूर्वक, वह तो उनसजपचसल होने वाली काम होगा, नहीं तो प्रेरणा देने वाली काम होगा। यही सबको पूछा की क्या वेतनभोगी प्रमाणित हो सकता है? नहीं हो सकता, दो टुक बताया, उसमें थोड़ा सा भी मलहम नहीं लगया, अपने को मलहम चढ़ाना भी आता है। इसमें भी कोई षंका नहीं, हमसे ज्यादा मलहम लगाने वाला संसार में एक भी नहीं है कई मूद्दे पर हम मलहम चढ़ाये हैं, चढ़ाने का अधिकार हमारे पास रखा है, उसको प्रयोग नहीं किया। उसके पहले वेद, विचार, ऋचाओं द्वारा हम ये पूरे बात को कह सकते हैं। ये अधिकार हमारे पास रखा है, उसका भी प्रयोग नहीं किया। 300, 400, 500 ऋचा ऐसे हैं, उसके द्वारा हमारे

बात को पूरा कहा जा सकता है, हम जैसा अनुभव किया उसको उस भाषा में प्रयोग किया जा सकता है। व्याख्यान जैसा हो जाएगा, इसलिए उसको छोड़ दिया।

प्रष्न– ये जो 400 ऋचाएँ आप बोलते हैं, ये क्या सारे वेदों में है या कोई एक जगह?

उत्तर– सारे वेदों में लिखा है भाई, अलग अलग जगह, टुकड़े टुकड़े में ।

प्रष्न– मैं उसको समेटने गया तो मेरे से नहीं बनेगा।

उत्तर– इतना आसान नहीं है, बहुत समय लगेगा, समय लगने से हो जाएगा।

प्रष्न– उसमें गठन पूर्णता की बात तो नहीं आई होगी।

उत्तर– नहीं आई, उसमें व्याख्या के रूप में दिया जा सकता है बताया, अभी आपको बताया ना धारणा = धर्म। उसको व्याख्या दिया पहनने वाला, उखाड़ के फेकने वाला, ऐसी ही हर बात, ठीक है, ये दर्षन बहुत ही सघन है, इसमें कोई भी विरोध नहीं है। उसके बाद इस पूरे बात को सघन रूप में कहने के लिए कोषिष किया, बहुत ही कठिन होने पर थोड़ा सा विरोध किया, तब इतना लम्बा किया, इसमें जो है ना पूरा मूल तत्व जो लिखा है, वह पूरा मूल तत्व इमसें वर्णित है कि नहीं देख लो, मूल तत्व के नजरिया में हैं कि नहीं देख लो। अर्न्तविरोध ना रहे इसीलिए हम आपको परीक्षण करने के लिए कहा। बहुत बढ़िया है, मानव व्यवहार दर्षन। भानुमति पिटारा है। जितना निकालो, उतना ही निकलता है। अभी देखो इस मूल तत्व में कितना सारा बात हो गया, कृतज्ञता के साथ सारा बात, उसके बिना कुछ हाथ नहीं लगेगा।

प्रष्न– जो मध्यस्थ षब्द है, इसको आप ने गढ़ा है।

उत्तर– हॉ वह हमारा दिया हुआ, सम्पृक्त हमारा दिया हुआ, सम्पृक्त परंपरा में नहीं है, ‘‘अष्लेष, संष्लिष्टष्ष ढ़का हुआ, डूबा हुआ विधि में आता है। संस्कृत से विज्ञान विधा में आ गये, पर्वत के ऊपर मेघ जो है ना आच्छादित रहता है, इस अर्थ में कहा ढ़का हुआ, कालीदास का मेघदूत में लिखा है।

प्रष्न– कभी कभी लगता है, इसमें दोनों चीज आ गई, एक तो आपका समझ और अनुभव अपने जगह, साथ में भाषा पर आपका जो अधिकार था उससे ये सारे को कहते बना, यदि भाषा का अधिकार नहीं होता आप ऐसा नहीं कह पाते।

उत्तर– जब हम लिखने लगे, मधुमक्खी जैसा घेरते हैं षहद के छत्ता को, भाषाएँ हमारे सामने घूमते रहता है, उसमें से एक षब्द को लेना है, 1000 षब्दो के बीच से, ऐसा लिखा। हम बुलाए नही उन षब्दों को स्मरण से अपने आप से ही घूमता रहा। अभी भी किसी मूल मुद्दे को सोचता हूँ, षब्द अपने आप चलते है, दौड़ते है, ये हमारा साधना का महिमा रहा, एक ये हो सकता है, दूसरा जो है ना कविता करते रहे, उसका संस्कार रहा।

प्रष्न– चिंतन क्षेत्र में श्रुति एक किया है, श्रुति का परिभाषा है, यथार्थ जानकारी का भाषा करण जीवन में वहीं किया है ये वही है।

उत्तर– यथार्थ भाषाकरण अपने आप में एक बड़ा संस्कार है, मूल उद्देष्य के अर्थ में पूरे भाषा को पकड़ना अपने आप में वेद जैसा वस्तु है। उसमें इतना विसंगतियों को हम निकाल दिया। हजारों विसंगतियॉ रखी हुई है, हम उसका बखान भी नहीं करना चाहता हूँ, हमको खुद को षर्म आता है, 90 वर्ष की आयु में इससे ज्यादा क्या बताएगें। आज के ूवतोंवच के मूल तत्व समझ में आ गया तो इसमें कुछ नहीं है अटकने को।

प्रष्न– माने अभी जो प्रस्तुत हो रहे हैं आपके साथ इसमें कुछ भाग ऐसा है की कहीं कुछ स्पष्टीकरण चाहते हैं, कुछ भाग ऐसा है कि उसके बारे में मैंने जो बनाया॰, उसको आपके साथ जब रखते है, तो ध्यान बहुत अच्छे से जाता है।

उत्तर– यही समझने की विधि माना आपके अनुसार यही समझने की विधि है। दोनों के साथ सच्चाई यही है। दोनों समझने के कम है, ढ़ग आपका अलग है, इनका भी अलग है। समझने से इनका भी वही सूत्र आता है, आपका भी वही सूत्र आता है। इनका भाषा को ॅजपेलि करना है, आपका भाषा भी ॅजपेलि होना है। ऐसा तो हमारा पूरा का पूरा समझाने की विधि है।

प्रष्न– इसमें लिखा है कृतज्ञता जागृति की ओर प्रगति के लिए मौलिक मूल्य है।

उत्तरः कृतज्ञता के बिना हम बात ही नहीं कर सकते। हम विज्ञान विधि से रूप संसार के प्रति कृतज्ञ है, आदर्षवादी विधि से भाषा के प्रति कृतज्ञ । इससे ज्यादा क्या कहना। मारने काटने को हम सहमति नहीं दिए हैं। अभी तक जितने भी व्याख्या हुई उसमें विरोध ज्यादा, इनको नहीं मानते । नहीं मानने से फायदा नहीं, उसमें जो सार बात है उसको लेना है और जो कमियॉ है, उसको पूरा करना है, उससे पहले क्या देखा? निराष, ह्रास, इसमें क्या है। सुविधा संग्रह इससे मुक्ति हो जाए। उसका विकल्प दिया समाधान, समृद्धि , समाधान यदि होता है तो रहस्य से मुक्ति हो गया, समृद्धि हो गया तो सुविधा संग्रह से मुक्ति हो गया। वैसे तो जोड़ा ही है समाधान ....। रहस्य मुक्ति के लिए समाधान, सुविधा संग्रह मुक्ति के लिए समृद्धि, सवहपबंससल इतना पिजदमे है, जितना हम कल्पना नहीं किए थे, उतना हो गया लगता है, उससे पहले बात यह है, हमारा कल्पना में नहीं था, वह समझ में आ गया। समस्त मानव जात का कल्पना का मेमदबबम निकाल लो, ये नहीं निकलेगा।

प्रष्न– कभी कभी लगता है हम जैसे लोग आप के पास कैसे आ गएँ?

उत्तर– अपने पुण्य से, हम उसको यही भाषा देता हूँ, जीवन सबका तड़प ही रहा है, सच्चाई के लिए, वह उबाल कहीं ज्यादा है, कहीं कम, यही माना जा सकता है।

प्रष्न– इसमें भाषा के `जलसम को ले के आप को पूछना था। जैसे नियम ही न्याय, न्याय ही धर्म, धर्म ही सत्य ये आपका बनाया हुआ `जलसम है की पहले से था ऐसे।

उत्तर– पूरा वितउंदजपवद हमारा। अभी आदर्षवाद कह पढ़ो तुम तो एकाधिकार वाला है, ईष्वर एकाधिकारी । ये बमदजतंसपेम कर के ईष्वर के पास कोई अधिकार नहीं 4 अवस्थाओं में कपबमदजतंसपेम कर के रखे। वही है प्रेरणा कपबमदजतंसपेंजपवद का, हमारे पास जो प्रेरणा मिली है, सह अस्तित्व स्वयं कपबमदजतंसपेम करके रखा है, मानव के पास बमदजतंसपेम करने का अधिकार कहॉ से आ गया। यहॉ से तो हम षोध किए। आदर्षवाद के अनुसार भी ये बमदजतंसपेमक है, ब्रम्ह ही ज्ञाता, ज्ञेय भी ज्ञान भी ज्ञाता भी। तीनों चीज ब्रम्ह ही है। बमदजतंसपेम हो गया ना। अभी अपन कह रहे हैं हर जीवन ज्ञाता है, सहअस्तित्व ज्ञेय है। मानवीयता पूर्ण आचरण ज्ञान है और उसके बाद द्रष्टा, कर्ता, भोक्ता के बारे में कहा। कर्ता के रूप में जीवन, भोक्ता के रूप में मानव । मानव षरीर और जीवन का

संयुक्त रूप । इसमें किसको परेषानी है, आप बताओं? इसमें कपबमदजतंसपेम हुआ की नहीं, द्रष्टा जीवन होता है, मानव कर्ता, भोक्ता, हो गया। द्रष्टा जीवन, कर्ता , भोक्ता मानव। हर जीवन में द्रष्टा, कर्ता, भोक्ता पद है, ये तो लिखा है । विज्ञान जो आया व्यापार को बमदजतंसपेम किया, सुविधा संग्रह विधि से, इस विधि से दूसरा कुछ कर ही नहीं सकते। इसीलिए मूल बात को रखा, इससे नहीं हुआ तो पूरा व्याख्या दे दिया। दर्षन, विचार, षास्त्र । पहले पॉच सूत्र उसके बाद मूल तत्व उसके बाद पूरा व्याख्या, ऐसा लिखा। व्याख्या करने से 3500 पेज हो गये, इसको लाखों पेज में लिखा जा सकता है, अभी हम उसको सपउपजंजपवद किया। ऐसा लगा की बहुत लम्बा करना ठीक नहीं, उसके लिए कह दिया, समझा हुआ मनुष्य दूसरों को समझाएगा। किताब पढ़कर समझेगा ये लिखा ही नहीं, किताब एक सूचना है। ये भी बमदजतंसपेंजपवद का एक षाखा है। ये हुआ इंमए इंम ऐसा तैयार हुआ, उसके बाद मनुष्य के साथ षुरू किया व्यवहार में तो मानव लक्ष्य को बताया, समाधान, समृद्वि, अभय, सह अस्तित्व। समृद्वि षरीर के लिए बाकी तीन जीवन के लिए। समाधान जीवन के लिए, अभय जीवन के लिए, सहअस्तित्व जीवन के लिए । ये हमारा देन है मानव लक्ष्य, पूरा मानव लक्ष्य हमारा देन है मानव जाति के लिए। इससे पहले कहीं भी मानव लक्ष्य को आप जतमे नहीं करोगें। पूरा भौतिकवाद में या आदर्षवाद में, इन दोनों में नहीं पाएगें। क्या अद्भूत बात है, आज का षोध अच्छा जा रहा है, कभीश्कभी होता है ये बहुत बढ़िया है।

अध्याय : एक

सह अस्तित्व

प्रष्न– एक बहुत प्रारंभिक जलचम की बात समझना चाह रहे थे, इस पुस्तक में देखें तो इस प्रकार की बिन्दु है जिसको कहा अनुभूतियॉ तो ये अनुभूतियॉ का मतलब।

उत्तर– अनुभव का प्रकटन।

प्रष्न– विचार भी है इसमें, चिंतन भी है, सारा। ये सारी बात को जो समावेष है, मूलरूप में मुझे जो समझना है, उसको आपने अध्ययन बिन्दु में दे दिया। मतलब ये सारा बात जो है सिमटकर अध्ययन बिन्दु में जितने चवपदज है, समझ में आने की जो वस्तु है वह अध्ययन बिन्दु में है इतने पूरे में जो है उसका विस्तार है।

उत्तर– व्याख्या है, अभिव्यक्ति, संप्रेषणा, प्रकाषन तीन विधि से है ये।

प्रष्न– 1970 में जब पहली बार ये पुस्तक छपी थी, उस समय ये चारों नहीं था।

उत्तर– ठीक है ना बाद में इसको आवष्यकता महसूस हुआ, इसमें चारों चिन्ह को बता दिया। एक है अनुभूतियॉ, दूसरा है परिभाषाएँ, तीसरा है सम्बन्ध एवम् स्पष्टीकरण , चौथा है विष्लेषण अनुभूतियॉ एवम् परिभाषाओं का।

प्रष्न– जो संबंध एवम् स्पष्टीकरण है?

उत्तर– व्यवस्था के अर्थ में संबंध , स्पष्टीकरण पूरा का पूरा व्यवस्था के अर्थ में है।

प्रष्न– ये पुस्तक में अध्याय का जो ंततंदहमउमदज है वह जैसे सृष्टि दर्षन षुरू हुआ, फिर मानव प्रयोजन षुरू हुआ। पद एवं पदातीत, क्लेषश्मुक्ति, योग। इसके वतकमत में कुछ अर्थ या आषय है क्या?

उत्तरश जैसा अनुभव किया उस वतकमत से किया।

प्रष्नश एक ही बींचजमत '' मानव सहज प्रयोजन'' में सब आ सकता है। पदार्थवस्था की . ...।

उत्तरश 5 सूत्र में सब आ गया, उसके बाद मूल तत्व में सब आ गया, उसका फैलाव में इतना हो गया।

प्रष्न श इसमे हम लोग जब बींचजमत को पढ़ते है, तब एक विधि से ये तो अच्छा है कि हर दिषा से उसको देखना पड़ता है, जैसे व्यवहार के बारे में कुछ कहा, फिर उसमें जड़ प्रकृति का कुछ षुरू हो गया, परमाणु के बारे में कुछ ......।

उत्तर– सब सम्मिलित है । सबको अलग करके अपने को पढ़ना होगा। समझने की इच्छा होने पर उसको अलग करके समझा जा सकता है। समझाया जा सकता है। रूकता कहीं नहीं है।

प्रष्न– इसमें षुरू किया '' मैं नित्य, सत्य, षुद्व एवं बुद्व परमात्मा रूपी व्यापक सत्ता में संम्पृक्त जड़श्चैतन्य प्रकृति को अनुभव पूर्वक स्मरण करते हुए ''मानव व्यवहार दर्षन'' को विष्लेषण करता हूँ'' । इसमें जो ''मैं'', संज्ञा है।

उत्तर– लिखने वाला, मैं जो लिखने वाला, अनुभव सम्पन्न मानव तात्विक रूप में आत्मा। इसको व्यवहार में षरीर और जीवन का संयुक्त रूप में मैं। मैं मानव के रूप में लिखा हूॅ ना कि जीवन के रूप में ।

प्रष्न श जो ये कहा की स्मरण करते हुए?

उत्तर– अनुभव मूलक विधि से अनुभव का स्मरण रहता है, वही तो प्रगट होता है। अभ्युदय के रूप में, व्यवस्था के रूप में, अखण्ड़ता के रूप में, तीन अर्थ उसमें समाहित हैं।

प्रष्न– ये अनुभव का स्मरण ये कहॉ रहता हैं?

उत्तर श चित्रण में स्मरण चित्रण में, किस बात का? अनुभव मूलक विधि से चित्रण जो किए है उसका स्मरण रहता है। उस स्मरण के साथ लिखे है।

प्रष्न– पूरे दर्षन में ये सबसे जवच वाक्य हैं।

उत्तर– पहला वाक्य तो यही है, उद्घाटन उसमें पूरा समाया है, पूरा किताब समाया है, जितना भी बांगमय है पूरा का पूरा पहले वाक्य में समाया है।

प्रष्न– तो होने के रूप में इसको नित्य कहा, सदा सदा एक सा विद्यमान है, सदा सदा एक सा भास आभास मान है माने पहचानने में आता है, सदा सुखप्रय है उसको षुद्व कहा।

उत्तर– क्योंकि उसमें कोई दबाव नहीं, सह अस्तित्व में कोई दबाव नहीं, ना कोई समस्या मनुष्य का अहमता पूर्वक कल्पना ही समस्या है । सह अस्तित्व में एक भी समस्या नहीं, सुखप्रद नहीं होगा तो और क्या होगा? समाधान का सम्पूर्णता , सुख के अलावा और क्या होगा। समाधान जो है सह अस्तित्व विधि से ही आता है। दूसरा कोई विधि से आने वाला नहीं है।

प्रष्न– तो ये जो व्यापक वस्तु है, मुझे हर क्षण प्राप्त है, मैं इसी में हूँ अभी।

उत्तर– मानव को प्राप्त हैं, ज्ञान रूप में, चेतना के रूप में प्राप्त है। चेतना चार अवस्था में। उसमें से जीव चेतना में मानव जी चुका, समस्या को पैदा कर चुका। मानव चेतना में देव चेतना में जीने का प्रस्ताव है, मानव, षरीर और जीवन का संयुक्त रूप है, मानव संज्ञा जब तक है तब तक चेतना काम करता ही रहता है। आषा के रूप में जीव चेतना में है, विचार रूप में मानव चेतना में है, देव चेतना में अनुभव मूलक विचार के रूप में, अनुभव मूलक बुद्दि के रूप में मानव चेतना, अनुभव मूलक प्रमाण के रूप में दिव्य चेतना समाधान के अलावा दूसरा कुछ होगा नहीं, समस्या को पैदा ही नहीं कर सकते। स्चयं के साथ धोखा किए बिना हम समस्या पैदा नहीं कर सकते। स्वयं के साथ धोखा किया है, अपना स्वयं का अध्ययन ना हो पाना, उसी के लिए षिक्षा संस्कार सबको अध्ययन सुलभ हो जाए, उपदेष विधि को ताक में रखा, अभ्यास विधि को `मबवदकंतल में रखा, अभ्यास विधि माने समाधि, संयम को `मबवदकंतल में रखा, अध्ययन विधि को प्रधान रखा। हमारा अधिकार साधना को प्राथमिकता में रखने का भी था, किन्तु उसका हम उपयोग नहीं किए। बवउचंतम करके देखा, सर्वजन सुलभ अध्ययन ही है, साधना नहीं है। समाधी संयम सब के लिए सर्वसुलभ नहीं है। उस आधार पर अध्ययन को अर्थबोध होने के अर्थ में रख दिया।

प्रष्न– अध्ययन विधि नहीं होता तो हम जैसे बहुत से लोग भाग जाते।

उत्तर– साधना का नाम लेने पर एक भी नहीं फटकता, अनिष्चित साधना में कौन जुटेगा, आप बताओं, हमारे जैसा पत्थर के अलावा कौन जुटेगा, कोई जुटेगा तो उसके लिए सपजतमजनतम रखा है, सपजतमजनतम के अनुसार समाधी होता है, संयम होता है, कोई ज्ञान नहीं होता ये भी लिख दिया, स्वयं के लिए हमने जो ज्ञान प्राप्त किया उसको विधि बता दिया और क्या करते हम? हमारे पास और कोई विकल्प ही नहीं था।

प्रष्न– आप तो पत्थर नहीं है, जो समझे नहीं वह पत्थर है।

उत्तर– चेतना सब के पास में है, हमारे पास भी है, आपके पास भी है, बात यह है कि सर्वाधिक आदमी सुविधा, संग्रह के पक्ष में हो गया। ऐसा है तो सह अस्तित्व में उसको बीमबा कर ले, यही ना सभ्य भाषा । सह अस्तित्व में उसको बीमबा करके तय करेगें। बतमंउ

हमदजसम इसको तय करेगा। बवससमहम में जा के ये सर्वसुलभ हो जाएगा, विद्यार्थियों को स्वीकार करने में कोई तकलीफ नहीं है। अभी किस चीज को विद्यार्थी अपनाता है, किस चीज को नहीं अपनाता है, देख लो, इसका परीक्षण उत्तर प्रदेष में रणसिंह आर्य के घर में हुआ। बिजनौर में, बच्चे जो है इसी को अपनाते हैं। अपने को कोई समय बाधा नहीं है और कोई भी ऐसा प्रष्न नहीं जिसका उत्तर अपने पास ना हो। समझने का प्रयास कहॉ जा सकता है इसको प्रष्न भी नहीं। यही ना सभ्य भाषा है । इसी का नाम जिज्ञासा।

प्रष्न– थोड़ा व्यवहार दर्षन से अलग प्रष्न है, व्यवहार दर्षन के प्रष्न को कल बवदजपदनम करेगें।

उत्तर– ठीक है, हम सहमत हैं, आपके वितउंज से हम सहमत हैं। हम यही सोचता हूॅ हम कुछ कपबजंबज ना करू, प्रस्ताव रखूॅ स्वयं स्फूर्त विधि से स्वीकारेगें, इच्छा होने पर । हम ऐसे ही चला, चलना चाहिए हमको ऐसे, या   नहीं चलना चाहिए।

प्रष्न– हम बहुत ज्यादा भटक गए तो ध्यानाकर्षण कर दीजिए।

उत्तर– उसको हम पकड़ता भी हूॅ कि देखो अपने को विषयांतर नहीं होना, निवेदन करते हैं, इससे यदि नहीं माने तो कहा र्निबुद्वि का प्रयोग मत करो। उससे भी नहीं माने तो दुष्ट बुद्वि बंद करो । ऐसा कम रखा है, क्या करते। हमारा छूट यही है स्वयं स्फूर्त विधि से अपने जिज्ञासा के अनुसार समझे। जिज्ञासा में जितना उल्टा पुल्टा है साफ करना हमारा काम है। हर अध्यापक के पास ऐसा ही बंचंबपजल आये ये हमारा इच्छा है। लोगों में ऐसा इच्छा तो हो गई है, हो पाता है या नहीं हो पाता है भविष्य बताएगा।

प्रष्न– जीवन्त षरीर, षरीर में पॉच ज्ञानेन्द्रिया, पॉच कर्मेन्द्रिय को अध्ययन करने में आता है।

उत्तर– किसका अध्ययन है ये जीवन का अध्यययन है, षरीर का अध्ययन नहीं है। षरीर का अध्ययन इतना ही है, इसके द्वारा जीवन प्रगट होता है । उसका सिद्वान्त बताया अधिक षक्ति, कम षक्ति माध्यम से प्रगट होता है, अधिक षक्ति और बल कम षक्ति और बल में माध्यम से प्रगट होता है। चैतन्य प्रकृति को अधिक षक्ति, अधिक बल वाला माना, उसको परीक्षण करना आप ही का काम है । रासायनिक, भौतिक रचना वाला कमषक्ति वाला षरीर

के माध्यम से प्रगट होता है, षरीर रचना इस प्रकार से हुआ है, षरीर को जीवन्त बनाए रखते हुए, जीवन्त बनाए रखने से जितना भी क्रियावाही है कार्य करना षुरू कर दिए। गर्भाषय में ही षुरू होता है, क्रियावाही, बाहर आने के बाद ज्ञानवाही, गर्भ में रहते केवल एक इन्द्रिय वचमद होता है। वह श्रवणेन्द्रिय, सुनने का षक्ति बन जाता है। बाकी चारों ज्ञानेन्द्रिय बाहर आने के बाद।

प्रष्न :कर्मेन्द्रिय कहा जैसे मेरा हाथ है, पैर है, यह सारा कार्य करने के अर्थ में है।

उत्तर– जीवन्त षरीर में इसको जोड़ो, इसको कर्मेन्द्रियॉ कहा। रूचि देखना, रूप को देखना, षब्दों को सुनना, अर्थो को समझना ये सारा ज्ञानेन्द्रिय का काम है।

प्रष्न– और इसमें से अधिकांष गर्दन के ऊपर है । स्पर्ष पूरा षरीर में है, बाकी चारों इधर है।

उत्तर– जीवन षरीर को जीवन्त बनाए रखता है, फलस्वरूप संवेदनाऍ व्यक्त होते हैं मूल वस्तु इतना ही है।

प्रष्न– सबसे धीरे चलने वाला जो प्रक्रिया है अध्ययन कम में, स्वयं को षरीर मानना जो है, ये बहुत गहरा है, जैसे मैं अभी अपने आपको एक ठोस वस्तु के रूप में। जैसे एक आकार प्रकार के रूप में मैं मानता हूॅ।

उत्तर– इसको षरीर नहीं होता कहॉ षोध करते? यहॉ जा करके रखते है। मानव का संज्ञा में षोध का व्यवस्था है। उसका अर्थ यह है, सह अस्तित्व सहज प्रमाण है ये षरीर भौतिक, रासायनिक वस्तु है, जीवन चैतन्य वस्तु है, इसका सहवास सह अस्तित्व में होता है सह अस्तित्व नित्य प्रगटनषील है।

प्रष्न– जो पुंजाकार है जीवन का ये 3 कपउमदजपवद में इस षरीर के आकार में है।

उत्तर– जीवन षरीर को जीवन्त बनाए रखता है, जीवन्त बनाए रखने में इसी आकार में होना होगा, दूसरा आकार में कैसा होगा।

प्रष्न– मैं अगर जीवन स्वरूप में अपने आप को अपेनंसपेम करने का प्रयास करूं तो इसी आकार में ही रहेगा वह।

उत्तर– जीवन को मनुष्य के आकार में ही पहचाना, जीवन मनुष्य के आकार रूपी षरीर के द्वारा प्रगट होता है, इसको बनाए रखा। इसको बनाए रखना है, दूसरा विधि से पार लगना नहीं है।

प्रष्न– दूसरा विधि से आषय ?

उत्तर– माने केवल षरीर को मान लेने से पार लगता नहीं है, केवल जीवन को मान लेने से भी पर लगना नहीं है। सह अस्तित्व को ही लाना पड़ेगा। दूसरा कोई रास्ता भी नहीं है, दूसरा कोई वितउनसं भी नहीं है। मैं इसको इस जगह देख रहा था कि जीवन रूप में, जीवन स्वरूप में मेरे तो आखॅ नहीं है, ऑख जो है ये षरीर में है।

उत्तर– षरीर में नहीं है, समझने की है। माने समझने का ऑख जीवन में है, देखने का ऑख षरीर में है। देखने में ऑखों में कोई चीज पूरा नहीं आता। इसको स्पष्ट कर दिया। संसार का 700 करोड़ आदमी बल लगाऍ इसको कुछ नहीं कर पाएगें।

प्रष्न– जैसे मैं अपने आप को इस रंग का मानता हूॅ, जीवन स्वरूप में कोई रंग तो नहीं है मेरा।

उत्तर– ठीक है ना, षरीर में रंग नहीं है, रासायनिक तत्व, भौतिक तत्व में रंग है, षरीर रासायनिक भौतिक रचना है। उसके बाद रंग के बारे में जीवन में काहे को पहॅुचते हो? जीवन में खोजने का मतलब ही नहीं है।

प्रष्न– अभी उसको ऐसा माना है, उसको अलग करके देखने का जब प्रयास करता हॅू, तो ये पाता हॅू कि अभी जैसे मेरे दो हाथ है, दो पैर है और यही मैं हॅू, कर्मेन्द्रिय, ज्ञानेन्द्रिय दोनों के रूप में चित्रण करता हॅू, तो ये पाता हॅू कि अगर यह षरीर है और मैं षरीर नहीं हॅू तो यह जो ज्ञानेन्द्रिय, कर्मेन्द्रिय है।

उत्तर– ये कुछ काम नहीं करेगें। क्या चीज गायब होता है? वही अड़ा हुआ है पूरा विज्ञान, ज्ञान दोनों। दोनों यही पिस हुए, दोनों विचारधारा यही पिस हुआ। आदर्षवादी विचारों में यहॉ बहुत परिश्रम हुआ, किन्तु फल नहीं मिला। जैसा पत्थर को हथौड़े से मारे, फोड़ते रहे, सौ हथौड़े लगाय, दो सौ हथौड़े में टूटा क्या हुआ? जहॉ टुटने की जगह है उसी जगह में यह दोनों नहीं पहुॅचा। सार वाक्य इतना ही है, इसीलिए जीवन और षरीर के संबंध को पहचानना ही पड़ेगा। जीवन को पहचाना नहीं, ना षरीर को पहचाना, जीवन और षरीर का संबंध को नहीं पहचाना, तीनों को नहीं पहचाना। जीवन को समझे बिना षरीर को समझना बनता ही नहीं षरीर और जीवन को समझे बिना मानव को पहचानना बनता नही। षरीर को छोड़कर के मनुष्य को पहचाना जा सकता है, अध्ययन किया जा सकता है, नहीं किया जा सकता, षरीर के साथ ही होता है, इसका आधार है सह अस्तित्व , सहअस्तित्व नित्य प्रगटनषील है, मनुष्य का प्रगट कर दिया, उसका सम्मान करना चाहिए। उसका सम्मान कर नहीं पाए अभी, सह अस्तित्व विधि का सम्मान करना, नहीं बना है मानव को।

प्रष्न– एक बार मैं अछोटी में बैठा था, अचानक जब हाथ को देखा तो लगा कि किसी अजीब सा जानवर के हाथ को मैं देख रहा हूॅ। ये पहले ऐसे कभी लगा नहीं था, बहुत अजीब सा लगा की हाथ जैसा कुछ है, पैर जैसा कुछ है, इस क्रिया को क्या करेगें?

उत्तर– ये अनुमान है, जानवरों की षरीर रचना के बारे में हम तदाकार है। तदाकारता के बारे में क्षणिक रूप में तदाकार इसीलिए आपको भास हो गया।

प्रष्न– कल्पना में ऐसे भी आता है, अगर मैं इस क्षण षरीर से निकल जाऊं तो हाथ बोल के मेरा कुछ होगा नहीं, मैं क्रिया रूप में रहूॅगा, अभी जैसे मैं हाथ को और अपने आपको एक ठोस रूप में पहचानता हूॅ, ऐसा नहीं रहेगा वह।

उत्तर– अकेले षरीर कुछ नहीं है, मानव परंपरा में प्रमाण, इसके आधार पर अपने को सोचना है।

प्रष्न– माने जीवन ज्ञान जब होगा मुझे।

उत्तर– जीवन ज्ञान होने के बाद, षरीर का अध्ययन होने के बाद यही बनता है।

प्रष्न– तब मैं अपने आपको एक क्रिया रूप में स्वीकारूगॉ, मैं षरीर को चला रहा हूॅ ये भी स्वीकृति रहेगा उसमें।

उत्तर– जीवन अमर है, षरीर नष्वरवादी है, इसीलिए षरीर काल में षरीर के द्वारा जागृति को प्रमाणित करते हैं। जीवन जागृति को कहॉ प्रमाणित करेगा, मानव परंपरा में। कुंजी इतना ही है। जीवन और षरीर के संयुक्त रूप में है, मानव परंपरा। जीवन परंपरा नहीं है। मानव परंपरा में हम प्रमाणित होगें, हम क्या चीज हैं? जीवन उसको अध्ययन पूर्वक अपने में अध्ययन करने की आवष्यकता, उसको प्रमाणित करने की आवष्यकता।

हम कभी कभी ऐसा सोच सकते है कि जीवन काम करेगा, दूसरा तिंउम है केवल षरीर काम करेगा। तीसरा उवकमस ईष्वर सब कुछ करता है। वह रहस्य होने में उसके बारे में कोई प्रमाण हुआ नहीं।

प्रष्न– जीवन जो षरीर को जीवन्त बना कर रखता है, माने पूरे षरीर के आकार को नाक, ऑख इस सबको, हर कोषा को सप्रमाणित करके रहता है, सप्रमाणित हर कोषा है स्वयं में, सजीव बना कर रखता है, जीवन्त बना के रखने से वही पॉच संवेदनाऍ जागृति को प्रमाणित करने के लिए संवेदना के अलावा दूसरा कोई मार्ग नहीं है, मानव परंपरा में प्रमाणित होने को, इसीलिए संवेदनाओं को पहले नियंत्रित होना पहला लक्ष्य है, किसका जागृति प्रमाणित होने का। संवेदना का नसजपउंजम क्या चीज है, भय और प्रलोभन । भय और प्रलोभन को पीड़ा से, आकर्षण से। ये दोनों से यदि छुट पाते हैं तो जागृति को प्रमाणित करने योग्य हु। इसके बाद आता है हम जीवन को समझे हैं कि नहीं, स्वयं का जीवन को ही समझना पड़ता है, जीवन स्वयं का ही समझ में आता है, उसके अनुसार सब है ऐसा बनता है।

प्रष्न– जीवन स्वरूप में मेरा जो पुंजाकार है, जो षरीर को चलाता है, जीवन षरीर से निकल गया तो मेरे जैसा 6, 1/2 फुट का औरा सब मेरे जैसा ही रहता है।

उत्तर– हॉ वैसे ही रहता है। उसको लिखा है पुंजाकार, अपने में एकाकार उस आकार की एक रचना भौतिक रासायनिक वस्तु से बना रहता है। उसको चलाता है जीवन। इतना ही बात है, जीवन से षरीर बनता नहीं, षरीर से ही षरीर का रचना है, बसवंदपदह भी षरीर से ही, षरीर का रचना है, हम सब देखे हैं इसीलिए ये दावा कर सकते है। षरीर से षरीर

का उपज होता है। प्रजनन विधि से । षरीर को जीवन्त बनाए रखना जीवन का काम हैं, सप्रमाणित रहना ही है, सांस लेने छोड़ने की क्रिया से सम्पन्न रहता है, षरीर, षरीर रचना प्राणकोषा के हैं, प्राण कोषाऍ सांस लेते है। सम्मिलित प्राणकोषाओं के लिए सांस लेने वाली क्रिया भी होती है, वही फेफड़े की क्रिया। ज्ञानवाही क्रिया को प्रगट करते है। तब काम होता है जीवन का, जीवन का पदअवसअउमदज उसके लिए। ज्ञानवाही के साथ।

प्रष्न— अच्छा तो कोमा में जीवन का पदअवसअउमदज नहीं है।

उत्तर— कहॉ बनता है, इंतजार करना बनता है, अभी ठीक होगा, अभी ठीक होगा।

प्रष्न— उसमें केवल हृदय को चलाकर,`लेजमउ काम करता है।

उत्तर— चलाते नहीं है हृदय को, हृदय अपने आप चलता है, प्राण अवस्था जैसे चलता रहता है।

प्रष्न— मेरा जो पुंजाकार है ये मैं एक फूट का था, आज 6 फूट का हो गया ।

उत्तर— कितने भी हो, जीवन उतने आकार में जीवन्त बनाए रखता है।

प्रष्न— षरीर के साथ जैसे कपतमबजपवद के बारे में मैं मानता हूॅ कि ये मेरा सामने वाला भाग है, ये मेरा पीछे वाला भाग है।

उत्तर— ज्ञानवाही तंत्र से होता है।

प्रष्न— जीवन स्वरूप में कोई आगे पीछे तो है नहीं मेरा।

उत्तर— जीवन में भी जैसे ही रहता है, आगे पीछे ही रहता है, तदाकार रहता है षरीर से, तभी ना इसको चलाता है, तदाकार नहीं होता कैसे चलाता। जीवन पुंज में इस प्रकार की व्यवस्था है, जैसा आकार बढ़ता है वैसे स्वयं भी बढ़ने की व्यवस्था है, जीवन सहमत हुए बिना षरीर बढ़ता ही नहीं था षरीर बढ़ने के साथ जीवन सहमत होता है।

प्रष्न– जीवन स्वरूप में ये सामने पीछे वाला जो भाग है, षरीर छोड़ने के पष्चात भी वैसे ही बना रहता है।

उत्तरः वैसे ही रहता है।

प्रष्न– पर तब जो है, जैसे मैं अभी ऑखों से देख रहा हूॅ, वैसे देखना नहीं बनता।

उत्तर– ज्ञान गोचर, दृष्टि गोचर दो होता है, ज्ञान गोचर विधि से सब समझ में आता है।

प्रष्न– रंग भी।

उत्तर– हॉ, जीवन भी समझ में आता है, जीवन का क्रिया भी समझ में आता है, प्रयोजन भी समझ में आता है, ऑखों से कौन देखता है, ऑख देखता है कि जीवन समझता है, जीवन नहीं रहेगा तो कुछ नहीं देखेगा, ऑख ऐसे ही बना रहेगा। मुख्य बात कहीं ना कहीं यही उपेपदह है।

प्रष्न– बाबा कुल मिलकार ेपिजि तो इतना ही होता है।

उत्तर– षरीर मानने के जगह, जीवन स्वरूप है, षरीर के द्वारा अपने को प्रमाणित करता है, इतने चीज को सुदृढ़ बनाना, ये हुए बिना कुछ नहीं होगा।

प्रष्न– मेरे मानने की दृष्टि से और सामान्य स्वीकृति के दृष्टि से तो है।

उत्तर– समान्य स्वीकृति यही है षरीर को जीवन मानना, षरीर को जीवन मानने के बाद सामान्य ज्ञान होता है, जीव षरीर नहीं होता । सामान्य ज्ञान क्या? जीव ज्ञान होता है। जीव षरीर के अनुसार जीता है। सारे जीव वंष के अनुसार जी रहे हैं कि नहीं।

प्रष्न– ये मैं अभी जो प्रक्रिया कर रहा हूॅ आप के साथ .....।

उत्तर– ये समझने के अर्थ में, समझने वाला जीवन। षरीर में समझने वाला कुछ नहीं। षरीर, जीवन को समझने के लिए एक माध्यम ।

प्रष्न– तो इतने को चित्रण करके मैं बात कर रहा हूॅ। अब लगता है कि यह जो चित्रण किया मैंने मैं इसको भूल नहीं सकता अभी, ।

उत्तर– वह आप की उपकार की चीज हो गई, इसी के आधार पर आगे की कड़ी विधि जुड़ेगे। आगे की कड़ी क्या चीज है? समझदारी, समझदारी जुड़ना है तो कैसे व्यक्त करना है षरीर के द्वारा चिंतन से तय होता है। तय होने के बाद प्रमाणित हो जाता है।

प्रष्न– बाबा जो रंग वाली बात थी ......।

उत्तर– रंग वाला बात अध्ययन की वस्तु है। रंग क्या चीज है। रासायनिक वस्तुओं का संयोग = रंग।

प्रष्न– जीवन को भी रंग समझ में आता है क्या?

उत्तर– जीवन को ही समझ आएगा।

प्रष्न– षरीर के ऑखों के उपयोग से जीवन को रंग समझ में आएगा।

उत्तर– जीवन ज्ञानार्जन करने के लिए, समझदारी को विकसित करने के लिए षरीर माध्यम है, प्रमाणित करने के लिए भी माध्यम है, इसको तय करना है। षरीर के माध्यम से ही जीवन अपने जागृति को प्रमाणित करता है। उपार्जन करता है जागृति को और प्रमाणित करता है। अध्ययन विधि से उपार्जन करता है। प्रमाणित करके प्रसन्न होता है जीवन। प्रसन्न होना जीवन में ही है, षरीर में नही।

प्रष्न– मैं अगर षरीर नहीं हूॅ तो, मैं जो भोजन खा रहा हूॅ, ये षरीर में जो रहा है, उसका जो संवेदना गले तक मिलता है, उसके बाद पता नहीं चलता है, क्या होता है?

उत्तर– षरीर पुष्टि होता है, खाने से।

प्रष्न– अभी तो मैं मान रहा हूॅ कि मैं खा रहा हूॅ।

उत्तर– खाएगें क्यों? षरीर के आवष्यकता के लिए ना। भूख को षांत करने के लिए। आवष्यकता हो गया ना भूख से। षरीर के आवष्यकता अनुसार खाते है, सदाश्सदा खाते रहो ऐसा होता नहीं। सदाश्सदा चलते रहो ये भी होता नहीं। षरीर का अपना एक निष्चित अवधि है, वहॉ तक सब करते है, अवधि से दूर, अवधि से अत्यधिक वेग से जीवन काम करता है। षरीर जो है थक जाता है जीवन के गति से षरीर चल नहीं पाता है।

प्रष्न– ध्वनि को मैं कान से, भौतिक रासायनिक क्रिया ......।

उत्तर– सुनने वाला कौन है, जीवन है। अषरीर अवस्था में भी जीवन को ध्वनि समझ में आता है। केवल जीवन को ही ध्वनि समझ में आता है।

प्रष्न– जैसे षरीर को अगर एक साधन के रूप में देखता हूॅ तो साधन से ही मुझे दिखता है, जैसे मैं चष्मा लगाता हूॅ, साधन निकाल दिया तो कम दिखता है। वैसे ध्वनि जो है।

उत्तर– जैसे हमको अभी कम सुनाई देता है, ध्वनि का वैभव को मैं भूल सकता हूॅ, ऐसा हो नहीं सकता। ध्वनि से ही हम समझते हैं, षब्द से ही हम समझते हैं।

प्रष्न– इस कमरे में अभी अगर कोई अषरीर जीवन है, इस ध्वनि को वह सुन पाएगा।

उत्तर– बिल्कुल सुन पाएगा। जीवन जो है ना, हमारा षब्द को सुनता है, हमारा दृष्य को देखता है, प्रगट नहीं होता है। प्रगट हाने के लिए षरीर चाहिए।

प्रष्न– ये दृष्य को देखने की जो क्रिया है, मन से है जीवन में।

उत्तर– तभी तो एक जीवन दूसरे जीवन के साथ जुड़कर परेषान नहीं करता हैं। देखता नहीं तो कैसे करेगा।

प्रष्न– नहीं देखेगें तो षरीर कैसे पहचानेगें, गर्भावस्था में षरीर है अगर जीवन देखेगा नहीं तो कैसे पहचानेगा। अगर जीवन रूप को नहीं देखता है तो गर्भावस्था में षरीर को कैसे पहचानेगा।

अभी हम षरीर के साथ जो चलते हैं, और हाथ, पैर हिलाना जो है, ये मन की क्रिया हैं

उत्तर– मन के साथ ही होता है, मुद्रा भी, भंगिमा भी, अंगहार भी, षब्द विहिन, अंग प्रत्यंग से बातचीत भी मन से ही होता है।

प्रष्न– तो जो चलने की क्रिया है इसको आस्वादन नहीं कहेगें। मन के साथ गति है ये।

उत्तर– मन के साथ गति । मन के साथ रस, मन के साथ रूचि, मन के साथ ध्वनि ये सब मन की क्रिया है।

प्रष्न– आप से ये बात हुई की मैं षरीर नहीं हूॅ ....।

उत्तर– उससे कुछ नहीं निकलता, समझना जीवन षरीर के अलावा होता नहीं समझने के बाद जीवन अकेले भी रह सकता है, बहुत समय तक। प्रयोजन अपने को व्यक्त करना है, मानव परंपरा में ही व्यक्त होगा।

प्रष्न– अभी मैं जब अपने आप को षरीर मान के जी रहा हूॅ, तो ऐसे बात हुई आप से कि ये मेरा आगे का हिस्सा है ऐसा लगता है, पीछे का है .....।

उत्तर– जीवन में भी ऐसे ही हैं

प्रष्न– जैसे मैं चलता हूॅ या बात करता हूॅ तो मैं ज्यादातर केन्द्रित यहॉ मस्तिष्क के आजूश्बाजू हूॅ, पर जीवन स्वरूप में ऐसा तो है नहीं, जीवन में मस्तिष्क बोल के तो कुछ है नहीं।

उत्तर– समझने का ताकत, प्रक्रिया पूरा का पूरा जीवन में है, जीवन षरीर को जीवन्त बनाने के लिए अपना स्वरूप को बनाता है, फलस्वरूप षरीर को छोड़कर भी उसी आकार में रहता है।

प्रष्न– पर उस समय ऑख, नाक, मुहॅ ये सब रहता नहीं।

उत्तर– वह सब रहता ही है, ऑख, नाक जीवन में नहीं होगा तो षरीर में कहॉ से आएगा, षरीर में आने का पूर्वरूप कहॉ है, जीवन ही षरीर के आकार में होता हैं, ये पूरा आकार जीवन स्वरूप में होता है तभी ये रचना बनता है।

प्रष्न– मेरा वास्तविक स्वरूप ऐसा है, और इसी रूप में मेरा जीवन भी बना है। षरीर भौतिक रासायनिक वस्तु है और जीवन चैतन्य वस्तु है। चैतन्य वस्तु अमर है। षरीर मरणधर्मा हैं। इसको अपने को स्वीकारना है, मरणधर्मा वस्तु थोड़े समय के लिए जीवन सदाश्सदा के लिए। सहअस्तित्व विधि से प्रमाणित होना है, षरीर चाहिए, समझना है षरीर चाहिए, करना है तभी भी षरीर चाहिए। फिर क्या बचता है । अपन कितना भी तर्क लगाए बात इतना ही होता है।

प्रष्न– अभी मैं पैर से चलता हूॅ, जीवन स्वरूप में पैर तो होता नहीं।

उत्तर– तैरता है, लगता है अपने को चलता हुआ पर तैरता रहता हैं। भार नहीं रहता है।

प्रष्न– जीवन स्वरूप में अगर मैं चलना षुरू किया तो जमीन से कुछ चतमेनतम जैसा लगेगा नहीं।

उत्तर– भार ही नहीं है।

प्रष्न– ये जो तैरता है ये मन की गति से होता है।

उत्तर– मन की गति से ही तो पैर चलता है। मन नहीं है तो पैर कहॉ चलता है। षून्याकर्षण में रहता है । गति तो वही है, मनोगति , मनोगति से ही जीवन चलता है। षरीर को भी मनोगति से ही चलाता है।

प्रष्न– अभी जैसे चलाने का मेरे एक गति है,`चममक है, जीवन स्वरूप में जब तैरते हैं तभी कोई`चममक होता है या उसमें कोई समय नहीं है।

उत्तर–`चममक मन की गति से चलता है, जैसा इच्छा है वैसे, इच्छा से ही बवदजतवसस रहता है। हवा जैसा भी चल सकता है, इस ग्रह से दूसरे ग्रह में भी जा सकता है।

प्रष्न– ये जो गति है जीवन स्वरूप में ये क्या जीवन के विकास के अनुसार है या ....।

उत्तर– विकास के अनुसार, विकास क्या है? जीव चेतना में ज्यादा से ज्यादा धरती के आसपास ही गति, मानव चेतना में अनेक धरती के साथ, दिव्य चेतना में पूरे अस्तित्व में जितने चसंदमज है, सबके साथ गति। सबके साथ गति होने के लिए कितने गति होना चाहिए, कल्पनातीत । षरीर के चलने की विधि से उसमें कल्पना नहीं किया जा सकता।

प्रष्न– जीवन जो पुंजाकार बनाना है, मैं जो पुंजाकार बनाउंगा, षरीर छोड़ने के पष्चात कपड़े के साथ रहता है।

उत्तर– कपड़े के साथ मनाकर तादाम्य के रूप के रूप में रहता है। कपड़ा जैसा लगता है कपड़ा रहता नहीं।

प्रष्न– अगर वह तादत्म्यता नहीं है तो वह कपड़े वाला नहीं रहता है। जैसे में चष्मा पहनने का आदी हॅू तो चष्मा रहेगा।

उत्तर– चष्मा के साथ तदाकार रहता है।

प्रष्न– जैसे मैं अलग अलग षरीर चलाता हॅू तो अलग षरीर के आकार का बनता रहता है।

उत्तर– लम्बा, चौड़ा, छोटा सब छोटे अवस्था में मरे रहते हैं, छोटे कद के ही दिखते हैं, बड़े होने के बाद मरे रहते हैं, बड़े कद का ही दिखता है, जीवन तदाकार विधि से । षरीर के साथ तदाकार रहता है, तदाकार तद्रुप, भक्ति भी उसी आधार पर तदाकार, तद्रुप और ज्ञान भी तदाकार, तद्रुप।

प्रष्न– अभी जो मेरा सारा पकमदजपजल है षरीर की है, मैं ऐसे दिखता हॅू, ऐसा बोलता हॅू।

उत्तर– जीवन बोलता है माना ही नहीं गया और आदर्षवादियों ने षरीर नहीं बोलता है, आत्मा बोलता है। आत्मा क्या है? तो तुम समझते नहीं हो वहॉ।

प्रष्न– अभी भी आप जो बोल रहे हैं, जीवन स्वरूप में हैं, आप और इस षरीर से व्यक्त हो रहे हैं, बाबा इसमें मानव स्वरूप में जो होता है, जैसा मैं, अभी आपके सामने बात कर रहा हॅू, ऑखों में देखने से ही लगता है कि हम उस व्यक्ति के तरफ बात कर रहे हैं।

उत्तर– वैसे भी जीवन में है, सम्मुख, असम्मुख, विमूख वाला बात। जीवन में ही है।, उसी के आधार पर षरीर बना है। इसी का नाम जीवन ज्ञान। ये सह अस्तित्व में ही होता हैं। सहअस्तित्व दर्षन ज्ञान के बाद जीवन ज्ञान, जीवन ज्ञान के बाद मानवीयता पूर्ण आचरण ज्ञान। उसके बाद सर्वेक्षण से पता लगता है जीवन चेतना, मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना।

प्रष्न– अभी के अवस्था में षरीर से भिन्न अपने अस्तित्व को कल्पना नहीं कर पाते, जैसे मै। देखता हूॅ कि बाह्य संसार के लिए मेरे जो खिड़की है वह ऑखों से ही खुलती है।

उत्तर– देखिए, समझाने की विधि ये है, मानव जीता है, मरता है, सम्पूर्ण जीव मरता है, जीता है जीने की षुरूआत प्रजनन विधि से होता है। ये पता लगने के बाद पता लगता है केवल भौतिक रासायनिक वस्तु है प्रजनन क्रिया। केवल भौतिक रासायनिक वस्तु है षरीर क्रिया। इतना पता लगा की नहीं, आज यहॉ तक आ गए या नहीं। इसके आधार पर मन जो है, रासायनिक भौतिक वस्तु नहीं हैं, मन के बिना ये चलता नहीं है। चलके कोई प्रमाणित करेगा नहीं। माने चलाने वाला भौतिक रासायनिक वस्तु नहीं है ये प्रमाणित होता है। षरीर कैसा होगा? इसके लिए भौगोलिक परिस्थिति एक है, मानसिकता दूसरा है । हर षरीर यात्रा के अंत में जब षरीर छोड़ते है, तो षरीर जैसा या उससे स्वरूप या कुरूप को स्वीकारता है आगे चलाने के लिए सुख या दुःख को स्वीकारता है। सुखी रहा, दुःखी रहा षरीर यात्रा में सुखी रहता है तो सुख पूर्वक षरीर छोड़ता है, दुःखी रहता है तो दुःख पूर्वक षरीर छोड़ता है। षरीर छोड़ने के बाद, जैसे षरीर छोड़ते समय स्थिति रहती है वैसे ही दूसरा षरीर ग्रहण करने तक रहता है। षरीर ग्रह करते समय में सारे दुःखी को भुल कर के सुखी होने के लिए षरीर चलाता है, वह परंपरा में रहता नहीं है।

प्रष्न : जैसे मान लीजिए मैं षरीर छोड़ते समय इस आकर को स्वीकार लेता हूॅ, तो इसी पुंजाकार में बना रहूॅगा।

उत्तर– पर अगले षरीर यात्रा जब षुरू करेगें तो गर्भावस्था में तो इतना छोटा हो जाएगा षरीर । अभी जैसा मैं 6 फुट का हूॅ।

उत्तर– उसमें तदाकार, तद्रुप होता है, बताया ना भई।

प्रष्न– और वह जो गर्भावस्था का षरीर है वह तो बीज विधि से बनेगा ।

उत्तर– वह रासायनिक, भौतिक वस्तु है, पहले बात हो गया। जीवन षरीर के साथ तदाकार तद्रुप विधि से षरीर को चलाता है, जैसे जैसे बड़ा होता है, वैसे ही तदाकार तद्रुप रहता है। मुख्य बात यह है, मन जो है ना रासायनिक भौतिक वस्तु नहीं है यहॉ तक अपने भौतिक अध्ययन विधि से पहॅुचते हैं, है क्या ये? इसके लिए ये चतवचवेंस है।

प्रष्न– माने आज तक मेरा अलग अलग पुंजाकार बना है, मैं अलग अलग षरीर चलाया हूॅ तो।

उत्तर– बता तो दिया, गर्भावस्था में भी षरीर से तदाकार, तद्रुप 20 साल में भी तदाकार, तद्रुप। अभी हम देखते है या नहीं। जीवन को लम्बा होना, छोटा होना कोई मायने नहीं रखता। उसको समझना, ना समझना, जागृत रहना, नहीं जागृत रहना, इतना ही मतलब है । चार ही बात है, समझने की बात क्या है, पूरा का पूरा स्वयं को समझना। जीवन ही है, जो स्वयं को समझ सकता है, जीवन ही जीवन को समझ सकता है, ये किसी ने नहीं बताया।

प्रष्न– जो जीवन जीव षरीर को चलाता है, वही आगे जा कर मानव षरीर को चलाता है।

उत्तर– जीवन मानव षरीर को भी चलाता है, जीव षरीर को भी चलाता है, जिस में तदाकार होगा, उसी षरीर को चलाएंगा।

प्रष्न– स्वप्न, सुषुप्त और जागृत । तीन अवस्थाओं को थोड़ा समझाइयें।

उत्तर– स्वप्न उस अवस्था है, जो आषा, विचार, इच्छा प्रमाणित नहीं हुआ, या स्पष्ट नहीं है ये सब का सब स्वप्न हैं।

प्रष्न– इसमें समय का कोई ध्यान नहीं रहता।

उत्तर– इसीलिए उसको सत्य नहीं माना।

प्रष्न– स्वप्न में षरीर के साथ जीवन का, माने संवेदनाऍ बहुत कम रहता हैं।

उत्तर–षरीर संवेदनाएँ अपने जगह रहता है, षरीर संवेदनाएँ जैसा हमको दिखता है, षरीर संवेदना षरीर के साथ रहता है, हमको षरीर संवेदना जैसा दिखता है।

प्रष्न : जैसे अभी जागृत अवस्था में लोप, आकृति दिखता है, क्या स्वप्न में भी वैसा ही दिखता है?

उत्तर– वैसे ही दिखता है, रहता कुछ नहीं है, दिखता सब कुछ है। इसी का नाम है स्वप्न। इससे क्या पता चला? इससे ये पता चला दिखता है, वह पूरा सच नहीं है, उसके समर्थन में ये बात जता है। पूरा सच्चाई ऑखो में आता नही। सच्चाई को देखना ज्ञान गोचर, दृष्टि गोचर दोनों को लगाना पड़ता है। ये दोनों विधि से हर वस्तु को देखना पड़ता है, तभी पूरा दिखता है।

प्रष्न– सुषुप्ति में स्वप्न भी नहीं दिखता है, उसमें क्या होता है।

उत्तर– सुषुप्ति में भुल जाते हैं, समाधी में भी कुछ नहीं दिखता है।

प्रष्न– सुषुप्ति में मन, वृत्ति, चित्त तो क्रियाषील है ही पर उसमें जो कल्पना बना रहा है . ....।

उत्तर– वह व्यक्त नहीं होता है।

प्रष्न– माने क्या उसका द्रष्टा में नहीं हूँ, जैसे मैं सोने को गया, कुछ समय में स्वप्न देख रहा हूँ।

उत्तर– मन, वृत्ति , चित्त का क्रिया कलाप रहता ही है, वह प्रगट होने का कार्यक्रम नहीं रहता , उसी का नाम है निद्रा। स्पप्न को निद्रा नहीं कहते है, सुषुप्ति का नाम है निद्रा ।

प्रष्न– जब मैं स्वप्न देख रहा हूँ तब निद्रा नहीं है।

उत्तर–निद्रा और जागृत के बीच वाला स्थिति।

प्रष्न– सुषुप्ति का कुछ पता क्यों नहीं चलता?

उत्तर– समय का बाधा नहीं है सुषुप्ती में।

प्रष्न– जीवन कियाओं की क्या स्थिति होती है। सुषुप्ति में।

उत्तर– जीवन किया करता ही रहता है अपना, जीवन किया। षरीर किया दोनों रूकता नहीं है। तभी आदमी जगता है। जीवन किया रूक जाएगा तो जगेगा कैसे।

प्रष्न– स्वप्न और सुषुप्ति में जीवन किया में क्या अंतर हो जाता है ये स्पष्ट नहीं हो रहा है।

उत्तर– जितने भी भ्रम है, रोग है उसका द्योतक है स्वप्न, रोग से भी स्वप्न ज्यादा होते है, और भ्रम से भी होते हैं, समझ में आया की नहीं, समझा पाये की नहीं दो भाग है, पहले समझना चाहिए, उसके बाद समझाना चाहिए। समझाने के लिए हम कितना भी बात करें, बात ही हो जाता है। समझने के लिए करते है, उससे कम बात होता है। पहले समझा जाए, बाद में समझाया जाए। अभी दोनों साथश्साथ चल रहा है। इसीलिए ये चवपदज उठता है। आदर्षवाद, भौतिक वाद दोनों में यही है, समझाने के लिए सब कुछ है, समझने के लिए कुछ नहीं। वहॉ कुछ कल्पना दिए हैं, यहॉ कल्पना ही नहीं है, कल्पना को असत्य माना, भौतिक वाद ने। आदर्षवाद, प्रत्यक्ष, अनुमान, आगम कल्पना को अनुमान, आगम को सत्य माना है। आगम माने सृष्टि विधि, निगम जो है मुक्ति विधि। सृष्टि विधि को आगम कहा है, सृष्टि समर्थ होने की विधि को निगम कहा है। मन, भौतिक रासायनिक नहीं है तो क्या है? गठनपूर्ण परमाणु है। इसको सुनने में तो कोई तकलीफ नहीं, तर्क विधि से भी ठीक हो गई अब स्वीकारने की बात। स्वीकारने के लिए पहला जुगाड़ यही है, आषा विचिार, इच्छा कहॉ प्रगट करते है, हर व्यक्ति अभी पैदा हुआ बच्चा भी अपना आषा, विचार, इच्छा को प्रगट करता है, हम भी प्रगट करते है, इसको प्रगट करते समय रासायनिक भौतिक वस्तु जैसा लगता नहीं है, यही है जीवन वस्तु । इसको स्वीकारना पड़ता है। दूसरा सिद्वान्त यही है कि हम आषा, विचार,इच्छा पूर्वक ही सभी काम करते है। इसको भी स्वीाकरना पड़ता है, इसीलिए जीवन को समझना पड़ता है। जीवन में 2 बवउचवदमदज और जोड़ दिया, संकल्प और प्रमाण, संकल्प और प्रमाण क्या है? इसके लिए विषुद्व चर्चा किए हैं, अध्ययन की बात किए है। इसके लिए कहा हर षब्द का अर्थ होता है, अर्थ के स्वरूप में अस्तित्व में वस्तु होता है। वस्तु को समझना अध्ययन का काम हैं। उसमें कल्पनाषीलता, तदाकार होता है,

तद्रुप होता है, फलस्वरूप प्रमाण हो कर वापस होता है। इसको भी समझना है, बाकी तो कर ही रहे हैं। ये अपने में स्वीाकरना है, अपने में देखना है, सर्वेक्षण करना है, प्रमाणित करना है और उसको समझने योग्य बनाना है। आषा, विचार, इच्छा तो हर व्यक्ति प्रयोग कर ही रहा है। प्रगट होने में संकल्प और प्रमाण, दो चीज प्रगट होना, वह नहीं होने से मनुष्य अधुरा है। जीवन गठन पूर्ण परमाणु होना हम देखा है, समझा है, जी के देखा है, प्रमाणित किया हैं, प्रमाणित करने का मतलब जीने के रूप में, समझााने के रूप में प्रमाणित करने की कोषिष करे हैं। अब आप लोगों को ये विचार करना है, ये समझने योग्य है कि नहीं, प्रमाणित करने की योग्य है कि नहीं, जरूरत है कि नहीं। जरूरत होगा तो करेगें, नहीं होगा तो नहीं करेगें। ऐसा हमारा स्वीकृति। जीव चेतना में जीने से अपराध के अलावा और कुछ नहीं हो सकता, अपराध के परिणाम से मानव जाति धरती पर रहने योग्य नहीं हुए, अपराध विधि से धरती आदमी को नकारने की जगह आ रहा है, अभी भी समझोगे नहीं तो क्या होगा, ये दबाव देने की बात हुई, पहले वाला बवदअमदबम करने की बात हुई।

प्रष्न— आप ने यह कहा कि मैं जो पूछ रहा हूॅ इसमें समझने वाला पक्ष है और मैं कैसे समझाऊॅ ये पक्ष भी हैं।

उत्तर— मैं ऐसा समझा, ऐसा है कि नहीं आप ही बताओगें , उसके लिए हम याद दिलाना चाहे । समझने के बाद समझाना बनता ही है।

प्रष्न— बाबा जीवन को मैं समझा तो नहीं हूॅ।

उत्तर— समझना पड़ेगा, जीवन क्रिया को समझना, जीवन क्रिया को आधार पर जीवन को स्वीकारना, उसके बाद अनुभव करने के लिए, प्रमाणित करने के लिए प्रयत्न करना, अनुभव होता जाता है, प्रमाणित होता जाता है, ऐसे बात बनता है। जीने में और समझाने में, जीने में तो कोई तकलीफ है नहीं, समझाने में जो तकलीफ है वह दूर हो जाता है, जैसेश्जैसे हम अनुभव करते हैं। समझ लेते हैं, जितना स्वीकार करते हैं, वर्णन करते हैं, आगे की बात अपने आप दरवाजा खुलता जाता है।

प्रष्न— स्वीकारने का आषय अवधारणा से है, बोध से।

उत्तर– बोध होता है तो जीवन में संकल्प होता है, संकल्प के अनुसार हम प्रगट होने लगते है, अपने आप में अनुभव प्रमाण होता ही है।

प्रष्न– आपने यह जो कहा की अनुभव होता जाता है, इसका मतलब है, अनुभव एक बिन्दु आता है।

उत्तर– बोध होने के बाद अनुभव बिन्दु में ही जाता है। ये अनुभव बिन्दु में पारगामीयता वाली बात छूटी रहती है। सबका प्रमाण हो जाता है। पारदर्षीयता हम पहले से ही स्वीकारे रहते हें, पारगामीयता अनुभव से आता है।

प्रष्नः ये अस्तित्व धर्म जो है, अनुभव में आता है, माने उसके साथ अस्तित्व धर्म समाया हैं।

उत्तर– अस्तित्व धर्म से लेकर सुख धर्म तक, सभी समझ में आता हैं, कुंजी वही है, अनुभव । सुखी रहना, सुखी करना, दोनों बन जाता है, सुखी रहने का प्रमाण, सुखी करना। इसीलिए जीने देना, जीना बनता है, इसी अर्थ में कहा।

प्रष्न :ये स्वप्न और सुषुप्ती की बात हो रही थी।

उत्तर– निद्रा के पहले, जागृति के बाद बीच के अवस्था को स्वप्न मान गया। सुषुप्ति में कोई स्वप्न होता नहीं, सुषुप्ती में षरीर को भी भुलता है, समय को भी भुलता है, समय का दबाव से मुक्त होता है, निद्रा में।

प्रष्न– जीवन ज्ञानवाही तंत्र को चलाता रहता है, सुषुप्ती में भी ।

उत्तर– जागृति के बाद, अनुभव के बाद सुषुप्ति में भी हम जीवन क्रिया को स्वीकारे रहते हैं, यही विषेषता बनता है। अनुभव को पूरा हम अनुभव कर लिया, संतुष्ट हो गये। दूसरो को संतुष्टि दे पाए, चिंतन होता ही रहता है, चिंतन हमारा रूकता ही नहीं, स्वप्न नाम का कोई चीज होता नहीं।

प्रष्न– आप को स्वप्न बोल के कुछ होता ही नहीं, आप या तो निद्रा में हैं, या ऐसे ही जाग रहे हैं।

उत्तर– केवल जीवन के रूप में हम जी रहे हैं , नहीं तो षरीर के साथ जी रहा हॅू, षरीर के साथ जीता हॅू, संसार के उपयोगिता के साथ जीता हॅू, निद्रा में जीता हॅू, संसार के उपयोगिता से मुक्त रहता हॅू।

प्रष्न– चिंतन क्या करते है, आप उस अवस्था में।

उत्तर– संसार का उपकार कैसे किया जाए, ये चिंतन है और कौन सा चिंतन है, अभी हम वर्ष भर लिखता हॅू, क्या लिखता हॅू, वही लिखता हॅू।

प्रष्न– अभी मैं जब सुषुप्त अवस्था में होता हॅू तो , ये षरीर के साथ जो जीवन का बवददमबजपवद है ये कम कैसे हो जाता है।

उत्तर :तदाकार तद्रुप विधि से जीवन का षरीर का संबंध होता हैं। सुषुप्त अवस्था में जीवन द्रष्टा बना रहता है, षरीर का।

प्रष्न– भ्रमित अवस्था में भी, जीव चेतना में भी।

उत्तर– हॉ, भ्रमित अवस्था में हम षरीर को जीवन मान के उसको भूल जाते हैं।

प्रष्न– क्योंकि स्वयं का अस्तित्व को स्वीकारा नहीं है इसीलिए षरीर का द्रष्टा बने रहना स्वीकारते ही नहीं।

दो षरीर यात्रा का बीच का जो अवधि है, उसमें भी ऐसे ही अवस्था रहता है।

उत्तर– हॉ वही है, जैसा सुषुप्ति में रहता है।

प्रष्न– इसीलिए मुझे और कोई षरीर यात्रा का स्मरण नहीं।

उत्तर– मतलब ही नहीं है अभी प्रयोजनषीलता से मतलब है, षरीर यात्रा सफल होने से मतलब है, इतना ही सोचा जा सकता है। कर्तव्य भी ऐसे ही बनता है, दायित्व भी ऐसे ही बनता है, व्यवहार भी ऐसे ही बनता है, व्यवस्था भी ऐसे भी बनता है। वह सब पूर्व जन्म, पर जन्म बता करके पैसा कमाने की विधि, उसके अलावा कुछ भी नही। प्रमाण तो कुछ होता

नही। तब जागृत नहीं हुए इस षरीर यात्रा में जागृत होने के अवसर है, इतना ही बात है। इसे हम सत्यापित किया है।

इच्छा हो तो इस षरीर यात्रा में जागृत हुआ जाए। किस को क्या तकलीफ है? तकलीफ विधि को हम अपनाया भी नहीं।

प्रष्न– ये जो आप किसको क्या तकलीफ पूछते हैं, इसका तो कोई उत्तर होता नहीं, वह केवल।

उत्तर– पूछते हैं, इसीलिए जैसा हम स्वीकार वैसा है कि नहीं।

प्रष्न– आप ने कहा सुषुप्त अवस्था में जीवन षरीर का द्रृष्टा बना रहता है, स्वप्न के अवस्था में क्या होता हैं?

उत्तर– जीवन षरीर का हिस्सा बना रहता है उसको प्रगट नहीं कर पाने की स्थिति में रहता है, तभी तो स्वप्न कहा जाता है। सुषुप्ति में भी षरीर को चलाने वाला बना ही रहता हैं किन्तु षरीर के ज्ञानवाही तंत्र को संचालित नहीं करता । किया वाही तंत्र बना रहता है।

प्रष्न– क्रियावाही तंत्र को जीवन बनाए रखना हैं।

उत्तर– नहीं, जीवन जीवन्त बनाए रखता है, इतना संबंध बना रहता है। जीवन का प्रभाव बना रहता है, वह क्रियावाही तंत्र में प्रभावित रहता है, और ज्ञानवाही तंत्र से निष्प्रभावित रहता है। इसी का नाम है निद्रा।

प्रष्न– हृदय का धड़कना जीवन के वजह से है या षरीर स्वयं बनाता है?

उत्तर– हृदय धड़कना षरीर का स्वभाव है। उसको बनाए रखता है। जीवन को बनाए रखने की प्रक्रिया उस विधि से है, जैसा मिट्टी से दीवार बनाना, बनाए रखना हमारा काम है।

प्रष्न– आप ने एक बार कहा था की कोमा में ....।

उत्तर– निद्रा में जो रहता है स्थिति वही कोमा में है, कोमा में जीवन का षरीर के साथ संबंध रहता है, जीवन्त बनाए रखने के अर्थ में। जीवन्त बनाए रखने का स्थिति समाप्त होने, बाद मर गया बोल कर घोषित करते हैं।

प्रष्न– मैं रोज 7 घंटा ऐसा करता हूॅ और मुझे पता ही नहीं।

उत्तर– ठीक है ना, नहीं तो इतने अच्छे ढ़ंग से दिल धड़कना, सांस लेना पूरा उतना काम करना, उतना ऊर्जा को उपयोग करना कैसे बनता, जीवन जितना ऊर्जा षरीर को देता है उसको उपयोग करता है। अभी षरीर के लिए जितना हम देते हैं, उससे 20 गुना से ज्यादा ऊर्जा वह खर्च करता है। बच्चे भी करते हैं, हम भी करते हैं।

प्रष्न– आप ये कह रहे हैं कि यह जो ऊर्जा है यह जीवन से षरीर को मिलता है।

उत्तर– जीवन जितना ऊर्जा षरीर को देता है वह सारा मगबमे है। विचार के बिना कोई काम होता नहीं।

प्रष्न– ये जो माथा भारी हो जाता है ये सब ....।

उत्तर– ये सब रोग से।

प्रष्न– कभीश्कभी लगता है सर पूरा भारी हो गया, इसके बाद मैं सोच नहीं सकता।

उत्तर– हम हमारा इच्छा अनुसार सुनते हैं, हमारा कमेपहद खराब होने से हमारा माथा भारी होता है । सही बात तो इतना ही है।

प्रष्न– ये मैंने देखा है, करते है, माने मैं आप के उत्तर को मेरे तिंउम में बैठाने का प्रयास करता हूॅ वह बैठता नहीं तो मुझे लगता है कि आप और कहीं जा रहे है और आप मुझे आपके तिंउम में बैठाने का प्रयास करते है इसमें माथा भारी हो जाता है।

उत्तर– होता ही है, बवदअमतेंजपवद वही है। हम अपने बात को आप तक पहॅुचाना चाहते हैं, आप अपने बात को हम तक पहॅुचाना चाहते हैं। ये दोनों में सामरस्यता आने के बाद साथ में चलते हैं, सामरस्यता नहीं आने पर साथ में चल नहीं पाते।

प्रष्न– पर बाबा अध्ययन में तो बवदअमतेंजपवद नहीं है, आप के बात को मुझे सीधेश्सीधे मानना है, मैं आपने बात आप को बताता जाऊॅ। ये अध्ययन के लिए कुछ उपयोगी तो नहीं, मैं नहीं जानता हॅू इसीलिए यहा हॅू।

उत्तर– अध्ययन के लिए प्रस्तुत है, उसमें कितना षंका होता है उसको प्रस्तुत करते रहो, बोलने योग्य नहीं है समझ के नहीं बोलने से भारी होता है, बोल दिया तो कोई भारी नहीं।

प्रष्न– बोलने योग्य नहीं है मतलब?

उत्तर– षंका है लेकिन जब बोल नहीं पाते हैं।

प्रष्न– माने आज सुबह से जीवन षरीर को ले के जो भी सत्र हुआ इसमें आप कह रहे है कि बोल नहीं पा रहा या उसको षंका के रूप में बना है वह।

उत्तर– वही भारी पन है, बोल दिया तो संवाद है, समझ गया तो प्रमाण है। एकश्दूसरे को समझ गया तो प्रमाण हो गया, मान लिया तो उसका नाम हो गया तो संवाद।

प्रष्न– एक बच्चा जब षरीर को चलाना षुरू करता है, फिर एक समय आता है जब वह चलना सिख जाता है, षरीर को इंसंदबम बना के रख पाना कौन सा किया है?

उत्तर– षरीर रचना वंष के अनुसार तैयार होता है, मानव जाति का वंष एक ही है। वंष का मतलब षरीर में जो नियोजित है द्रव्य है एक है। अलगश्अलग नहीं है। जैसे कुत्ते के षरीर में जो द्रव्य नियोजित है बाघ के षरीर से भिन्न, बाघ का षरीर में जो नियोजित है, हाथी का षरीर से भिन्न, इनका अलगश्अलग तरीके को संयोजन हैं जबकि मानव जाति का काला, गोरा, भूरा, नाक चपटा, नाक ऊंचा सभी के लिए एक ही तरीका है। षरीर में हड्ड़ी का टुकड़ा, सब के लिए एक समान, जितना प्रकार के ऑख है वह सबमें समान, जितने प्रकार के अंग अवयव है, वह सब में समान। षरीर के आधार पर मानव षरीर सबसे ज्यादा विकसित षरीर के रूप में पहचान सकते हैं और उसके साथ जागृति पूर्वक जीने वाला जीवन हो जाए, उसके लिए अपन प्रयत्न कर रहे हैं। उसका क्या प्रयोजन है? भ्रम और अपराध से मुक्ति।

प्रष्न– इस वाले बात को इस आषय से रखा था, जैसा मेरा अभी जो वजन है वह 85 किलोग्राम का है, मैं जब चलता हॅू वह 85 किलोग्राम का वजन का भार तो मुझे पता नहीं चलता। इतने बड़े षरीर को इतना समय तक सीधा करके बनाये रखता हॅू।

उत्तर– वह जीवन का महिमा है। जीवन षक्ति का, ये षरीर षक्ति का नहीं है।

प्रष्न– और उसमें संतुलन की जो बात है..........।

उत्तर– संतुलन व्यापक वस्तु से, व्यापक वस्तु में हम घिरे रहने से हम संतुलित रहते हैं, जीवन क्रिया के साथ, व्यापक वस्तु में तदाकार रूप में हम बना के रखते हैं। व्यापक वस्तु में संतुलन की व्यवस्था में उसको बनाए रखते है।

प्रष्न– इसका बुद्विं से कोई लेनश्देन नहीं है।

उत्तर– उसका पहचान बुद्वि में रहता है।

प्रष्न– सायकल चलाने में?

उत्तर– सायकल चलाने में होता है, थोड़ा सा बुद्वि का प्रयोग, गाड़ी चलाने में और थोड़ा सा ज्यादा होता है, ंमतवचसंदम में और ज्यादा होता है।

प्रष्न– तो वह केवल चित्रण तक सीमित नहीं है, उसमें बुद्वि है।

उत्तर– इसीलिए दूध पीने वाला, दारू पीने वाला, दोनों गाड़ी चला लिया, ंमतवचसंदम चला लिया।

प्रष्न– माने उसमें हमको बोध हो गया, ऐसा कुछ नहीं है, बुद्वि का उसमें पदअवसअउमदज है।

प्रष्न– ये जो बात हो रही थी कि अषरीर अवस्था में, जब मैं किसी चीज को देखुगॉ, जैसे आप को देखुगॉ तो आप ऐसे ही दिखेगें।

उत्तर– बिना षरीर का भी ऐसे ही दिखेगा, पर जीवन आपको दिखेगा नहीं, ऑखों के ताकत से मनुष्य का ऑख जैसा बना है, उसके अनुसार जीवन ऑखों में आता नहीं, जैसा परमाणु आता नहीं, परमाणु आता नहीं तो जीवन भी नहीं आएगा।

प्रष्न– मने जीवन ज्ञान बिना जीवन दिखेगा नही। मैं यह कहना चाह रहा हूॅ कि मैं अगर अषरीर अवस्था में हूॅ, आप बिल्कुल ऐसे ही दिखेगें, पर वह जो देखना है, वह मन से होगा।

उत्तर– बुद्दि से होता है उस समय, षरीर छोड़ने के बाद बुद्दि के अनुसार जीवन चलता है, षरीर के साथ चलते समय मन के अनुसार चलता है, बुद्दि के आधार पर तो समीक्षा होता हैं, अच्छा किया, बुरा किया, न्याय किया, अन्याय किया, दुःखी हुआ, सुखी हुआ, सुरूप चाहिए की कुरूप चाहिए, ये सब बुद्दि के आधार पर ही होता है।

प्रष्न– भ्रमित अवस्था में भी ऐसे ही ।

उत्तर– समीक्षा, समीक्षा हो जाता है। मानव भी समीक्षा करने में कम है क्या? किन्तु जीने में, समीक्षा करने में सच्चाई को स्वीकारता है की नहीं, जीने में कहॉ है।

प्रष्न– अच्छा तो बुद्दि से जीवन देखता है, जैसे ये पेड़ पौधे......।

उत्तर– सब बोध में चला पाता है।

प्रष्न– अच्छा चित्रण नहीं है ये।

उत्तर– चित्रण नहीं होता, चित्त् जो है ना बुद्दि के अनुरूप हो जाता हैं मन तक। मन, वृत्ति, चित्त् ये तीनों बुद्दि के अनुरूप में हो जाता है। षरीर के अनुरूप था पहले, उसके बाद बुद्दि के अनुरूप हो गया । षरीर छोड़ने के बाद।

प्रष्न– भ्रमित अवस्था में भी षरीर छोड़ने के बाद कोई विचार या कल्पना होता नहीं है।

उत्तर :कल्पना नया नहीं होता है, षरीर के साथ जो किए थे उतना ही स्मृति में रहता है, उतना बुद्दि में निहित हो जाता है।

प्रष्न– बुद्वि में निहित होने का तात्पर्य।

उत्तर– अच्छा , बुरा, सही, गलत।

प्रष्न– बुद्वि उसको स्वीकार या अस्वीकार करता है।

उत्तर– बुद्वि में तो समीक्षा होता है।

प्रष्न– बुद्वि चित्त् का द्रष्टा होने से, चित्त में जो स्मृति है बुद्वि के अनुरूप हो जाता है ।

उत्तर– अभी है ना मन का द्रष्टा वृत्ति, वृत्ति का द्रष्टा चित्त्, चित्त् का द्रष्टा बृद्वि, बुद्वि का द्रष्टा आत्मा।

प्रष्न– सषरीर अवस्था में जो मन, वृत्ति, चित्त् है, ये षरीर के साथ तदाकार रहने से बुद्वि का तवसस बहुत कम हो जाता है।

उत्तर– बुद्वि षरीर को स्वीकारता नहीं है, षरीर सत्य है इसको स्वीकारता नहीं है, इसीलिए षरीर को समझने की योग्यता बना रहता है। नहीं तो समझने की बात ही खत्म हो जाता । उसी आधार पर समझने की व्यवस्था है।

प्रष्न– अभी के अवस्था में ''मैं'' षब्द का जब प्रयोग करता हूॅ तो षरीर मान कर करता हूॅ।

उत्तर– जागृत अवस्था में जीवन मानकर करता हूॅ, दोनों में अंतर इतना ही है।

प्रष्नः क्या ऐसे भी है कि भ्रमित अवस्था में, हम जो भी चित्रण करते है। मेधस का पदअवसअमउमदज रहता है। इसको देखने में ।

उत्तर– षरीर को जीवन मानने के बाद हर बात में मेधस पदअवसअम रहता है। षरीर मूलक हो गया ना पूरा बात।

प्रष्न– आप जब अपने में चित्रण देखते हैं, सीधेश्सीधे जीवन में देखते है।

उत्तर– हॉ जीवन और वस्तु के बीच हम द्रष्टा बने रहते है। जीवन ज्ञान जीवन के साथ ही होता है। मन का द्रष्टा वृत्ति, वृत्ति का चित्त्, चित्त् का बुद्दि, बुद्दि का आत्मा और आत्मा सहअस्तित्व का द्रष्टा बना रहता है।

प्रष्न– तो पूरे जीवन के आप द्रष्टा बने रहते हैं बुद्दि का, चित्त का, वृत्ति का, मन का।

उत्तर– भ्रमित अवस्था में जीवन षरीर का द्रष्टा, षरीर जो है ना व्यवहार का द्रष्टा बनता है। षरीर का द्रष्टा मन, मन का वृत्ति, वृत्ति का चित्त्, बुद्दि उसको स्वीकारता नहीं।

प्रष्न– आपने कहा की अषरीर अवस्था में जीवन जो है आकृति को देख पाता है, उसमें रंग को भी देख पाता है, आपने कहा की वह बुद्दि से देखता है।

उत्तर– बोध विधि से देखता है। जो अनावष्यक है उसको चित्त के साथ `जवतंहम करता है। आवष्यक है, अपने में रखता है। षरीर के बाद उसको प्रयोग करने के लिए उपयोगी को अपने में रखता है। प्रमाणित करना मानव परंपरा में ही होगा। उसी विधि से कोईश्कोई जन्म के बाद पीछे के जन्म का बात बताते है। उसी आधार पर।

प्रष्न– अच्छा, वह सारा बुद्दि से बताते हैं उसको ।

उत्तर– बुद्दि जो है ना चित्त् को देता है ना। जो अनुभव के लिए योग्य नहीं हे वह सब चित्त् में चला जाता है।

प्रष्न– तो पूर्व षरीर यात्रा में अनुभव के योग्य जो है वह सारा बुद्दि में इकट्ठा होता है।

उत्तर– इसीलिए जल्दी समझता है, इस षरीर यात्रा में षरीर छोड़ते समय में बुद्दि में इकट्ठा रहता हैं आवष्यक, अनावष्यक, बुद्दि अनावष्यक को चित्त् में रख लेता है। जब तक षरीर यात्राा का षुरूआत ना हो। उसको भुल कर के षरीर यात्राा का षुरूआत होता है। अनावष्यक है, वह सब को भुल करके आता है। जीवन यहॉ पर उपार्जन करने के लिए।

प्रष्न– ये जो आपने कहा की षरीर छोड़ते समय वह बुद्दि में`जवतम कर लेता है। ये सारा गुणात्मक परिवर्तन के अर्थ में है। तो ये गुणात्मक परिवर्तन जब कहते हैं। तो जो निरंतर

रहने वाली चीज कहते है। वह सारा बुद्वि में आ जाता है, जो रूप,गुण संबधित है, वह सारा चित्त् में ।

उत्तर– रूप, गुण, षरीर यात्रा में आता है, वह सब को निरर्थक माना ही रहता है, जीवन परंपरा उसी को सार्थक बना देता है, कितना विड़म्बना है। जीवन की स्वीकृति को और व्यवहार की स्वीकृति को, कितना दूरी है, आप ही देख लो। इसको हमने परिष्कृत नाम दिया। जीव चेतना और मानव चेतना। मानव चेतना में जीवन का अपेक्षा को पूरा कर सकते हो। मानव अपेक्षा पूरा होता ही हैं जीवन अपेक्षा पूरा होने पर, मानव अपेक्षा पूरा होता ही है। जीवन अपेक्षा पूरा नहीं होता है, मानव अपेक्षा पूरा होता ही नहीं। जीवन अपेक्षा, जीवन लक्ष्य, उसके बिना जीवन का तृप्ति कैसे होगा। मानव समाधान, समृद्वि, अभय, सहअस्तित्व पूर्वक जीए बिना, जीवन तृप्ति कैसा होगा। ये होने का प्रमाण ही है, सुख, षांति, संतोष , आनंद ।

प्रष्न– तो यह जो बात कही की बुद्वि से आकृति दिखता है, षरीर छोड़ने के पष्चात।

उत्तर– अभी भी आकृतियॉ दिखती है, बुद्वि पूर्वक ही दिखता है,`जवतंहम  होता है। चित्त् में अभी भी अपने को जो दिखता है, बुद्वि ही ग्रहण करता हैं चित्रण में जा कर के`जवतंहम होता है। आप अभी जो मुझे देख रहे हो बुद्वि पूर्वक ही देखते हो। बुद्वि यदि पदअवसअम नहीं होगा तो देखना बनता ही नहीं, इसीलिए परंपरा में कहा गया बुद्वि भ्रष्ट, पागल हो गया। पागलपन को बुद्वि के साथ ही जोड़ते हैं। षरीर पागल हो गया कोई कहता हैं?

प्रष्न– इसमें आप जब कहा की बुद्वि पदअवसअम होता हैं?

उत्तर– किन्तु स्वीकारता नहीं है ना, स्वीकारता नहीं। सहअस्तित्व को ही स्वीकारता है। स्वीकारता नहीं, इसीलिए अहंकार कहा, अहंकार भाषा उसी विधि से आया है। इसीलिए इसको ऐसा बताया। जीवन समझता है, तदाकार होता है, अध्ययन से। उसके बाद अनुभव से प्रमाणित हो जाता है। जीवन में जो चतवबमे होता है। उसको देखने जाओगें तो यह सब आता है।

प्रष्न– अभी षरीर के साथ, मैं जब आप को देखता हूँ तो बिना ऑखों के सहारे ये कोई आकृति तो आता नहीं।

उत्तर– वह होने की विधि से ही आता है, कोई हो तब आकृति आती है। होने के अनुसार पर आकृतियॉ आती है। आप को जो पदवितउंजपवद आता है। होने के आधार पर ही पदवितउंजपवदण

प्रष्न– नहीं समझा?

उत्तर– चाहे सही हो चाहे गलती हो, दोनों पदवितउंजपवद होने के आधार पर ही आता है।

प्रष्न– माने आप है तभी मुझे आपकी आकृति दिखेगी, नहीं है तो नहीं होगा, पर षरीर छोड़ने के पष्चात मैं आपको बिना ऑखों से भी देख सकता हूँ और ये जो है बुद्वि पूर्वक ही होता हैं

उत्तर– सुन भी सकते हैं, देख भी सकते है, किन्तु स्वीकारने का अधिकार नहीं होता। स्वीकार जो होता है, प्रमाण विधि से ही होता है।

प्रष्न– तो यह जो सुन पाते हैं, जैसे अभी भी कभीश्कभी ऐसा होता है, जैसे आप कुछ कहने जाते है, उससे पहले मुझे पता चल जाता है, क्य कहने जा रहे हैं।

उत्तर– स्वाभाविक है, जीवन का ताकत उतना ही है, हमारे पास भी, आपके पास भी। जीवन सबमें समान है। समान षक्ति, समान बल, दोनों के साथ जीवन है। उसका प्रयोग किस में करना है कर लो। अभी जीवन को न्याय पूर्वक उपयोग किया जाए सब सहमत होते है। नियम पूर्वक उपयोग किया जाए, संतुलन पूर्वक उपयोग किया जाए सब सहमत होते हैं, ये सहमति के आधार पर अपन प्रस्ताव को रखा।

प्रष्न– ये जो कहा की हम सुन भी सकते है, षरीर छोड़ने के पष्चात भी जीवन सुन भी पाता है, तो जैसे भाषा का जो प्रयोग है, केवल भाषा, वृत्ति और मन में बनने से ही दूसरा जीवन उसको ग्रहण कर लेता है।

उत्तर– अर्थ ग्रहण करता है, षब्द को ग्रहण नहीं करता। प्रमाण के बिना अर्थ स्वीकार होता नहीं, बुद्धि पूर्वक जो स्वीकार होता है, वह अर्थ ही होता है।

प्रष्न :अभी आपने यह भी कहा है की भाषा जो है स्मृति में रहता है, चित्रण में।

उत्तर– चित्रण में ही रह जाता है, इसीलिए बुद्धि के लिए भाषा का अर्थ चाहिए। उस सिद्धान्त से करता है। वह अपने कल्पना से लेता है, हर भाषा का अर्थ कर लेता है। उसका प्रमाण होता नहीं, इसीलिए वह स्वीकार नहीं होता । ये चतवबमे है उसका।

प्रष्न– अभी भी जैसे मैं कुछ सुनता हूॅ, वह जो ध्वनि है ये मन, वृत्ति से होते हुए चित्रण तक पहुॅचता है, या यह जो ध्वनि है वह मेधस में ंततमेज हो जाता है।

उत्तर– यदि अर्थ नहीं है तो चित्रण में ंततमेज होता है, अर्थ यदि अपने को कल्पना में आता है वह बुद्धि में जाता है।

प्रष्न– माने तदाकार होते हैं तो बुद्धि में जाता है, ये दोनों में अंतर है? अर्थ कल्पना में आना और तदाकर होना।

उत्तर– वह तो अध्ययन विधि से, सुनने की विधि से अर्थ कल्पना आती है, अभी जैसा अपन सुनते है, बहुत सारा चीज आता है, उसके बाद बुझ जाता है, बुझ जाने वाला अपना स्वत्व नहीं हुआ। ऐसे ही है, मरने के बाद भी ऐसे ही है। भ्रमित स्थिति में मरने से जीवन मरा हुआ नहीं मानता अपने को।

प्रष्न– मैं हूॅ इसको भी स्वीकारता नहीं।

उत्तर– वहीं से बिन पेन्दी का लोटा।

प्रष्न– ये जो मरणोत्तर कर्म करते हैं, उसी के लिए .....।

उत्तर– पुनः षरीर ग्रहण करने के अर्थ में पितृ पूर में आने से पुनः षरीर ग्रहण करने योग्य होते हैं, कल्पना ऐसा है। देवता और मनुष्य के बीच में एक परिकल्पना पितृपद का परिकल्पना दिया, उसकी कल्पना से सारा मरणोत्तर कर्म होता है।

प्रष्न– आप अमरकंटक में आने से पहले, सुषुप्त अवस्था में, आप है, ये कभी बना था आप में?

उत्तर– नहीं।

प्रष्न– साधना काल में बना था।

उत्तर– साधना काल में भी नहीं बना, समाधी तक नहीं बना, संयम के बाद बना, मेरा होना।

प्रष्न– सुषुप्त अवस्था में भी निद्रा में भी।

उत्तर– निंद्रा में भी नहीं हुआ। निद्रा में मैं हूॅ इस बात का याद था, आत्मा जो है मरता नहीं, ये बात की थी।

प्रष्न– ये कब था साधना काल में .....।

उत्तर– साधना काल में पूरा हो गया, पहले का सूचना मदद किया होगा पहले का सूचना मदद किया ही है, उसी के आधार पर तो साधना किया है, सूचना के आधार पर साधना किया, साधना से जो प्राप्ति हुआ वह मानव को देने योग्य हुए । इसको अनुभव किया, समाधी में कोई बताने योग्य वस्तु ही नहीं हैं । हमारा आषा, विचार, इच्छा चुप होने के बाद बताने की बात कहॉ से आएगा। काम करना ही बंद कर दिया, पत्थर जैसा पड़ा रहा, उसके बाद क्या कहा जाए?

प्रष्न– इसी को आप कहते हैं, स्वान्त सुख में चला गया वह।

उत्तर– वही है, स्वान्त सुख अन्ततः भीखमगों के पास चला गया, भाषा के रूप में, फलित रूप में स्वान्त सुख कुछ होता नहीं।

प्रष्न– आपने यह कहा कि अभी भी हम जो देखते हैं, उसमें बुद्वि का पदअवसअमउमदज रहता है।

उत्तर– षरीर संबंधित बातों में, ज्ञान गोचर विधि से इतंपद का कोई काम नहीं है, जैसा भार को समझना, इसमें इतंपद काम नहीं है, अभी जैसा आकार आयतन उसमें से आंषिक भाग ऑखों में आता है, 180^0 । बाकी 180^0 ओझल होता है। और भार तो ऑखों में आता ही नहीं । जो ऑखों में आता नहीं उसके साथ इतंपद का कोई काम नहीं। इतंपद का काम वही है, ऑखों से जो बाकी रहता है उसको समझने की इच्छा होता है।

प्रष्न– इसमें इतंपद का काम है, माने? समझा नहीं?

उत्तर– ये जो ऑखों में आता है, वह इतंपद का काम है, जो बचा रहता है, उसको समझने की इच्छा होती है, वह जीवन का काम है इतंपद में कहीं भी इच्छा छूपा नहीं है।

प्रष्न– इससे पहले आप कहे थे जैसा मैं अभी आप को देख रहा हूॅ ये सीधेश्सीधे चित्रण तक पहुॅचता है। फिर कहा की बुद्विं सहित रहता है वह?

उत्तरः वह तो मरने के बाद।

प्रष्न– आप ने कहा था की अभी भी मैं जब आपको देख रहा हूॅ ......।

उत्तर– ठीक है ना, बुद्विं रहता है, 4 ल क्रिया में ही सीमित रह जाते है, इसीलिए बुद्विं भ्रमित रहता है, ये माना जाता है मरने के बाद, बुद्विं में सारे चित्रण समा जाते हैं। बुद्विं उसको पुनः षरीर यात्रा के बाद, चित्त् में स्थापित कर देता है, बुद्विं स्वीकार करता है, वह सब चित्त् में। चित्त् में अनावष्यक बातों को भूल करके आता है। भूल करके आने से यहॉ पुनः भर जाता है।

प्रष्न– बचपन से जो प्रवृत्ति दिखती है, वह इसी अर्थ में।

उत्तर– बचपन में जो प्रवृत्ति दिखती है, सारे अपराध को भुलकर आता है, उस समय `मतअम करने पर यही है, हर बच्चा न्याय का याचक, सही कार्य व्यवहार करने को इच्छुक और सत्य वक्ता होता है। इसीलिए सत्यबोध कराना आवष्यक हो गया, सही कार्य व्यवहार को बोध कराना आवष्यक हो गया और न्याय प्रिय योग्यता को स्थापित करने की आवष्यकता

हो गई, इसी के आधार पर पूरा षिक्षा है। नहीं तो षिक्षा को षुरू करने की जगह ही नहीं था।

प्रष्न– ये वाली बात बिल्कुल ठीक है, बहुत सुन्दर अभी देखने के लिए मुझे ऑखों का सहारा लेना पड़ता है, अगर ऑख बंद कर दिया, नहीं दिखता हैं।

उत्तर– ठीक है ना, बंद कर दिया तो भी ऑखों का जो किया हुआ रहता है, स्मृति रहता है।

प्रष्न– तो षरीर छोड़ने के बाद ऑख न होते हुए मैं ....।

उत्तर– ऑख से भी जीवन ही देखता है, इसको आप भूल जाते हो।

प्रष्न– पर सूचना अंदर आने के लिए ऑखों का आवष्यकता पड़ता है ना मुझे।

उत्तर– जीवन देखने के लिए ऑख का आवष्यकता है।

प्रष्न– अभी और षरीर छोड़ने के बाद।

उत्तर– वह देखने की बंचंबपजल रहता ही है, जीवन में देखने वाला जीवन ही है, ऑख का झंझट क्यों बनाते हो। संवेदनाओं से देखने वाला जीवन है।

प्रष्न– पर पॉच संवेदनाओं से ही पदचनज आता है ना मुझे। आपका चेहरे का जो आकार है।

उत्तर– ठीक है ना, हाथ से भी पता लगता है कुछ पैर से भी कुछ पता लगता है, गंध से भी लगता है सभी से लगता है।

प्रष्न– आप ये कह रहे हैं कि षरीर छोड़ने के बाद भी ऑख ना होते हुए जीवन में आकार को देखने की क्षमता रहती है।

उत्तर– आकर को देखने की क्षमता जीवन में ही है, ऑख रहे, चाहे ना रहे। पुनः वही बात, षरीर के साथ ऑख है ऑख के द्वारा देखने वाल जीवन है, इतने को स्वीकारने में किचीरशकिचीर हो रहा है।

प्रष्न– मैं अभी अंधा हो गया तो मुझे आकार नहीं दिखेगा।

उत्तर– जीवन को दिखता ही है, केवल ऑखों से देखते नहीं है जीवन से देखते ही रहते हैं।

प्रष्न– मैं अभी षरीर के साथ तदाकार हूँ, इसीलिए ऑखों से भिन्न देखना, मैं इसको स्वीकार नहीं कर पा रहा हूँ।

उत्तर– वही है इसीलिए ज्ञान गोचर, दृष्टि गोचर नाम दिया। ज्ञान गोचर विधि से जीवन देखता है, दृष्टि गोचर विधि से षरीर से देखा जाता है, कौन देखता है, जीवन देखने वाला जीवन है जीवन नहीं तो कोई देखने वाला नहीं।

प्रष्न– षरीर छोड़ने के बाद गंध का तो कुछ पता नहीं चलता है, जीवन को।

उत्तर– नहीं पता लगता है।

उत्तर– रसेन्द्रिया, गन्धेन्द्रिया का कुछ पता नहीं लगता है।

उत्तर– देखने, सुनने का काम होता है, सुनने का काम गर्भावस्था से ही षुरू होता है, देखने का काम षरीर के साथ षुरू होता है। षरीर के साथ जीवन का कार्यक्रम ऐसे, ऐसा ही करके पॉचों संवेदना से देख लेता है, संवेदनाऍ षरीर को जीवन्त बनाने की अर्थ में है, वह भी जीवन ही प्रदान करता है, संवेदनाओं को प्रगट करता है, जीवन ही षब्द, स्पर्ष, रूप, रस, गंध का जो काम है, जीवन ही तो करता है। मरने के बाद कहॉ रहता है, षरीर तो यहीं रहता है, तो फिर कहॉ चला जाता है, सारा इतंपद वहीं का वहीं रहता है ना, आखिर में मिट्टी में मिल जाता है ना।

षरीर के बिना भी काम कहीं रूकता नहीं इसीलिए धरती यदि बीमार हो गया यदि नहीं रह पाता है आदमी कोई दूसरा धरती की खोज लेगा, क्या तकलीफ है, इसीलिए प्रस्तुत

किया, इसको यदि मानव अपराध मुक्त होता है, भ्रम मुक्त होता है, इस धरती के साथ अपराध मुक्ति बनता है तब धरती अपने में कितना सुधार करता है, देखा जा सकता है, एक प्रयोग है ये, क्या तकलीफ है इसमें? सभी प्रकार के प्रयोग कर रहे है बिना खर्च के प्रयोग करने में क्या तकलीफ है। इसमें कोई पैसा देना नहीं है, ना पैसा लेना है। पैसे से ये बनता भी नहीं, बिना पैसे के ही बनना। इसको क्या किया जाए?

प्रष्न– ये जो आपने और एक बात कही थी कि जैसे सायकल चलाने में और ंमतवचसंदम चलाने में बुद्बि का पदअवसअउमदज रहता है, तो ये संतुलन से संबंधित है।

उत्तर– वही है।

प्रष्न– इसीलिए एक आदमी एक छोटे से जगह में बैठकर पूरा हवाई जहाज के संतुलन को समझ सकता है।

उत्तर– तदाकार रहता है, उसके साथ, तभी तो चल पाता है।

प्रष्न– पर इसमें उसमें कुछ सद्‌गुण हो गया ये होता नहीं, वह 4 ल क्रिया में ही जीता है। आप जब कहते हैं कि 4 ल क्रिया ही व्यक्त है, इसका मतलब है की पूर्णतया 4 ल ही व्यक्त है। मतलब भ्रमित होते हुए मैं चसंदम चलाना सीख गया इसीलिए मुझ में पॉच क्रिया हो गई ऐसा नहीं है।

उत्तर– उसके चित्रण से ंमतवचसंदम के कार्य, गति के प्रति चित्रण उनके पास आ गया, इसीलिए करता है। गाड़ी का गति का चित्रण आ गया, कतपअमत बनता है, गीयर लगाने से क्या होगा, वह चित्रण आ गया ना भाई, एक्सीलेटर, क्लच और गीयर के प्रति आदमी के मन में चित्रण आ जाता है। यही कतपअपदह सीखने का मतलब । इससे अधिक और कुछ होता है क्या देखो। गाड़ी सीखने का मतलब यही है।

प्रष्न– और जो तैरना सिखते है।

उत्तर– वह भी वैसे ही है।

प्रष्न– इसीलिए उसको कभी भुलते नहीं।

उत्तर– जैसे सायकल चलाना सीख लिए उसके बाद कहाॅ भूलते है। तैरना एक बार आ गया कहाॅ भूलते हैं। करे चाहे ना करें एक बार कृषि करना सीख लिया, कहाॅ भूलाता है, इसका नाम है कला, जीने की कला। उत्पादन कला पूरा का पूरा समृद्धि की बात है, समृद्धि को प्रगट करने की बात है और जीने की कला में न्याय प्रगट करने की बात है।

प्रष्न– बहुत सुंदर, बहुत ही इच्छा।

उत्तर– इसके अलावा, क्या कहा जाए, भाषा के रूप में, जीने के रूप में न्याय, समृद्धि के बारे में समृद्धि का कला, आजीविका के लिए और जीने के लिए न्याय। अभी ड्रम बजाने को, नाचने, गाने को कला, अपन कहते हैं समृद्धि को कला, नाच, गाना, उत्सव का अंगभूत है, ऐसा संविधान में लिखा है।

प्रष्न– बाबा षरीर में ज्ञानवाही तंत्र और क्रियावाही तंत्र ये दोनों को थोड़ा बता दीजिए।

उत्तर– ज्ञानवाही तंत्र संवेदनाओं को पहचानना।

प्रष्न– ये मेधस से लेकर पूरे षरीर में है।

उत्तर– पूर षरीर में स्पर्ष रखा ही है, ऑख, नाक, कान, जीभ, गले के ऊपर रखा ही है। नहीं तो पैर में चींटी काटता है, अपने को कैसे पता लगता, पूरा षरीर में स्पर्षेन्द्रिया का कार्य रखा है। जीवन जीवन्त बनाए रखने से ये होता है। जीवन्त षरीर में ही संवेदनाएॅ व्यक्त होते है, जीवन षरीर को कैसे जीवन्त बनाता है? षरीर में चमड़ा बना हुआ है, कोषा, कोषा तानाश्बाना के रूप में है, हर जगह में उसके बीच में से जीवन घूम जाता है। उसके प्रवाह से हर कोषा जीवन्त रहता है। पूराश्पूरा प्राणकोषिका, फलस्वरूप दर्द होता है, सुख होता है।

प्रष्न– जैसे मुझे चींटी काटने का दर्द हुआ ये दर्द मेधस से यहाॅ तक पहुॅचता है।

उत्तर– वही ज्ञानवाही तंत्र है, नहीं तो चींटी काटने वाला हम को कहाॅ पता लगता, यदि पता नहीं लगता तो रोग कहते हैं, या नहीं।

प्रष्न– ये जो कहा की भ्रमित अवस्था में इच्छा, विचार, आषा, चित्रण में मेधस का पदअवसअमउमदज रहता है।

उत्तर– मेधस का पदअवसअमउमदज जागृति के बाद भी रहता है।

प्रष्न– अभी मैं जब चित्रण को देखता हूॅ, मेधस के साथ ही देखता हूॅ।

उत्तरः सभी बात, चित्रण भी विष्लेषण भी, चयन भी, आस्वादन भी, सभी बात को मेधस तंत्र द्वारा ही देखते हैं।

प्रष्न– द्वारा मतलब?

उत्तर– मेधस तंत्र द्वारा जीवन देखता हैं।

प्रष्न– जैसे मैं आपको देख रहा हूॅ, ये जो चित्रण है ये मेरे मेधस पर है।

उत्तर– मेधस पर नहीं है, मेधस के द्वारा ज्ञानवाही तंत्र है। ऑखों के द्वारा रूप को देखते हैं, नाक के द्वारा गंध को देखते है, जीभ के द्वारा रूचि को देखते हैं, कान के द्वारा षब्दों को देखते हैं, स्पर्ष के द्वारा अनुकूलता, प्रतिकूलता को देखते है।

प्रष्न– जैसे आपका चेहरा मेरे ऑखों पर प्रतिबिम्बित है अभी यहॉ से इसका जो आकार है, ये मेधस तंत्र तक पहॅुचा।

उत्तर– नहीं, ज्ञानवाही तंत्र में पहॅुचा, ज्ञानवाही तंत्र का केन्द्र है मेधस तंत्र। प्रतिबिम्बिन जीवन में ही होता है। ऑखों में प्रतिबिम्बन नहीं, वह जीवन को देखने का हसें है। प्रतिबिम्ब सभी ओर पड़ता है, वैसे ही इसके ऊपर भी पड़ा है। उसको देखने वाला जीवन है। ज्ञानवाही तंत्र विधि से देखना बनता है। ज्ञानवाही तंत्र विधि से जीवन को देखना बन जाता है। वही षरीर और जीवन का योग, इतना ही है। नहीं तो षरीर का क्या जरूरत। देखना, सुनना, गंध को पहचानना,, स्पर्षेन्द्रिय से ज्ञान ग्रहण करना। सभी चीज ज्ञानवाही तंत्र द्वारा जीवन करता है।

प्रष्न– इस क्षण मैंने एक परमाणु का अगर चित्रण किया और आपने परमाणु का चित्रण किया तो.....।

उत्तर– परमाणु जैसा है, वैसा चित्रण करना है कि नहीं है, पहले उसको तय करो।

प्रष्न– करना है।,

उत्तर– तो बात खत्म, आप करो, मैं करूं और कोई करे, परमाणु जैसा है, वैसा ही चित्रण।

प्रष्न– आप जब उस परमाणु को चित्रण को देखते हो, उसमें मेधस के साथ देखते है।

उत्तर– वह सब मेधस के साथ ही है। मेधस के द्वारा ज्ञानवाह उसको विधि से जीवन देखता है।

प्रष्न– इसमें मेधस का तवसस इतना ही है कि जो भी सूचना है उसको जीवन तक यथावत पहुॅचाने का काम।

उत्तर– स्वस्थ हो, ज्ञानवाही तंत्र ठीक काम करता हो, इसमें अधिक मेधस का कोई तवसस नहीं। चवूमतनिसस हसें में जैसा देखते हैं वैसे ऑख भी एक चवूमतनिसस हसें हैं, जीवन के लिए।

प्रष्न– ऑखों के परदे पर जो प्रतिबिम्ब पड़ता है, उससे ऑखों में कोई रासायनिक क्रिया होती है क्या?

उत्तर– उसमें कुछ नहीं होता है, रासायनिक वस्तु से बना है षरीर तंत्र, प्राणकोषाओं से, जीवन्त बनाए रखने का काम जीवन करता है। जीवन जीवन्त बनाना छोड़ देता है, देखने वाला रहता नहीं है।

प्रष्न– मैं जो पूछ रहा हूॅ ये प्रयोजन है या गट्र में जाने वाली बात।

उत्तर– प्रयोजन विधि नहीं है, इसको स्पष्टता आप चाहते हैं ये सज्जनता की बात। इसीलिए उससे विपरीत जा रहा हूॅ उत्तर, उत्तर उसका समर्थन में कहॉ जा रहा है।

प्रष्न– प्रतिबिम्ब ऑखों से जीवन तक पहुॅचने में, ऑखों में वचजपबंस दंतअम बवददमबजमक है,

उत्तर– ज्ञानवाही तंत्र बवददमबजमक है ऐसा अपन कहते है। जीवन ही ज्ञानवाही तंत्र से देखता है, पॉचों संवदेनाओं को देख पाता है, जीवन्त बनाने का प्रमाण वह मिलता है अभी षरीर को जीवन मान लिया, स्वयं के साथ धोखा हुआ कि नहीं हर व्यक्ति आत्मघात कर चुका है।

प्रष्न– आप ने एक बार कहा था कि आदमी, आपको षव जैसा दिखता है।

उत्तर– चलता हुआ मुर्दा नाम दिया था, क्या किया जाए? अभी अपन जब तक सांस चलता है मेधस तंत्र काम करता है तब तक ये काम करेगें, समझाने का काम, जब मेधस तंत्र काम नहीं करेगा। इसका तो आयु होता है। आयु के बाद यह काम नहीं कर पाएगा। जब नहीं काम कर पाएगा, वहॉ से रोक देगें, उसके बाद आप सबको बताएगें, उसी का तो इंतजार कर रहे हैं कि, हम समझाने योग्य हो गये हैं, ये आप कपबसंपतम करें, सत्यापित करें।

प्रष्न– ठीक है बाबा।

प्रष्न– स्वप्न के अवस्था में क्या जीवन ज्ञानवाही तंत्र को संचालित करता है।

उत्तर– नहीं करता है, संचालित नहीं करता है, जीवन्त बनाए रखता है उतने में स्वप्न होता है, जबकी निद्रा होना चाहिए, उसके बीच में स्वप्न आ जाता है।

प्रष्न– इसीलिए लगता है की नींद पूरी नहीं हुई ।

प्रष्न– गर्भ में जीवन जब षरीर को लेता है, वह कौन से आधार पर निर्णय करता है कि इस षरीर को चलाना है, या इस परिवार में चलाना है, इस जगह चलाना है।

उत्तर– अनुकूलता के आधार पर मरते समय जैसा उद्‌देष्य बना रहता है उसके अनुकूलता को सोचता है, `मसमबज करने की विधि वही।

प्रष्न– इसमें क्या कोई आदेष है, जैसे अनुकूलता एक बात हो गई, दूसरी बात उन्हीं के परिवार जनों में, उसी परिवार में ही।

उत्तर– दस, बीस जीवन सपदम में है समझ लो, तो जो जयादा उपकारी है, पहले तुम जाओं, उपकारी जीवन को पहचानने की विधि जीवन में रखा है, षरीर के साथ द्वेष, इर्ष्या है, षरीर को जीवन मानने के बाद ही द्वेष, इर्ष्या है। द्वेष जीवन में होता नहीं, मरने के बाद। जो भूत प्रेत के अवस्था में रहते हैं, उनमें द्वेष होता है।

प्रष्न– भूतश्प्रेत की अवस्था किस को कह रहे हैं?

उत्तर– जो भुख के पीड़ा से मरते हैं, हिंसा के इच्छा से जो मरते हैं, भूतश्प्रेत होते हैं।

प्रष्न– या जीन के ऊपर हिंसा हो गया हो उनके साथ भी हो सकता है।

उत्तर– प्रतिक्रांति के लिए जो पीड़ित हो कर मरते हैं, वही जीवन भूतश्प्रेत होते हैं। इष्या, द्वेष यह सब उनमें भरा रहता है।

प्रष्न– तो उसी प्रकार के काम में वह लगे रहते हैं।

प्रष्न– बाबा जी पदजमतदमज में पढ़ा था, कि ।उमतपबं में एक इतंपद `बपमदजपेज है, उनके समजि इतंपद में जनउवनत हो गया, एक दिन वह सुबह उठी उनको ब्रेन हेमरेज जैसा हो गया, उनको ऐसा महसुस हुआ कि वह षरीर से बहुत बड़ी हैं, और मैं इतने छोटे षरीर में कैसे चली गई, दूसरा उनको ऐसा लगा कि आसश्पास सारा जगह भराश्भरा सा लग रहा है। तीसरा ये लगा की षरीर के जो उवसमबनसमे है जो अणु है वह दीवार के अणुओं के साथ मिल जा रहे हैं, चौथा जब अक्षर को देखा उन्होंने, अक्षर तो दिख रहा है, पर ये क्या अक्षर है ये बोल नहीं पा रहे हैं, ये समझ में नहीं आ रहा है कि । है या ठ है, केवल आकृति दिख रही है जैसे उनको लगा कि मैं अपने दोस्त को फोन करती हूँ मदद करने के लिए आवाज तो निकल रही है, उनमें तो आवाज है, पर कान में अस्पष्ट सुनाई देता है।

उत्तर– जो जैसा कहना चाहते है, वह उच्चारण नहीं होता।

प्रष्न– अच्छा, मेधस में व्यतिरेक के वजह से ये आवाज वाला हो गया, जो षब्द को व पहचान नहीं पर रहे थे, इसके पीछे कारण क्या हैं?

उत्तर– कारण वही ऑखों से जो पहचानने की विधि है वह कपेबवददमबज हो गया, अक्षर दिखता है, पढ़ नहीं पाते हैं, ये पढ़ नहीं पाता ज्ञानवाही तंत्र का षिथिल हो जाने के वजह से हुआ।

प्रष्न– माने जितना सूचना जीवन तक पहुॅचना है वह नहीं पहुॅचा।

उत्तर– बीच में अड़चन आ गया, किसमें? ज्ञानवाही तंत्र में।

प्रष्न– वह जो भराश्भरा सा लगा उनको ?

उत्तर– ज्ञानवाही तंत्र का ही मगचतमेपवद हैं।

प्रष्न– ये जो उनको लगा की मैं षरीर से बहुत बड़ी हूॅ, इस छोटे से षरीर में कैसे आ गई।

उत्तर– कल्पना में है, हो गया होगा, कल्पना ही है।

प्रष्न– आपने एक बार ये कहा की भोजन से जितना ऊर्जा हम लेते है उससे लगभग 10श्20 गुणा अधिक हम काम करे हैं, ये अधिक ऊर्जा जो षरीर से बर्हीगमित हो रहा है वह जीवन से है, उसके साथ यह भी है की षरीर में जो प्राणकोषिका है, व्यापक वस्तु में सम्पृक्त रहने से कियाषील तो हैं, ही इसमें भोजन की आवष्यकता इसीलिए पड़ रही है, क्योंकि वह प्राणकोषिका को भोजन की आवष्यकता है।

उत्तर– जड़ प्रकृति है, इसीलिए?

प्रष्न– एक कौतुहल या कल्पना ऐसे दौड़ती है, अगर वह पहले से ऊर्जित है, तो अलग से उसको भोजन की आवष्यकता क्यों पड़ती है?

उत्तर– किया करने के लिए ऊर्जा, कार्य ऊर्जा के लिए भोजन अगर प्राणकोषिका के रूप काम नहीं करते हैं, परमाणु के रूप में काम करते ही रहेगें।